सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 321, नई दिल्ली । मंगलवार, 28 जनवरी 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 मुझे पूरा भरोसा, दिल्ली एक बार फिर झाड़ू को ही चुनेगी- केजरीवाल

06 कुंभ देखो और कुंभ के अजूबे भी देखो

08 उत्कृष ओडिशा कार्यक्रम कल से शुरू होगा ,मोदी भी भाग लेंगे

दिल्ली परिवहन आयुक्त जनता की सुरक्षा से ज्यादा वाहन निर्माताओं और डीलरों के हितैषी

संजय बाटला

नई दिल्ली। जी हां यह आक्षेप हम बिना वजह नहीं लगा रहे है इसके पीछे कई तथ्य उपलब्ध हैं। मोटर वाहन नियम के बाहर जाकर

1. तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों की नियुक्ति

2. ई रिक्शा चालकों के लिए नए लाइसेंस बनवाने के लिए अनिवार्य 10 दिन की ट्रेनिंग सर्टिफिकेट के लिए उपलब्ध आनलाइन प्रक्रिया को बंद करवा कर हस्तचालित प्रक्रिया का प्रयोग करवा कर लाइसेंस बनवाने

3. वाहन डीलरो द्वारा एग्रीमेंट की शर्तों की अवहेलना के बावजूद वाहनों के पंजीकरण और आर.सी. प्रिंट की इजाजत देना

4. वाहनों के लिए जांच की क्षमता ना होने के बावजूद निजी कम्पनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से क्षमता से कई गुणा वाहनों की जांच के आदेश देकर वाहन मालिकों को परेशानी में डालना इत्यादि अनेक आदेश उपलब्ध हैं **जो यह सिद्ध करते हैं की परिवहन आयुक्त के लिए दिल्ली की जनता की सुरक्षा से अधिक दिल्ली परिवहन विभाग से स्टेट अप्रूवल के साथ ट्रेड सर्टिफिकेट प्राप्त पंजीकृत वाहन निर्माताओं और डीलरो के हितैषी हैं।**

1. दिल्ली में जनता की जगह निर्माताओं और डीलरो के काम बिना रुकावट होते रहे के उद्देश्य से तकनीकी अधिकारियों जिन्हें तकनीकी जानकारी है के स्थान पर गैर तकनीकी अधिकारियों जिन्हें वाहन के प्रति जरा सी भी जानकारी नहीं है और राजस्व में इजाफा की पूर्ण तकनीक रखते हैं को जानबूझ कर नियमों और उच्चतम न्यायालय के दिशा निर्देश की अवहेलना कर के नियुक्त कर दिया।

2. दिल्ली की सड़को पर ई रिक्शा चलाने के लिए अनिवार्य ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने के लिए अनिवार्य 10 दिन की ट्रेनिंग के सर्टिफिकेट जो ई रिक्शा चालक को ट्रेनिंग देने वालो द्वारा आनलाइन अपलोड करना अनिवार्य किया हुआ था को ई रिक्शा निर्माताओं और डीलरो के हितेश में हस्तचालित जिसकी जांच संभव नहीं को इजाजत दे दी। ई रिक्शा चालक रिक्शा चलाने के लिए अगर शिक्षित नहीं है और ड्राइविंग लाइसेंस बनवाकर ई रिक्शा चला रहा है तो उसका हर्जाना चुकाएगी दिल्ली की जनता।

3. दिल्ली में वाहन बेचने वाले डीलरो को वाहन पंजीकरण कर वाहन की आर.सी. प्रदान करने के लिए एग्रीमेंट के अनुसार दी गई इजाजत में वाहन डीलर को परिवहन विभाग में बैंक गारंटी जमा करवानी अनिवार्य है और बैंक गारंटी समाप्त होने के साथ ही एग्रीमेंट के अनुसार डीलर को दी गई इजाजत समाप्त हो जाती हैं पर परिवहन आयुक्त की वाहन डीलरो के हितैषी होने के कारण वाहन डीलर की बैंक गारंटी जमा नहीं होने पर भी वाहन पंजीकरण और आर.सी. प्रिंट करने की अनुमति दी जा रही हैं जो जनता के साथ कभी भी धोखाधड़ी का कारण बन सकता है।

4. दिल्ली में पंजीकृत व्यवसायिक वाहनो के जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए एक निजी कंपनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से उसके द्वारा लगाई गई मशीनों की क्षमता ना होने के बावजूद वाहनों को उसी से जांच करवाकर जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के आदेश जारी कर दिए। जिससे वाहन मालिकों को जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए अपॉइंटमेंट ही उपलब्ध नहीं हो पा रही और उसका फायदा उठा रहे है वाहन जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए अपॉइंटमेंट दिलवाने वाले और निजी कंपनी।

अब आप ही बताए की जनता की सुरक्षा के लिए उपलब्ध आईएएस अधिकारी ही अगर जनता की सुरक्षा की जगह निजी कंपनी, वाहन निर्माताओं, वाहन डीलरो और राजस्व इजाफा में लिप्त होगा तो जनता को सुरक्षा मुहैया कौन करवाएगा ?

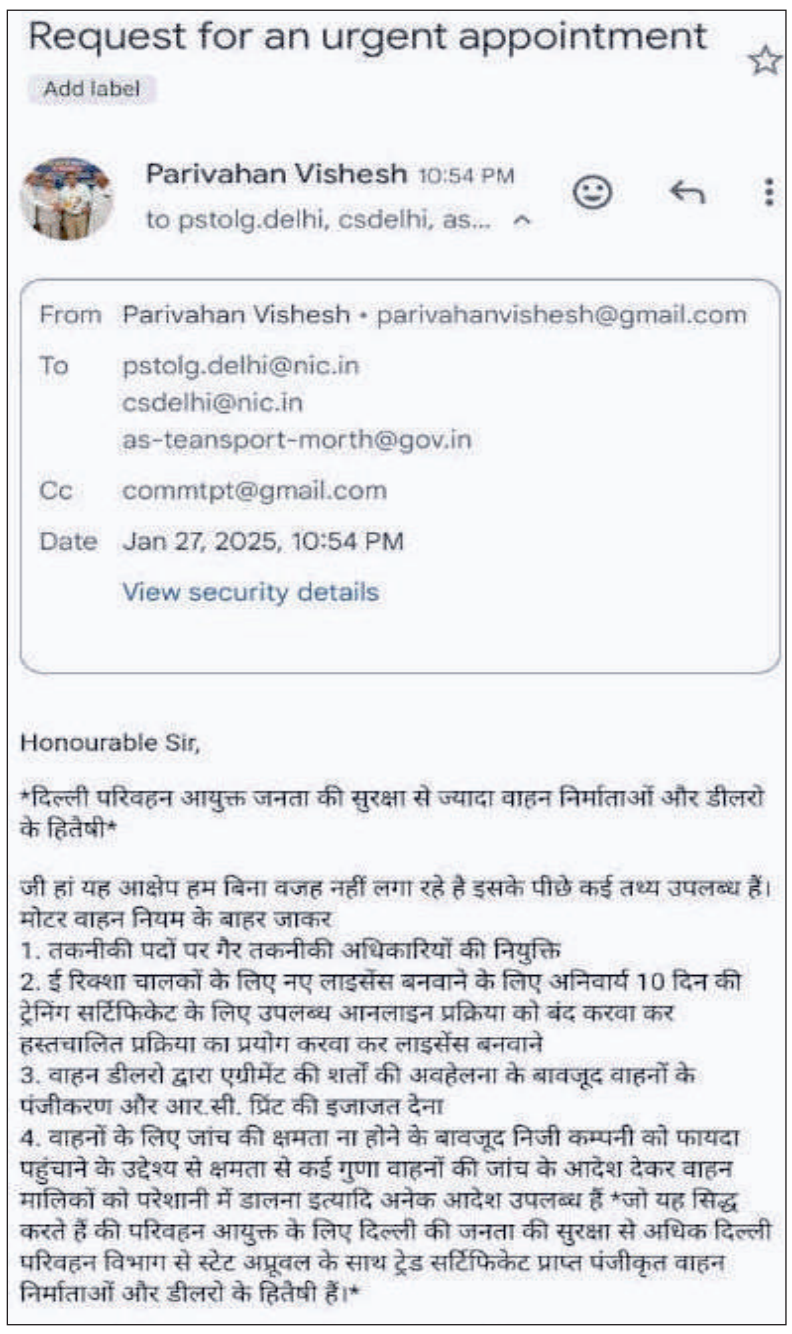

Request for an urgent appointment

Add label

Parivahan Vishesh 10:54 PM
to pstolg.delhi, csdelhi, as...

From Parivahan Vishesh • parivahanvishesh@gmail.com
To pstolg.delhi@nic.in
csdelhi@nic.in
as-teansport-morth@gov.in
Cc commtpt@gmail.com
Date Jan 27, 2025, 10:54 PM
View security details

Honourable Sir,

दिल्ली परिवहन आयुक्त जनता की सुरक्षा से ज्यादा वाहन निर्माताओं और डीलरो के हितैषी

जी हां यह आक्षेप हम बिना वजह नहीं लगा रहे है इसके पीछे कई तथ्य उपलब्ध हैं। मोटर वाहन नियम के बाहर जाकर
1. तकनीकी पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों की नियुक्ति
2. ई रिक्शा चालकों के लिए नए लाइसेंस बनवाने के लिए अनिवार्य 10 दिन की ट्रेनिंग सर्टिफिकेट के लिए उपलब्ध आनलाइन प्रक्रिया को बंद करवा कर हस्तचालित प्रक्रिया का प्रयोग करवा कर लाइसेंस बनवाने
3. वाहन डीलरो द्वारा एग्रीमेंट की शर्तों की अवहेलना के बावजूद वाहनों के पंजीकरण और आर.सी. प्रिंट की इजाजत देना
4. वाहनों के लिए जांच की क्षमता ना होने के बावजूद निजी कम्पनी को फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से क्षमता से कई गुणा वाहनों की जांच के आदेश देकर वाहन मालिकों को परेशानी में डालना इत्यादि अनेक आदेश उपलब्ध हैं *जो यह सिद्ध करते हैं की परिवहन आयुक्त के लिए दिल्ली की जनता की सुरक्षा से अधिक दिल्ली परिवहन विभाग से स्टेट अप्रूवल के साथ ट्रेड सर्टिफिकेट प्राप्त पंजीकृत वाहन निर्माताओं और डीलरो के हितैषी हैं।*

मौनी अमावस्या पर 1000 अतिरिक्त बसों का होगा संचालन यात्रियों के लिए कंबल और चाय की भी होगी व्यवस्था

यूपी में मौनी अमावस्या पर एक हजार अतिरिक्ति बसों का संचालन किया जाएगा। ऐसा अनुमान है कि 29 जनवरी को होने वाले शाही स्नान में बड़ी संख्या में लोग प्रयागराज पहुंचेंगे।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। परिवहन विभाग द्वारा मौनी अमावस्या पर्व पर 1000 अतिरिक्त बसें चलाएगा, ताकि महाकुंभ स्नान के लिए आने-जाने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की दिक्कत न हो। परिवहन निगम ने मौनी अमावस्या पर 7000 बसों के संचालन की योजना पहले से ही की थी। मौनी अमावस्या पर आने वाले काफी संख्या में श्रद्धालुओं को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 1000 अतिरिक्त बसों के संचालन के निर्देश दिए हैं।

परिवहन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दयाशंकर सिंह ने शनिवार को योजना भवन में 29 जनवरी व तीन फरवरी को पड़ने वाले महत्वपूर्ण स्नान को लेकर परिवहन विभाग के अधिकारियों को इसके लिए आवश्यक व्यवस्था करें। उन्होंने कहा कि मौनी अमावस्या सबसे महत्वपूर्ण स्नान है। इस दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु महाकुंभ में स्नान करने आएंगे। पुलिस व प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित कर विभागीय अधिकारी श्रद्धालुओं को बेहतर परिवहन सेवा मुहैया कराएं। प्राइवेट ऑपरेटरों से भी संपर्क किया जाए की व्यवस्था को बेहतर बनाने में सहयोग करें।

परिवहन मंत्री ने निर्देश दिया कि प्रयागराज में बने नौ अस्थाई बस स्टेशनों पर यात्रियों के रुकने, कंबल, चाय आदि की व्यवस्था के लिए भी एनजीओ आदि से संपर्क करें। यात्रियों को बेहतर व्यवस्थाएं बस स्टेशनों पर मुहैया कराई जाएं। जिनके रहने की व्यवस्था नहीं हो उन्हें अस्थाई बस स्टेशनों पर भी रुकने की व्यवस्था करें। अस्थाई बस स्टेशनों पर ट्रैफिक व्यवस्था सुचारू रूप से चले, इसके लिए एक प्लान तैयार करें।

परिवहन मंत्री ने बसों में फर्स्ट एड, फायर सेफ्टी डिवाइस की व्यवस्था सुदृढ़ रखने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने एंबुलेंस व क्रेन की व्यवस्था भी समुचित करने को कहा। ताकि आपातकाल में तत्काल व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित किया जा सके। बैठक में सभी जिलों के प्रशासनिक, पुलिस व विभागीय अधिकारी वीडियो कांफ्रेंसिंग से जुड़े थे।

ड्राइवर द्वारा कंडक्टर के बिना जनता को गंतव्य स्थान पर समय पर पहुंचाने के लिए दौड़ाई रूट पर बस

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। प्राप्त सूचना के अनुसार 26 जनवरी को बस बिना कन्डक्टर के करीब 7 किलो मीटर तक रुट पर दौड़ी, सभी यात्रियों नें बिना टिकट के ही करी यात्रा। घटना शाम 5.47 की है मोती नगर के ड्राइवर को कंट्रोल रूम से सुचना आने पर पता चला कि बस मे कॉन्डक्टर नहीं हैं। रुट नंबर 778, बस नंबर DL51 EV 4173, शाम को अपने गणतंव्य स्थान इंदरलोक मेट्रो स्टेशन से शाम 4.30. बजे पर चलने का था। टर्मिनल पर ड्यूटी दे रहे कन्डक्टर नें बस को समय देख कर बस चलवा दी। बस में कई सवारिया अपने गंतव्य स्थान पर जाने के लिए बैठी हुई थी। बस में कंडक्टर की उपस्थिति नहीं होने के कारण बस में बैठी सवारियां टिकट को लेकर असमंजस मे थे की बस में कंडक्टर ही नहीं है तो टिकट कौन देगा। अचंभे की बात यह थी की तब भी बस के ड्राइवर को पता नहीं चला की बस में कंडक्टर उपलब्ध नहीं है, मोती नगर आकर ड्राइवर को सवरियो से पता चला की बस में कंडक्टर ही नहीं हैं। कंडक्टर ने कंट्रोल नंबर पर सुचना दे कर बताया की बस ड्राइवर बिना कंडक्टर को लिए ही बस को चला कर ले गया है। कंट्रोल रूम ने ड्राइवर को सूचना दी तब जाकर ड्राइवर नें मोती नगर बस रोकी और कंडक्टर का इंतजार किया। कुछ देर बाद कंडक्टर नें बस मे अपनी सीट संभाली और जल्दी जल्दी सभी सवारियों को टिकट दी।

17 अप्रैल से शुरू हो सकती हैं उड़ानें; जानें क्या-क्या बनकर हुआ तैयार, कहां अभी भी चल रहा काम

परिवहन विशेष न्यूज

हवाई अड्डे से 17 अप्रैल को उड़ानें शुरू करने का प्रस्ताव है। हवाई अड्डे के दूसरे चरण में 1,365 हेक्टेयर पर विकसित किए जाने वाले एमआरओ हब और रनवे के संबंध में भी प्रगति हुई है।

नोएडा। अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के टर्मिनल भवन का 78 फीसदी निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। भवन का फर्श तैयार चुका है एस्केलेटर और बैगेज डिलीवरी के लिए जरूरी उपकरण लगा दिए गए हैं। बिल्डिंग की छत का निर्माण कार्य चल रहा है। टर्मिनल बिल्डिंग से रनवे तक सफर को पूरा करने के लिए टैक्सी-वे, सड़क सहित अन्य कार्य भी करीब 89 फीसदी पूरे हो गए हैं। टर्मिनल भवन तैयार हो जाने के बाद 10 एयरोब्रिज बनाए जाएंगे।

हाल ही में नागरिक उड्डयन विभाग के निदेशक ईशान प्रताप सिंह ने एयरपोर्ट के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया था। इसी दौरान तैयार की गई रिपोर्ट में निर्माण कार्य का पूरा ब्योरा दिया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, टर्मिनल बिल्डिंग और एयर साइट का विकास तेजी से जारी है। सड़कें, पार्किंग सुविधाएं और सार्वजनिक परिवहन कनेक्शन की भौतिक प्रगति 78.7 फीसदी है। एयरसाइड के रनवे, टैक्सीवे, एप्रन और नेविगेशन सिस्टम का 88.9 फीसदी काम पूरा हो चुका है। वित्तीय तौर पर भी हवाई अड्डे के पहले चरण ने 90 फीसदी प्रगति हासिल की है।

कुल स्वीकृत बजट 10,056 करोड़ रुपये में से 9,024 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। इसमें 1,334 हेक्टेयर भूमि के अधिग्रहण के लिए उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से आवंटित 4,326 करोड़ रुपये और ज्यूरिख एजी की सहायक कंपनी, यमुना इंटरनेशनल एयरपोर्ट प्राइवेट लिमिटेड (यापल) द्वारा परियोजना विकास के लिए निर्धारित 5,730 करोड़ रुपये शामिल हैं।

अहम है कि हवाई अड्डे से 17 अप्रैल को उड़ानें शुरू करने का प्रस्ताव है। हवाई अड्डे के दूसरे चरण में 1,365 हेक्टेयर पर विकसित किए जाने वाले एमआरओ हब और रनवे के संबंध में भी प्रगति हुई है। एमआरओ हब की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए निविदा दस्तावेज तैयार कर शासन को भेजने की तैयारी है।

एटीसी टावर का निर्माण पूरा, एएआई ने शुरू की निगरानी

एयर ट्रैफिक कंट्रोल टावर का निर्माण भी पूरा हो गया है। इसके ग्लास का काम पूरा होने के बाद अब भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) की निगरानी में हवाई यातायात प्रबंधन के परिचालन प्रणाली की जांच जारी है। कार्यदायी संस्था यापल की ओर से बीते दिसंबर में सफल सत्यापन उड़ान के बाद एयरोड्रम लाइसेंस के लिए आवेदन किया है। मार्च तक इस लाइसेंस के मिलने की उम्मीद है।

हवाई अड्डे के प्रवेश द्वार पर इंटरचेंज का काम जारी

यमुना एक्सप्रेसवे को हवाई अड्डे से जोड़ने वाली आठ-लेन इंटरचेंज का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है। हवाई अड्डे के प्रवेश द्वार को उसके टर्मिनल भवन से जोड़ने वाले हिस्से का निर्माण अब अंतिम चरण में है। करीब 31 किमी लंबी सड़क बल्लभगढ़ में एयरपोर्ट को दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से जोड़ेगी। इसी सड़क को यमुना एक्सप्रेवसे और एयरपोर्ट से जोड़ा गया है।

एयरपोर्ट के पहले चरण के 10 हजार करोड़ रुपये के बजट का 90 फीसदी उपयोग किया जा चुका है। टर्मिनल बिल्डिंग से रनवे तक सफर को पूरा करने के लिए टैक्सीवे, सड़क सहित एयर साइट के अन्य कामों को भी 89 फीसदी पूरा कर लिया गया है।

थर्ड पार्टी बीमा नहीं है? तो आपको ईंधन या फास्टैग नहीं मिलेगा, जल्द ही आने वाले हैं नए नियम

केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय को थर्ड पार्टी बीमा को बढ़ावा देने के मकसद से उपायों पर विचार करने का निर्देश दिया है। इन उपायों में बिना बीमा वाले वाहनों को ईंधन भरने या फास्टैग लेन का इस्तेमाल करने से रोकना शामिल है।

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय को थर्ड पार्टी बीमा को बढ़ावा देने के मकसद से उपायों पर विचार करने का निर्देश दिया है। इन उपायों में बिना बीमा वाले वाहनों को ईंधन भरने या फास्टैग लेन का इस्तेमाल करने से रोकना शामिल है। इसके अलावा, मंत्रालय ने प्रस्ताव दिया है कि बिना बीमा वाले वाहन मालिकों के ड्राइविंग लाइसेंस का रिन्युअल (नवीनीकरण) नहीं किया जाएगा।

मोटर वाहन अधिनियम 1988 के तहत सभी वाहनों के लिए थर्ड पार्टी बीमा अनिवार्य है। इस तरह का बीमा दुर्घटना में किसी थर्ड पार्टी (तीसरे पक्ष) को हुए नुकसान के लिए मुआवजा प्रदान करता है। हालांकि, कानूनी जरूरत के बावजूद, भारतीय सड़कों पर आधे से ज्यादा वाहन बिना बीमा के चल रहे हैं। थर्ड पार्टी बीमा के बिना गाड़ी चलाना एक अपराध है, जिसके लिए पहली बार अपराध करने पर 2,000 रुपये का जुर्माना, तीन महीने तक की कैद या दोनों हो सकते हैं। बार-बार अपराध करने पर जुर्माना बढ़कर 4,000 रुपये हो जाता है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, मंत्रालय जल्द ही वाहन सेवा नियमों में बदलाव करने के लिए प्रस्तावों पर भी विचार कर रहा है। जिसमें वाहन से संबंधित सेवाओं को बीमा कवरेज के प्रमाण के साथ जोड़ा जा सकता है। इसके अलावा, राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों को इन नए नियमों का सख्ती से अनुपालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए जाएंगे।

केंद्रीय वित्त मंत्रालय ने थर्ड पार्टी बीमा को बढ़ावा देने के लिए उपायों का प्रस्ताव दिया है। जिसमें बिना बीमा वाले वाहनों को ईंधन भरने और फास्टैग लेन का इस्तेमाल करने से रोकना शामिल है। साथ ही वाहन सेवाओं को बीमा कवरेज से जोड़ने पर भी विचार किया जा रहा है।

इसी के अनुरूप, संसदीय स्थायी समिति ने थर्ड पार्टी बीमा कवरेज को बढ़ाने के संबंध में सरकार को सिफारिशें पेश की हैं। समिति ने वाहन पंजीकरण और बीमा स्थिति की व्यापक निगरानी सुनिश्चित करने के लिए डेटा एकीकरण, ई-चालान और अलग-अलग राज्यों को डेटा रिपोर्टिंग बढ़ाने की भी वकालत की है।

भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (IRDAI) के अनुसार, 2024 में भारतीय सड़कों पर चलने वाले अनुमानित 35-40 करोड़ वाहनों में से सिर्फ 50 प्रतिशत ही थर्ड-पार्टी बीमा द्वारा कवर किए गए हैं।

इसके अलावा, बीमा सत्यापन को FASTag (फास्टैग) और अन्य डिजिटल सेवाओं से जोड़ने से प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया जा सकता है। जिससे यह ज्यादा कुशल और प्रभावी बन सकता है।

अपने जन्म नक्षत्र के अनुसार करें वृक्षारोपण और पाए जीवन में सफलता और समृद्धि

ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक

हमारी सनातन संस्कृति में वृक्षों को भगवान के रूप में पूजा जाता है। हर वृक्ष में किसी न किसी देवता का वास होता है। जैसे कि पीपल के वृक्ष में तीनों महाशक्ति ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी का वास माना जाता है और आक के पौधे की जड़ में गणेश जी का वास माना जाता है। शास्त्रों के अनुसार जिस नक्षत्र में व्यक्ति जन्म हुआ हो यदि उसी नक्षत्र में अपने नक्षत्रानुसार वृक्षारोपण किया जाए तो व्यक्ति के जीवन में हर इच्छा पूरी होती हैं और उन्नति के साथ ही धन-धान्य की भी प्राप्ति होती है।

प्राच्य मनीषियों के अनुसार चंद्रमा के यात्रा मार्ग को 27 भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक सत्ताईसवें भाग में पड़ने वाले 'तारामंडल' के बीच कुछ विशिष्ट तारों का परिचय कर उन्हें नक्षत्रों की संज्ञा दी है। इस प्रकार नौ ग्रहों तथा 27 नक्षत्रों की पहचान की गई है तथा जब ग्रहों का विभिन्न नक्षत्रों पर गोचर होता है तब इसका प्रभाव, धरती के वातावरण व निवासियों पर भी पड़ता है।

व्यक्ति के जन्म के समय, चंद्रमा पृथ्वी से जिस नक्षत्र में गोचर करता है। वह उस व्यक्ति का जन्म-नक्षत्र कहलाता है। इस प्रकार अपने जन्म-नक्षत्र को जानकर उससे संबंधित वृक्ष का वृक्षा रोपण करना चाहिए तथा उक्त वृक्ष के फल, फूल इत्यादि का सेवन निषेध है। अतः जन्म-नक्षत्र से संबंधित वृक्ष का सेवन नहीं, सेवा करनी चाहिए।

यदि हो सके तो आप अपने जन्म-नक्षत्र के अनुसार पौधे घर में लगाकर उसे सींचे। इससे आप निरोगी, स्वस्थ और संपन्न रहेंगे।

प्रस्तुत है जन्म-नक्षत्र से संबंधित वे वृक्ष जिनके वृक्षारोपण से जीवन सार्थक हो सकता है

नक्षत्र वृक्षों के नाम इस प्रकार है.....

1- अश्विनी - केला, धतूरा
2- भरणी - आंवला
3- कृतिका - गूलर
4- रोहिणी - जामुन
5- मृगशिरा - खैर
6- आर्द्रा - आम, बेल
7- पुनर्वसु - बांस
8- पुष्य - पीपल
9- आश्लेषा - नाग केसर या चन्दन
10- मघा - बड़
11- पूर्वा फाल्गुनी - ढाक
12- उत्तरा फाल्गुनी - बड़ / पाकड़
13- हस्त - रीठा
14- चित्रा - बेल
15- स्वाति - अर्जुन
16- विशाखा - नीम
17- अनुराधा - मौलसिरी
18- ज्येष्ठा - रीठा
19- मूल - राल वृक्ष
20- पूर्वा षाढा - जामुन
21- उत्तरा षाढा - कटहल
22- श्रवण - आक
23- धनिष्ठा - शमी
24- शतभिषा - कदम्ब
25- पूर्वा भाद्रपद - आम
26- उत्तरा भाद्रपद- पीपल
27- रेवती- महुआ

यदि किसी जातक को उनके नक्षत्र के पौधे नहीं मिल रहे है तो उसे आम, पीपल, बड़, गुलर, जामुन जैसे सर्वमान्य वृक्षों की सेवा करनी चाहिए।

हनुमान जी के 108 नाम

हनुमान की उपासना से जीवन के सारे कष्ट, संकट मिट जाते है। माना जाता है कि हनुमान एक ऐसे देवता है जो थोड़ी-सी प्रार्थना और पूजा से ही शीघ्र प्रसन्न हो जाते है। मंगलवार और शनिवार का दिन इनके पूजन के लिए सर्वश्रेष्ठ हैं। उनके 108 पवित्र नाम...

1.आंजनेया : अंजना का पुत्र
2.महावीर : सबसे बहादुर
3.हनूमत : जिसके गाल फुले हुए हैं
4.मारुतात्मज : पवन देव के लिए रत्न जैसे प्रिय
5.तत्वज्ञानप्रद : बुद्धि देने वाले
6.सीतादेविमुद्राप्रदायक : सीता की अंगूठी भगवान राम को देने वाले
7.अशोकवनकाच्छेत्रे : अशोक बाग का विनाश करने वाले
8.सर्वमायाविभंजन : छल के विनाशक
9.सर्वबन्धविमोक्त्रे : मोह को दूर करने वाले
10.रक्षोविध्वंसकारक : राक्षसों का वध करने वाले
11.परविद्या परिहार : दुष्ट शक्तियों का नाश करने वाले
12.परशौर्य विनाशन : शत्रु के शौर्य को खंडित करने वाले
13.परमन्त्र निराकर्त्रे : राम नाम का जाप करने वाले
14.परयन्त्र प्रभेदक : दुश्मनों के उद्देश्य को नष्ट करने वाले
15.सर्वग्रह विनाशी : ग्रहों के बुरे प्रभावों को खत्म करने वाले
16.भीमसेन सहायकृथे : भीम के सहायक
17.सर्वदुखः हरा : दुखों को दूर करने वाले
18.सर्वलोकचारिणे : सभी जगह वास करने वाले
19.मनोजवाय : जिसकी हवा जैसी गति है
20.पारिजात द्रुमूलस्थ : प्राजक्ता पेड़ के नीचे वास करने वाले
21.सर्वमन्त्र स्वरूपवते : सभी मंत्रों के स्वामी
22.सर्वतन्त्र स्वरूपिणे : सभी मंत्रों और भजन का आकार जैसा
23.सर्वयन्त्रात्मक : सभी यंत्रों में वास करने वाले
24.कपीश्वर : वानरों के देवता
25.महाकाय : विशाल रूप वाले
26.सर्वरोगहरा : सभी रोगों को दूर करने वाले
27.प्रभवे : सबसे प्रिय
28.बल सिद्धिकर :
29.सर्वविद्या सम्पतिप्रदायक : ज्ञान और बुद्धि प्रदान करने वाले
30.कपिसेनानायक : वानर सेना के प्रमुख
31.भविष्यथ्तुराननाय : भविष्य की घटनाओं के ज्ञाता
32.कुमार ब्रह्मचारी : युवा ब्रह्मचारी
33.रत्नकुण्डल दीप्तिमते : कान में मणियुक्त कुंडल धारण करने वाले

34.चंचलद्वाल सन्नद्धलम्बमान शिखोज्वला : जिसकी पूंछ उनके सर से भी ऊंची है
35.गन्धर्व विद्यातत्वज्ञ, : आकाशीय विद्या के ज्ञाता
36.महाबल पराक्रम : महान शक्ति के स्वामी
37.काराग्रह विमोक्त्रे : कैद से मुक्त करने वाले
38.शृन्खला बन्धमोचक: तनाव को दूर करने वाले
39.सागरोतारक : सागर को उछल कर पार करने वाले
40.प्राज्ञाय : विद्वान
41.रामदूत : भगवान राम के राजदूत
42.प्रतापवते : वीरता के लिए प्रसिद्ध
43.वानर : बंदर
44.केसरीसुत : केसरी के पुत्र
45.सीताशोक निवारक : सीता के दुख का नाश करने वाले
46.अन्जनागर्भसम्भूता : अंजनी के गर्भ से जन्म लेने वाले
47.बालार्कसदृशानन : उगते सूरज की तरह तेजस
48.विभीषण प्रियकर : विभीषण के हितैषी
49.दशग्रीव कुलान्तक : रावण के राजवंश का नाश करने वाले
50.लक्ष्मणप्राणदात्रे : लक्ष्मण के प्राण बचाने वाले
51.वज्रकाय : धातु की तरह मजबूत शरीर
52.महाद्युत : सबसे तेजस
53.चिरंजीविने : अमर रहने वाले
54.रामभक्त : भगवान राम के परम भक्त
55.दैत्यकार्य विघातक : राक्षसों की सभी गतिविधियों को नष्ट करने वाले
56.अक्षहन्त्रे : रावण के पुत्र अक्षय का अंत करने वाले
57.कांचनाभ : सुनहरे रंग का शरीर
58.पंचवक्त्र : पांच मुख वाले
59.महातपसी : महान तपस्वी
60.लन्किनी भंजन : लंकिनी का वध करने वाले
61.श्रीमते : प्रतिष्ठित
62.सिंहिकाप्राण भंजन : सिंहिका के प्राण लेने वाले
63.गन्धमादन शैलस्थ : गंधमादन पर्वत पार निवास करने वाले
64.लंकापुर विदायक : लंका को जलाने वाले
65.सुग्रीव सचिव : सुग्रीव के मंत्री
66.धीर : वीर
67.शूर : साहसी
68.दैत्यकुलान्तक : राक्षसों का वध करने वाले
69.सुरार्चित : देवताओं द्वारा पूजनीय
70.महातेजस : अधिकांश दीप्तिमान
71.रामचूडामणिप्रदायक : राम को सीता का चूड़ा देने वाले
72.कामरूपिणे : अनेक रूप धारण करने वाले
73.पिंगलाक्ष : गुलाबी आँखों वाले
74.वार्धिमैनाक पूजित : मैनाक पर्वत द्वारा पूजनीय
75.कबलीकृत मार्ताण्डमण्डलाय : सूर्य को निगलने वाले
76.विजितेन्द्रिय : इंद्रियों को शांत रखने वाले
77.रामसुग्रीव सन्धात्रे : राम और सुग्रीव के बीच मध्यस्थ
78.महारावण मर्धन : रावण का वध करने वाले
79.स्फटिकाभा : एकदम शुद्ध
80.वागधीश : प्रवक्ताओं के भगवान
81.नवव्याकृतपण्डित : सभी विद्याओं में निपुण
82.चतुर्बाहवे : चार भुजाओं वाले
83.दीनबन्धुरा : दुखियों के रक्षक
84.महात्मा : भगवान
85.भक्तवत्सल : भक्तों की रक्षा करने वाले
86.संजीवन नगाहर्त्रे : संजीवनी लाने वाले
87.सुचये : पवित्र
88.वाग्मिने : वक्ता
89.दृढव्रता : कठोर तपस्या करने वाले
90.कालनेमि प्रमथन : कालनेमि का प्राण हरने वाले
91.हरिमर्कट मर्कटा : वानरों के ईश्वर
92.दान्त : शांत
93.शान्त : रचना करने वाले
94.प्रसन्नात्मने : हंसमुख
95.शतकन्दमदापहते : शतकंद के अहंकार को ध्वस्त करने वाले
96.योगी : महात्मा
97.रामकथा लोलाय : भगवान राम की कहानी सुनने के लिए व्याकुल
98.सीतान्वेषण पण्डित : सीता की खोज करने वाले
99.वज्रदनुष्ट :
100.वज्रनखा : वज्र की तरह मजबूत नाखून
101.रुद्रवीर्य समुद्भवा : भगवान शिव का अवतार
102.इन्द्रजित्प्रहितामोघब्रह्मास्त्र विनिवारक : इंद्रजीत के ब्रह्मास्त्र के प्रभाव को नष्ट करने वाले
103.पार्थ ध्वजाग्रसंवासिने : अर्जुन के रथ पार विराजमान रहने वाले
104.शरपंजर भेदक : तीरों के घोंसले को नष्ट करने वाले
105.दशबाहवे : दस भुजाओं वाले
106.लोकपूज्य : ब्रह्मांड के सभी जीवों द्वारा पूजनीय
107.जाम्बवत्प्रीतिवर्धन : जाम्बवत के प्रिय
108.सीताराम पादसेवक : भगवान राम और सीता की सेवा में तल्लीन रहने वाले।

अमलतास का गुण एवं घरेलू उपयोग

अमलतास को आयुर्वेद में राजवृक्ष के नाम से भी जाना जाता है, इसके फूल चमकीले पीले रंग के होते हैं। इसे भारत के सबसे खूबसूरत पेड़ों में से एक माना जाता है।

दोपहर के भोजन और रात के खाने के बाद गर्म पानी के साथ अमलतास चूर्ण लेना रक्त शर्करा के स्तर को प्रबंधित करने में फायदेमंद हो सकता है क्योंकि यह अपनी एंटीऑक्सीडेंट और सूजन-रोधी गतिविधि के कारण इंसुलिन स्राव को बढ़ाता है। यह वजन प्रबंधन में भी मदद करता है क्योंकि यह शरीर के चयापचय में सुधार करता है। अमलतास अपनी मूत्रवर्धक गतिविधि के कारण मूत्र उत्पादन को बढ़ाकर मूत्र संबंधी विकारों को प्रबंधित करने और शरीर से विषाक्त पदार्थों को निकालने में भी मदद कर सकता है। यह अपनी ज्वरनाशक (बुखार कम करने वाली) और ज्वरनाशक (खांसी से राहत देने वाली) गतिविधि के कारण बुखार और खांसी के लिए भी उपयोगी है। गर्म पानी के साथ अमलतास फल के गूदे के पेस्ट का सेवन करने से इसके रेचक गुण के कारण कब्ज को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

अमलतास की पत्तियों का पेस्ट शहद या गाय के दूध के साथ लगाने से दर्द और सूजन से राहत मिलती है। घाव भरने को बढ़ावा देने और इसके जीवाणुरोधी और एंटीफंगल गुणों के कारण त्वचा संक्रमण को प्रबंधित करने के लिए आप अमलतास की पत्ती का पेस्ट भी लगा सकते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार, अमलतास के अत्यधिक सेवन से इसकी सीता (ठंडी) गतिविधि के कारण खांसी और सर्दी जैसी स्थिति हो सकती है।

1. कब्ज कब्ज वात और पित्त दोष के बढ़ने के कारण होता है। इसका कारण जंक फूड का लगातार सेवन, कॉफी या चाय का अधिक सेवन, रात को देर से सोना, तनाव और अवसाद हो सकता है। ये सभी कारक वात और पित्त को बढ़ाते हैं जिससे कब्ज होता है। अगर नियमित रूप से अमलतास का सेवन किया जाए तो यह अपनी श्रमसाना (सरल रेचक) प्रकृति के कारण कब्ज को नियंत्रित करने में मदद करता है। यह बड़ी आंत से अपशिष्ट उत्पादों को आसानी से बाहर निकालने में मदद करता है।

युक्तियाँ

1-2 चम्मच अमलतास फल के गूदे का पेस्ट लें।

कब्ज से राहत पाने के लिए इसे 1 गिलास गर्म पानी में मिलाएं और रात के खाने के बाद इसका सेवन करें।

2. बवासीर बवासीर को आयुर्वेद में अर्श के नाम से जाना जाता है जो अस्वास्थ्यकर आहार और गतिहीन जीवनशैली के कारण होता है। इससे तीनों दोषों, मुख्य रूप से वात, की हानि होती है। वात के बढ़ने से पाचन अग्नि कम हो जाती है, जिससे कब्ज हो जाता है। इससे मलाशय क्षेत्र में नसों में सूजन आ जाती है जिससे ढेर जमा हो जाता है। अमलतास अपने श्रमसाना (सरल रेचक) गुण के कारण कब्ज को प्रबंधित करने में मदद करता है। इससे ढेर द्रव्यमान का आकार भी कम हो जाता है।

युक्तियाँ

1-2 चम्मच अमलतास फल का गूदा लें।

इसे गर्म पानी में मिलाएं और रात को खाना खाने के बाद इसका सेवन करें।

3. हाइपर एसिडिटी हाइपर एसिडिटी का मतलब है पेट में एसिड का बढ़ा हुआ स्तर। बढ़ा हुआ पित्त पाचन अग्नि को ख़राब कर देता है, जिससे भोजन का पाचन ठीक से नहीं हो पाता और अमा का उत्पादन शुरू हो जाता है। यह अमा पाचन नाड़ियों में जमा हो जाता है और हाइपरएसिडिटी का कारण बनता है। अमलतास हाइपरएसिडिटी को कम करने में मदद करता है। यह पाचन तंत्र से संचित अमा को हटाने में मदद करता है और हाइपरएसिडिटी को प्रबंधित करने में मदद करता है।

युक्तियाँ

1 चम्मच अमलतास फल का गूदा लें। 1/2 चम्मच मिश्री डालें।

हाइपर एसिडिटी को नियंत्रित करने के लिए इसे दोपहर और रात के खाने से पहले पानी के साथ लें।

4. रूमेटाइड आर्थराइटिस रूमेटाइड

आर्थराइटिस (आरए) को आयुर्वेद में आमवात के नाम से जाना जाता है। अमावत एक ऐसी बीमारी है जिसमें वात दोष ख़राब हो जाता है और जोड़ों में अमा जमा हो जाता है। अमावत की शुरुआत कमजोर पाचन अग्नि से होती है जिससे अमा का संचय होता है (अनुचित पाचन के कारण शरीर में विषाक्त अवशेष रह जाते हैं)। यह अमा वात के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर ले जाया जाता है लेकिन अवशोषित होने के बजाय, यह जोड़ों में जमा हो जाता है और रूमेटॉइड गठिया को जन्म देता है। अमलतास का नियमित सेवन इसके दीपन और पचन गुणों के कारण अमा को कम करने में मदद करता है और रुमेटीइड गठिया के लक्षणों को नियंत्रित करता है।

टिप्स

अमलतास काढ़ा अमलतास के फल के गूदे का पेस्ट 1-2 चम्मच लें।

इसे 2 कप पानी में तब तक उबालें जब तक पानी आधा कप न रह जाए। यह अमलतास काढ़ा है।

इस काढ़े की 4-5 चम्मच लें और उतनी ही मात्रा में पानी मिला लें।

रूमेटॉइड आर्थराइटिस (अमावत) के लक्षणों को नियंत्रित करने के लिए इसे दोपहर और रात के खाने के बाद लें।

अमलतास का उपयोग करते समय सावधानियां

आयुर्वेदिक दृष्टिकोण यदि आप दस्त या दस्त से पीड़ित हैं तो अमलतास से बचें।

स्तनपान आयुर्वेदिक दृष्टिकोण स्तनपान के दौरान अमलतास से परहेज करें।

गर्भावस्था आयुर्वेदिक दृष्टिकोण गर्भावस्था के दौरान अमलतास से परहेज करें।

अमलतास की अनुशंसित खुराक अमलतास पेस्ट - 1-2 चम्मच दिन में एक बार।

अमलतास कैप्सूल – 1-2 कैप्सूल दिन में दो बार।

अमलतास पाउडर - 1/4 -1/2 चम्मच दिन में दो बार।

अमलतास का उपयोग कैसे करें

1. अमलतास फ्रूट पल्प पेस्ट 1-2 चम्मच अमलतास फ्रूट पल्प पेस्ट लें।

इसे 1 गिलास गर्म पानी में मिलाएं और रात को खाने के बाद कब्ज दूर करने के लिए इसका सेवन करें।

2. अमलतास चूर्ण दोपहर और रात के खाने के बाद 1/4 -1/2 चम्मच अमलतास चूर्ण (1-2 ग्राम) गर्म पानी के साथ लें।

पाचन तंत्र को अच्छा बनाए रखने के लिए इसे रोजाना दोहराएं।

3. अमलतास कैप्सूल दोपहर और रात के खाने के बाद 1-2 अमलतास कैप्सूल गर्म पानी के साथ लें।

4. अमलतास काढ़ा अमलतास के फल के गूदे का पेस्ट 1-2 चम्मच लें।

इसे 2 कप पानी में तब तक उबालें जब तक पानी आधा कप न रह जाए। यह अमलतास काढ़ा है।

इस काढ़े की 4-5 चम्मच लें और उतनी ही मात्रा में पानी मिला लें।

रूमेटॉइड आर्थराइटिस (अमावत) के लक्षणों को नियंत्रित करने के लिए इसे दोपहर और रात के खाने के बाद पियें।

1. त्वचा की एलर्जी अमलतास की पत्तियों का पेस्ट या रस अपने मधुर (मीठा) और रोपन (उपचार) गुणों के कारण त्वचा की विभिन्न समस्याओं में खुजली और जलन को कम करने के लिए अच्छा है। इन गुणों के परिणामस्वरूप, नियमित आधार पर उपयोग करने पर अमलतास सुखदायक प्रभाव देता है और त्वचा में जलन को कम करता है।

युक्तियाँ

अमलतास की पत्तियों का पेस्ट बना लें।

नारियल तेल या बकरी के दूध के साथ मिलाएं।

त्वचा की एलर्जी या जलन से छुटकारा पाने के लिए इसे दिन में एक बार या सप्ताह में तीन बार प्रभावित क्षेत्र पर लगाएं।

2. पेट दर्द अमलतास के फल के गूदे का पेस्ट नाभि क्षेत्र के आसपास बाहरी रूप से लगाने से विशेष रूप से बच्चों में मल त्याग सुनिश्चित करके पेट फूलने के कारण होने वाले पेट दर्द से राहत मिलती है।

युक्तियाँ

1/2-1 चम्मच अमलतास फल का पेस्ट लें।

तिल के तेल के साथ मिलाएं।

पेट दर्द से छुटकारा पाने के लिए इसे नाभि क्षेत्र पर लगाएं।

3. घाव भरने में अमलतास की पत्तियों का लेप लगाने से इसके रोपन गुण के कारण घाव जल्दी भरने में मदद मिलती है।

युक्तियाँ

अमलतास की पत्तियों का पेस्ट 1/2-1 चम्मच लें।

इसे शहद के साथ मिलाकर प्रभावित जगह पर लगाएं।

इसे 4-6 घंटे के लिए छोड़ दें और सादे पानी से धो लें।

घाव को जल्दी ठीक करने के लिए इसे रोजाना दोहराएं।

अमलतास का उपयोग करते समय सावधानियां

एलर्जी आयुर्वेदिक दृष्टिकोणयदि आपकी त्वचा अतिसंवेदनशील है तो अमलतास की पत्तियों, छाल और फलों के गूदे के पेस्ट को शहद, तेल या किसी मॉइस्चराइजिंग क्रीम के साथ प्रयोग करें।

अमलतास की अनुशंसित खुराक

अमलतास पाउडर - 1/2-1 चम्मच या अपनी आवश्यकता के अनुसार अमलतास पेस्ट - 1/2- 1 चम्मच या अपनी आवश्यकता के अनुसार।

अमलतास का उपयोग कैसे करें.

1. अमलतास पेस्ट पत्तियों का:- एक मुट्ठी अमलतास की पत्तियां या अपनी आवश्यकता के अनुसार लें। द्वितीय. पत्तों का पेस्ट बना लें.।

अमलतास की पत्तियों का पेस्ट 1/2-1 चम्मच लें।

इसे शहद के साथ मिलाकर प्रभावित जगह पर लगाएं।

इसे 4-6 घंटे के लिए छोड़ दें और सादे पानी से धो लें।

घाव जल्दी भरने के लिए इसे अगले दिन दोबारा दोहराएं।

फलों के गूदे का पेस्ट 1/2 -1 चम्मच अमलतास फल के गूदे का पेस्ट लें। पेट दर्द से छुटकारा पाने के लिए इसे तिल के तेल में मिलाकर नाभि पर लगाएं।

क्यों जरूरी होता है मृत व्यक्ति का अंतिम संस्कार करना ?

कई संस्कृतियों में मृत्यु, जीवन का अंतिम चरण है। आपके कर्मों का योग आखिर में मृत्यु के समय नष्ट हो जाएगा। अंतिम संस्कार का वो प्रक्रिया है जब आत्मा शरीर से निकल जाती है और बस यह भौतिक शरीर रह जाता है।

आपका सूक्ष्म शरीर आपके जीवन में किए गए कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है, जो बदले में आत्मा को मिलने वाले पुनर्जन्म की प्रकृति को तय करता है लेकिन एक सवाल जो मन में उठता है वो ये कि कि अगर ये भौतिक शरीर मायने ही नहीं रखता और जब इसमें से चेतना निकल जाती है तब इसका अंतिम संस्कार करने का क्या महत्व है?

आपने देखा होगा कि जब कोई व्यक्ति मरता है तो पहला काम जो किया जाता है वह उसके मृत शरीर के दोनों पैरों के अंगूठों को एकसाथ बांध देना होता है। ऐसा किसी रिवाज़ के तहत नहीं किया जाता बल्कि इसके पीछे आध्यात्मिक कारण है। यह एक महत्वपूर्ण क्रिया है क्योंकि इससे मूलाधार को सख्त किया जाता है ताकि जीवन को उस शरीर में फिर से प्रवेश ना मिल सके। मूलाधार वह जगह है जहां से जीवन की शुरुआत होती है और जब शरीर ठंडा पड़ना शुरु होता है तब भी यही शरीर का आखिरी गर्म

भाग होता है। शास्त्र क्या कहते हैं?

शास्त्र बताते हैं कि ये ब्रह्मांड और मानव शरीर दोनों 5 तत्वों से मिलकर बना है। पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश और मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार शरीर को फिर से इन्हीं पांच तत्वों में मिलने का मौका देता है।

अंतिम संस्कार भले ही शरीर का होता है लेकिन ये आत्मा को मोक्ष की तरफ बढ़ाता है। यह आत्मा को नई यात्रा के लिए प्रेरित करता है ताकि वह दोबारा उसी शरीर की तरफ आकर्षित ना हो।

बार बार पेशाब आने के घरेलू इलाज

आंवला और शहद आंवले के रस में शहद मिलाकर सुबह शाम सेवन करने से बार बार पेशाब आने की समस्या से छुटकारा मिलता है।

जायफल सफेद मूसली और जायफल की एक एक चुटकी मात्रा लेकर पानी के साथ सेवन करें। इससे फ्रिक्वेंट यूरिनेशन में लाभ मिलता है।

केले का सेवन केले खाने से बार बार पेशाब आने से छुटकारा मिलता है। रोजाना भोजन करने के 1 से 2 घंटे बाद दो केले अवश्य खाएं।

मेथी की पत्तियां मेथी की पत्तियों का सेवन करने पर इस रोग से छुटकारा मिलता है। हफ्ते में दो दिन मेथी की पत्तियों की सब्जी जरूर खाएं। मेथी के पराठे भी खा सकते हैं।

तिल का सेवन गुड़ के साथ तिल का सेवन करने से पेशाब ज्यादा आने की समस्या से लाभ मिलता है। गुड़ से बने तिल के लड्डू भी खा सकते हैं।

चने का सेवन रोजाना शाम के समय भुने हुए चने का सेवन गुड़ के साथ करें। इससे अधिक पेशाब आने की समस्या से छुटकारा मिलता है। एक हफ्ते तक इस उपाय को प्रयोग में लाएं।

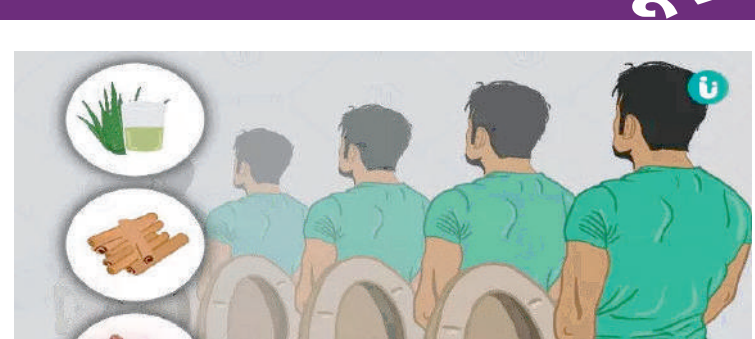

अंगूर का सेवन पेशाब अधिक आने पर अंगूर का सेवन या फिर अंगूर का रस पीना बहुत लाभदायक होता है।

पालक का सेवन पालक का ज्यूस पीने से या फिर पालक की सब्जी खाने से बार बार पेशाब आने की समस्या से राहत मिलती है।

केला और आंवला का रस केले का सेवन करने के बाद एक कप आंवले के ज्यूस में मिश्री मिलाकर पीएं। ऐसा करने से बार बार पेशाब आने की समस्या के अलावा पेशाब से जुड़े अन्य रोग भी दूर हो जाते हैं। अगर आप डायबिटीज से पीड़ित हैं तो इस नुस्खे को नहीं आजमाना चाहिए।

अनार के छिलके अनार के छिलके को सुखाकर पीस लें। अब इस चूर्ण को पानी में मिलाकर गाढ़ा पेस्ट बनाएं और रोजाना सेवन करें।

दही का सेवन मूत्र मार्ग में संक्रमण के कारण अधिक पेशाब आने की समस्या होती है तो दही का इस्तेमाल किया जा सकता है। दही में प्रोबायोटिक (Probiotic) बैक्टीरिया पाए जाते हैं जो संक्रमण फैलाने वाले बैक्टीरिया को नष्ट कर देते हैं। रोजाना दही का सेवन करने से इस स्थिति में बहुत लाभ नजर आता है।

तुलसी की पत्तियां रोजाना सुबह खाली पेट तीन से चार तुलसी की पत्तियों को एक चम्मच शहद में मिलाकर खाएं। इससे अधिक पेशाब आने की समस्या दूर होती है।

मसूर की दाल खाने में मसूर की दाल को शामिल करें। इससे पेशाब सही मात्रा में आएगी।

सेब का सेवन अगर रात में बार बार पेशाब आने की समस्या होती है तो सेब का सेवन कर सकते हैं।

गाजर गाजर खाने से या फिर इसका ज्यूस पीने से फ्रिक्वेंट यूरिटेशन में लाभ मिलता है।

अनार का रस कई दफा बार बार पेशाब आने का कारण शरीर में पोषक तत्वों की कमी भी होती है। ऐसे में अनार के ज्यूस का सेवन करना आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकता है क्योंकि यह शरीर से पोषक तत्वों की कमी को दूर कर बार बार पेशाब आने की समस्या से छुटकारा दिलाने में मदद करता है।

मुझे पूरा भरोसा, दिल्ली एक बार फिर झाड़ू को ही चुनेगी- केजरीवाल

सुषमा रानी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने सोमवार को पार्टी का मेनिफेस्टो जारी किया। उन्होंने कहा कि यह दिल्ली की जनता को केजरीवाल की गारंटी है। दिल्ली की जनता से हमारा रिश्ता वादों का नहीं, बल्कि गारंटी का है। यह केजरीवाल की गारंटी हैं। जो कहा है, वो करके दिखाएंगे। मुझे पूरा भरोसा है कि दिल्ली की जनता एक बार फिर से झाड़ू को ही चुनेगी। उन्होंने कहा कि युवाओं को रोजगार, महिला सम्मान, संजीवनी व पुजारी-ग्रंथी योजना, पानी के गलत बिल माफ, डॉ. अंबेडकर स्कॉलरशिप, छात्रों की फ्री बस यात्रा व मेट्रो के किराए में 50 फीसद की रियायत समेत 15 गारंटी हम अगले पांच साल में पूरा करेंगे। साथ ही, पहले से मिल रही मुफ्त बिजली, पानी, शिक्षा, इलाज, महिलाओं की बस यात्रा, बुजुर्गों की तीर्थयात्रा जारी रहेगी। ''आप'' की सरकार में हर परिवार को 25 हजार रुपए महीना फायदा हो रहा है। अगर कमल का बटन दब गया तो इतना अतिरिक्त बोझ बढ़ जाएगा। इस मौके पर वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया, सीएम आतिशी, सांसद संजय सिंह, सौरभ भारद्वाज, गोपाल राय भी मौजूद रहे।

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने पार्टी मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर कहा कि आज हम लोग दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए 'केजरीवाल की गारंटी' जारी कर रहे हैं। केजरीवाल की गारंटी का मतलब पक्की बात है। इसमें कच्ची बात कुछ भी नहीं होती है। जिस तरह ये लोग कभी संकल्प पत्र कहते हैं तो कभी कुछ कहते हैं। सबको पता है कि इनके संकल्प पत्र फर्जी होते हैं। जब लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि मैं 15-15 लाख रुपए दूंगा। इसके एक-डेढ़ साल बाद अमित शाह से पूछा गया कि प्रधानमंत्री ने 15-15 लाख रुपए देने का वादा किया था। इसके जवाब में अमित शाह ने कहा था कि वह चुनावी जुमला था।

रोजगार की गारंटी

महिला सम्मान योजना

सरकार बनने के बाद हर महीने हर महिला के खाते में 2100 रुपए दिए जाएंगे। सरकार बनने के बाद हम इसे जल्द से जल्द और सबसे पहले लागू करेंगे।

संजीवनी योजना

60 साल से उपर उम्र होने के बाद हमारे बुजुर्गों को चिंता सताने लगती है कि बीमार हो गए तो क्या होगा? कहां इलाज कराएंगे, बच्चे इलाज कराएंगे या नहीं कराएंगे? मैं सभी बुजुर्गों को आश्वासन देना चाहता हूं कि आपका यह बेटा जब तक जिंदा है, आपका मैं अच्छे से अच्छा इलाज कराउंगा। चाहे मुझे सरकारी अस्पताल में इलाज कराना पड़े या प्राइवेट अस्पताल में कराना पड़े। उसका सारा खर्च दिल्ली सरकार देगी।

पानी के गलत बिल माफ की गारंटी

*24 घंटे साफ पानी, यमुना की सफाई और यूरोपियन स्टैंडर्ड की सड़कें बनाने की गारंटी।

डॉक्टर अंबेडकर स्कॉलरशिप योजना

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि बाबा साहब डॉ. अंबेडकर कोलंबिया यूनिवर्सिटी और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से पीएचडी करके आए थे। उस जमाने में इतने गरीब होने के बावजूद पीएचडी करके आए

थे। जब वो लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में पढ़ रहे थे, तब उनके पास पैसे खत्म हो गया। उन्हें पढ़ाई छोड़कर घर वापस आना पड़ा। यहां आकर उन्होंने पैसे का इंतजाम किया और फिर अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए वापस गए। हम नहीं चाहते हैं कि किसी भी दलित समाज के बच्चे का सपना पैसा नहीं होने के कारण पूरा न हो। डॉ. अंबेडकर स्कॉलरशिप योजना लागू की जाएगी। दलित समाज का कोई भी बच्चा विदेश की किसी भी यूनिवर्सिटी में एडमिशन ले ले। उसके आने-जाने, रहने, खाने समेत सारा खर्चा दिल्ली सरकार देगी।

छात्रों को गारंटी

महिलाओं की तरह ही आम आदमी पार्टी की सरकार छात्रों को भी दिल्ली सरकार की बसों में सफर बिल्कुल मुफ्त करेगी और मेट्रो के किराए में 50 फीसद की रियायत दी जाएगी।

पुजारी-ग्रंथी सम्मान योजना

किराएदारों को फ्री बिजली-पानी*

दिल्ली में हमने बिजली और पानी के बिल जीरो कर दिए। लेकिन कई किराएदारों को इसका फायदा नहीं मिल रहा है। हमारी सरकार बनने के बाद हम ऐसा सिस्टम लेकर आएंगे कि किराएदारों को भी फ्री बिजली और पानी का फायदा मिले।

सीवर की समस्या होगी दूर

दिल्ली में कई जगह सीवर की समस्या है। कई जगह सीवर चोंक हैं। जब मैं जेल में था। इन्होंने कई जगह सीवर में सीमेंट के कट्टे और बोल्डर डाल दिए। ताकि जनता को तकलीफ हो और जनता केजरीवाल से नाराज हो जाए। इन्होंने वोट लेने के लिए दिल्ली की जनता को परेशान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अब जहां-जहां सीवर ब्लॉक हैं और ओवर फ्लो कर रहे हैं, उसे हम सरकार बनने के बाद 15 दिन में ही ठीक करा देंगे। लेकिन जो सीवर की लाइनें पुरानी हो गई हैं उन्हें अगले एक डेढ़ साल के अंदर बदल देंगे।

राशन कार्ड की गारंटी

कई साल से नए राशन कार्ड नहीं बने हैं। गरीबों को फ्री राशन का फायदा नहीं मिल रहा है। सरकार बनने के बाद नए राशन कार्ड बनाए जाएंगे ताकि गरीबों को फ्री राशन का फायदा मिल सके। अपने नए राशन कार्ड बनवा सकें।

ऑटो वालों को गारंटी

ऑटो, टैक्सी और ई-रिक्शा वाले भाइयों की बेटी की शादी के लिए एक लाख रुपए दिल्ली सरकार की तरफ से दिया जाएगा। उनके बच्चों को फ्री कोचिंग दी जाएगी। उनको 10 लाख रुपए का लाइफ और 5 लाख रुपए का स्वास्थ्य बीमा दिया जाएगा।

आरडब्ल्यूए को गारंटी

दिल्ली के अंदर कानून-व्यवस्था को दुरुस्त रखने की जिम्मेदारी भाजपा की केंद्र सरकार की थी। लेकिन आज दिल्ली की कानून-व्यवस्था बहुत खराब हो गई है। लोगों मे त्राहि-त्राहि मची है। लोग डर के भय में जी रहे हैं।

हमने अपनी तरफ से जो कर सकते थे, वो किया। दिल्ली में सीसीटीवी कैमरे और स्ट्रीट लाइट्स लगवाई। इस दिशा में एक कदम और बढ़ा रहे हैं। दिल्ली की सभी आरडब्ल्यूए को प्राइवेट सिक्युरिटी गार्ड रखने के लिए दिल्ली सरकार की तरफ से पैसा दिया जाएगा।

*भाजपा ने एलान कर दिया है कि उसकी सरकार बनी तो फ्री बिजली, पानी, शिक्षा, मोहल्ला क्लीनिक, महिलाओं की बस यात्रा बंद कर देगी।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि अगर आपने कमल का बटन दबा दिया तो 25 हजार रुपए एक-एक परिवार के उपर अतिरिक्त खर्चा हर महीने आने लगेगा। मुझे नहीं लगता है कि हर गरीब परिवार 25 हजार रुपए का अतिरिक्त बोझ उठाने के लिए सक्षम है। मुझे लगता है कि कई गरीब परिवारों को दिल्ली छोड़कर जाना पड़ेगा। यहीं मिडिल क्लास, जिसकी 80 हजार से 1 लाख रुपए महीने की सैलरी है, उसके लिए भी 25 हजार रुपए का अतिरिक्त बोझ कोई छोटा बोझ नहीं है। वह भी इसको बर्दाश्त नहीं कर पाएगा। दिल्ली में लंबे-लंबे पावर कट लगने चालू हो जाएंगे। झाड़ू को हम घर की लक्ष्मी मानते हैं। अगर आप झाड़ू का बटन दबाते हैं तो सीधे-सीधे आपको 25 हजार रुपए महीने का फायदा हो रहा है।

वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया ने महिला सम्मान योजना लागू होने में 'सिर्फ आठ दिन और' का काउंडाउन को खोला

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के बाद महिलाओं को 2100 रुपए प्रतिमाह देने की गारंटी पर सोमवार को डबल मोहर लग गई। यह मोहर खुद ''आप'' के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने अपना हस्ताक्षर करके लगाई। इसके साथ ही महिलाओं के खाते में 2100 रुपए आने का काउंडाउन शुरू हो गया है। पार्टी का मेनिफेस्टो जारी करने के बाद अरविंद केजरीवाल ने महिला सम्मान योजना को लेकर अलग से गारंटी पत्र जारी किया और कहा कि मैं अरविंद केजरीवाल यह गारंटी देता हूं कि आम आदमी पार्टी की सरकार बनते ही सबसे पहले अपनी माताओं और बहनों के लिए महिला सम्मान राशि योजना शुरू करूंगा।

इस दौरान आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया ने महिला सम्मान योजना लागू होने में 'सिर्फ आठ दिन और' का काउंडान खोला। उन्होंने कहा कि दिल्ली वालों के लिए केजरीवाल की 15 गारंटी है। इसमें चुनाव के बाद महिलाओं के लिए 2100 रुपए प्रति महीने की गारंटी पर काम शुरू होगा। अरविंद केजरीवाल ने खुद लिख कर-साइन कर के गारंटी दी। केजरीवाल की गारंटियों से दिल्ली के हर परिवार को कम से कम 25,000 की बचत होगी।

वहीं, वरिष्ठ नेता व दिल्ली सरकार में मंत्री सौरभ भारद्वाज ने कहा कि कीचड़ में कमल खिलता है और झाड़ू से कीचड़ साफ होता है। इसलिए झाड़ू का बटन दबाएंगे तो 25 हजार रुपए हर महीने बचाएंगे। उन्होंने कहा कि हमने जब गारंटी शब्द का इस्तेमाल किया तो गारंटी शब्द चुरा लिया गया। अब जो अरविंद केजरीवाल ने गारंटी पर गारंटी देने का काम किया हैं, इसे भी साल भर में दूसरी पार्टियां चुरा लेंगी। दिल्ली चुनाव में अब चंद दिन ही बचे हैं। पांच फरवरी को मतदान होना है। महिलाओं को 2100 रुपए मिलने का समय भी अब दूर नहीं है। अब काउंडाउन शुरू हो गया है। महिलाओं को बेसब्री से इंतजार है कि ये सात-आठ दिन जल्द से जल्द पूरे हों और उनको 2100 रुपए मिलने चालू हों।

रोहिणी में कार्यालय उद्घाटन से पहले हवन व पूजा का हुआ आयोजन

सुषमा रानी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ड्रीम प्रोजेक्ट है गुजरात स्थित धोलेरा, जो विश्व की सबसे बड़ी स्मार्ट सिटी बनने जा रही है। इसी धोलेरा स्मार्ट सिटी पर काम कर रही ब्रोघर रियलिटी के दिल्ली कार्यालय का शनिवार को रोहिणी में उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के गुजरात इकाई के प्रमुख भी उपस्थित हुए।

कार्यालय के उदघाटन से पहले यहां पर हिंदू रीति रिवाज के अनुसार हवन यज्ञ भी किया गया। इस अवसर पर स्थानीय भाजपा विधायक विजेंद्र गुप्ता भी मुख्य रूप से उपस्थित हुए. इस अवसर पर ब्रोघर के दिल्ली ऑफिस में पार्टनर हर्ष ज़िन्दगर और संजय गोयल के अलावा ब्रोघर के संस्थापक डा. अक्षय कुमार और रोहिणी फेडरेशन के अध्यक्ष आर्य मुनि उपस्थित रहे। इस कार्यालय का मकसद है दिल्ली के लोगों को सही और सटीक प्रोपर्टी बिना किसी ठगी के उपलब्ध कराया जा सके। आज जिस तरह से लोगों के साथ स्मार्ट सिटी के नाम पर धोखाधड़ी हो रही है तो ऐसे समय में लोगों को रोजाना की धोखाधड़ी से बचाया जा सके। उपस्थित लोगों ने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि दिल्ली में कंपनी का ऑफिस होने से अब दिल्ली बैठे धोलेरा में इन्वेस्ट किया जा सकेगा।

वरिष्ठ फोटो पत्रकार एम. रामिश के निधन पर हज मंजिल में शोक सभा का आयोजन

नई दिल्ली (मुख्य संवाददाता सुषमा रानी)

वरिष्ठ फोटो पत्रकार एम. रामिश के आकस्मिक निधन पर वर्किंग जर्नलिस्ट क्लब की ओर से हज मंजिल में शोक सभा का आयोजन किया गया। दिल्ली स्टेट हज कमेटी स्टाफ वेलफेयर एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से आयोजित इस सभा में विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने हिस्सा लिया। दिल्ली हज कमेटी की अध्यक्ष कौसर जहां ने कहा कि एम. रामिश की उम्र ज्यादा नहीं थी, लेकिन हम सब अल्लाह के फैसले का सामना करने को मजबूर हैं। हम भी इस दुख की घड़ी में उनके परिवार के साथ हैं। उन्होंने कहा कि उनकी मौत की खबर सुनकर उन्हें सदमा लगा, क्योंकि हज कमेटी में अक्सर उनसे मुलाकात होती रहती थी। वह एक खुशमिजाज और जिंदादिल इंसान थे। सामाजिक कार्यकर्ता सईद खान ने बताया कि एम. रामिश के साथ उनका रिश्ता 1991 से था। हम दोनों ज़ाकिर हुसैन कॉलेज में पढ़ते थे। शुरू से ही वे अपने हंसमुख स्वभाव और अपनी बात खुलकर कहने के लिए जाने जाते थे। उनसे जुड़ी हमारी कई यादें हैं। 1991 के समय में रामिश हमारे शिक्षक थे वह एक मित्र था, और हमने उसे 2025 में भी इसी तरह पाया।

डॉ. नफीस कुरैशी ने बताया कि एम. रामिश की नजीबाबाद में जमीन थी, जिसे कुछ लोगों ने फर्जी कागजात बनाकर बेच दिया। इस सिलसिले में उन्हें नजीबाबाद जाना पड़ता था। मेरे कुछ रिश्तेदार नजीबाबाद से हैं, इसलिए रामिश ने मुझसे भी इस बारे में बात की थी। मैं सभी लोगों से अनुरोध करता हूं कि वे इस जमीन को वापस दिलाने में मदद करें। कुछ करें, क्योंकि उन्होंने इसे अपने पास रख लिया था। के बच्चों को अगर यह जमीन मिल जाती है तो यह उनके लिए बहुत बड़ी मदद होगी। एडवोकेट रईस अहमद ने बताया कि रामिश की मौत के समय वह दिल्ली से बाहर थे। मैं उनसे अक्सर फोन पर बात करता था। वह अपने काम के प्रति बहुत गंभीर व्यक्ति थे। उनकी मृत्यु के बाद, मैंने वर्किंग जर्नलिस्ट एक्ट 1955के दिशा-निर्देश प्रकाशित किए और उन्हें कई पत्रकारों के साथ साझा किया। इसका उद्देश्य यह है कि यदि डीआईपी, पीआईबी या सिर्फ कामकाजी पत्रकारों में से किसी की अचानक मृत्यु हो जाती है, तो परिवार को सरकार से पांच लाख रुपये का मुआवजा मिल सकता है। इस संबंध में हम कानूनी सहायता प्रदान करने के लिए हमेशा तैयार हैं यदि ज़रूरत हो तो। प्रसिद्ध कवि इकबाल फिरदौसी ने एम. रामिश को सच्ची श्रद्धांजलि दी। वर्किंग जर्नलिस्ट्स क्लब के अध्यक्ष फरजान कुरैशी ने कहा कि क्लब की स्थापना पत्रकारों के साथ दुर्घटना होने पर उनके परिवारों को सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। दिल्ली स्टेट उर्स कमेटी के अध्यक्ष एफआई इस्माइली, क्राइम रिपोर्टर अमीर अहमद राजा, मनोज टंडन, हाजी रियाजुद्दीन, सादिक शेरवानी, जमील अंजुम देहलवी, एडवोकेट असलम अहमद, मुहम्मद मुस्तकीम खान, जावेद रहमानी, मुहम्मद ओवैस आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। एम. रामिश के साथ उनके रिश्ते के बारे में बताया। एम. रामिश के तीन भाई और दो बेटे भी शोक सभा में शामिल हुए। अंत में, मस्जिद एंग्लो-अरबी स्कूल के इमाम और खतीब मौलाना मुहम्मद कासिम कासमी ने सामूहिक प्रार्थना का नेतृत्व किया। महत्वपूर्ण प्रतिभागियों में दिल्ली राज्य हज समिति के कार्यकारी अधिकारी डॉ. अशफाक अहमद आरिफी, उप कार्यकारी अधिकारी मोहसिन अली, मुहम्मद नईम मलिक, नईम अंसारी, शमसुद्दीन, शफी देहलवी, डॉ. सगीर अख्तर, मुहम्मद शमीम, असद मियां, नवाबुद्दीन, इरफान अहमद, एम शामिल हैं। नफीस, गुलजार अहमद और शाहिद गंगोही के नाम उल्लेखनीय हैं। युवा पत्रकार सैयद आइनिन अली हक ने बैठक का संचालन किया।

भाजपा के तमाम दुष्प्रचार के बाद भी दिल्ली में आ रही है आप: मोहम्मद जियाउल्लाह

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली। दिल्ली उर्दू अकादमी के गवर्निंग काउंसिल मेंबर मो. जियाउल्लाह ने कहा कि उर्दू भारत की दूसरी जुबान के साथ-साथ आम बोलचाल की भी भाषा है, परंतु इसको सशक्त बनाने के लिए सरकार भरपूर ध्यान नहीं दे रही है ।जबकि भारतीय इतिहास एवं संस्कृति से इसका गहरा संबंध है ।उन्होंने कहा कि इस जुबान को किसी खास संप्रदाय से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए ।मोहम्मद जियाउल्लाह ने कहा कि सीबीएसई में उर्दू जुबान को खत्म कर दिया गया जबकि इस जुबान में भी छात्र तालीम लेते हैं ।उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार ने उर्दू जुबान के संवर्धन के लिए काफी काम किया है, परंतु केंद्र एवं कई राज्यों की सरकारें इसे तरजीह नहीं दे रही है। उन्होंने कहा की उर्दू जुबान के टाइपिस्ट,ट्रांसलेटर आदि के काफी पद खाली हैं ।इन पदों को भरा जाना चाहिए ।आम आदमी पार्टी के समर्पित कार्यकर्ता के रूप में भी मोहम्मद जियाउल्लाह अपनी जिम्मेदारियां का निर्वाह कर रहे हैं ।उन्होंने बताया की आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल के विजन,कार्यशाली से दिल्ली का काफी विकास हुआ है तथा जनता को कई तरह की राहते मिली है। सभी के लिए सहज सुलभ शिक्षा हेतु 25% बजट आप सरकार प्रदान कर रही है ।वही हायर एजुकेशन के क्षेत्र में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर योजना के तहत बेहतर शिक्षा प्रदान किया जा रहा है ।दिल्ली की सरकारी स्कूलों के 300 छात्रों ने आईआईटी, जेई में सफलता प्राप्त कर यह साबित कर दिया है कि दिल्ली सरकार शिक्षा के क्षेत्र में काफी बेहतर काम कर रही है, वहीं मोहल्ला क्लीनिक के माध्यम से लोगों को बेहतर स्वास्थ्य लाभ मिल रहा है। बसों में महिलाओं को निशुल्क यात्रा, राशन की पर्याप्त व्यवस्था, स्कूलों में फीस की बढ़ोतरी पर अंकुश आदि ऐसे काम है जो शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम के रूप में देखा जा सकता है। उन्होंने कहा कि दिल्ली का और तेजी से विकास हो सकता था, परंतु केंद्र सरकार दिल्ली के साथ सौतेला व्यवहार करती है। वहीं उपराज्यपाल के माध्यम से विभिन्न तरह के विकास में रुकावट डालकर विकास कार्यों को बाधित किया गया। दिल्ली की प्रबुद्ध जनता इन तमाम विषयों को जान रही है। यही कारण है की 5 फरवरी को होने वाले विधानसभा चुनाव में दिल्ली की जनता आम आदमी पार्टी को मतदान कर फिर से दिल्ली में आप की सरकार बनाएगी।

सांसद राघव चड्ढा ने रोहिणी विधानसभा क्षेत्र में आप प्रत्याशी प्रदीप मित्तल के समर्थन में किया शानदार रोड शो

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नईदिल्ली, आम आदमी पार्टी (AAP) के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने सोमवार को रोहिणी विधानसभा क्षेत्र में आम आदमी पार्टी के प्रत्याशी प्रदीप मित्तल के लिए एक भव्य रोड शो किया। रोड शो में रोहिणी विधानसभा क्षेत्र के युवाओं और महिलाओं ने जमकर हिस्सा लिया। इस मौके पर उन्होंने दिल्ली में आम आदमी पार्टी की प्रचंड जीत का भरोसा जताया।

रोड शो के दौरान, राघव चड्ढा ने क्षेत्र की जनता से संवाद करते हुए कहा, "जिस तरह से लोग अपने घरों और दुकानों से बाहर आकर हमारा स्वागत कर रहे हैं, प्यार बरसा रहे हैं और हमें आशीर्वाद दे रहे हैं, वह दिल को छू लेने वाला है"। "एक बार फिर दिल्ली में आम आदमी पार्टी जबरदस्त बहुमत के साथ जीतने जा रही है।"

जनता का अभूतपूर्व समर्थन

रोड शो के दौरान सड़कों पर भारी संख्या में रोहिणी विधानसभा क्षेत्र के नागरिक मौजूद थे। लोग अपने घरों और दुकानों से बाहर आकर पार्टी के समर्थन में हाथ हिलाते और 'फिर लाएंगे केजरीवाल' के नारे लगाते दिखे। सांसद राघव चड्ढा ने क्षेत्र की जनता को धन्यवाद देते हुए कहा, "आप सभी का यह समर्थन हमारे लिए हौसला बढ़ाने वाला है। आप ही हमारी ताकत हैं। इस बार भी हम आपके समर्थन और विश्वास से दिल्ली को और बेहतर बनाने का संकल्प लेते हैं।"

आप की उपलब्धियों का किया ज़िक्र

राघव चड्ढा ने अपने संबोधन में AAP सरकार की उपलब्धियों का भी ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार ने दिल्ली में शिक्षा, स्वास्थ्य और बिजली-पानी जैसे बुनियादी क्षेत्रों में अभूतपूर्व काम किया है। उन्होंने कहा, "हमने सरकारी स्कूलों की हालत सुधारी, मोहल्ला क्लीनिक के जरिए सभी को मुफ्त और बेहतरीन इलाज दिया, और दिल्ली को सस्ती बिजली और मुफ्त पानी देकर हर परिवार का जीवन आसान बनाया है। यह आपकी ही पार्टी है, जो आपकी जरूरतों और परेशानियों को समझती है और उन्हें हल करने का काम करती है।

युवाओं और महिलाओं के लिए खास संदेश

रोड शो में बड़ी संख्या में युवा और महिलाएं भी शामिल हुए। सांसद राघव चड्ढा ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा, "हमारा मकसद है कि हर युवा को रोजगार मिले, हर परिवार में खुशहाली आए।" रोड शो में 'आप' के झंडे हाथों में लिए युवा कार्यकर्ताओं का जोश देखने लायक था। इस दौरान कई युवाओं ने सांसद राघव चड्ढा के साथ सेल्फी भी ली और उनके साथ बातचीत की।

महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण पर बात करते हुए उन्होंने कहा, "दिल्ली में महिलाओं के लिए सुरक्षित माहौल बनाना और उनके लिए नए अवसर पैदा करना हमारी प्राथमिकता है। हमने आपकी सुरक्षा के लिए हर गली में सीसीटीवी लगवाए हैं।"

दिल्ली में फिर से होगी आप की सरकार: चड्ढा

रोड शो के अंत में सांसद राघव चड्ढा ने जनता को धन्यवाद दिया और कहा कि यह चुनाव सिर्फ एक पार्टी का नहीं, बल्कि हर दिल्लीवासी की उम्मीदों और अधिकारों का चुनाव है। उन्होंने कहा, "यह जीत आपकी होगी, आपके सपनों की होगी। AAP फिर से सरकार बनाएगी और दिल्ली को नई ऊंचाइयों पर लेकर जाएगी।

रोहिणी फेडरेशन ऑफ सी.जी.एच.एस एवं अखिल रोहिणी जाट सभा ने किया कार्यक्रम का आयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर रोहिणी फेडरेशन ऑफ सी.जी.एच.एस एवं अखिल रोहिणी जाट सभा द्वारा संयुक्त रूप से एक भव्य कार्यक्रम आयोजित कर रोहिणी से भाजपा प्रत्याशी विजेन्द्र गुप्ता का शानदार स्वागत किया और आगामी चुनावों में जीत के लिए अग्रिम शुभकामनाएं दीं।

यह कार्यक्रम सांवरिया टेंट, जापानी पार्क, सैक्टर-10, रोहिणी में आयोजित किया गया जिसमें लगभग एक हजार से भी अधिक व्यक्ति सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम में सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में विशेष सहयोग के लिए विजेंद्र गुप्ता और अनुराग ठाकुर द्वारा ब्रोघर रियल्टी प्राइवेट लिमिटेड से डॉ. अक्षय कुमार, श्री बांके बिहारी कैटरर्स से जीवन अरोड़ा एवं सांवरिया टेंट से अभिषेक जैन और नरेश शर्मा को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।रोहिणी फेडरेशन ऑफ सी.जी.एच.एस से सर्वश्री ओ.पी. मल्होत्रा, आर्य मुनि, डा. एस.एल. सागर, नेपाल सिंह, प्रदीप हंस, करमबीर खत्री, हर्ष जिन्दगर, रामावतार नैय्यर, ज्योति शर्मा, नीरज ढींगरा, राजबीर राणा, विक्रम ठाकरान, राजेंद्र शर्मा, गजेंद्र यादव, सतीश सागर, संगीता शर्मा और डॉली मुटरेजा उपस्थित रहे।

रोहिणी जाट सभा से आर्य मुनि, करमबीर खत्री, निर्मला चहल और राजेश छिल्लर उपस्थित थे।

व्यापारियों को इस बार इस बजट से काफी उम्मीद है इस बार बजट में व्यापारियों के लिए विशेष पैकेज की घोषणा की जानी चाहिए साथ ही कम ब्याज में जल्दी से जल्दी लोन मिले जिससे जिससे छोटे व्यापारी को आने वाले समय में व्यापार करने में आसानी हो। जीएसटी व इनकम टैक्स देने वाले व्यापारियों के लिए बीमा योजना की भी घोषणा हो। जीएसटी में भी सुधार किया जाना चाहिए जिसमें व्यापार करने में आसानी हो।

परमजीत सिंह पम्मा (चेयरमैन) फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड एसोसिएशन

भगवान शिव ने माता पार्वती को बताए थे जीवन के ये पांच रहस्य आप भी जाने

भगवान शिव ने देवी पार्वती को समय-समय पर कई ज्ञान की बातें बताई हैं। जिनमें मनुष्य के सामाजिक जीवन से लेकर पारिवारिक और वैवाहिक जीवन की बातें शामिल हैं। भगवान शिव ने देवी पार्वती को 5 ऐसी बातें बताई थीं जो हर मनुष्य के लिए उपयोगी हैं, जिन्हें जानकर उनका पालन हर किसी को करना ही चाहिए-

1. क्या है सबसे बड़ा धर्म और सबसे बड़ा पाप देवी पार्वती के पूछने पर भगवान शिव ने उन्हें मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा धर्म और अधर्म मानी जाने वाली बात के बारे में बताया है। भगवान शंकर कहते है-

श्लोक- नास्ति सत्यात् परो नानृतात् पातकं परम्।।

अर्थात- मनुष्य के लिए सबसे बड़ा धर्म है सत्य बोलना या सत्य का साथ देना और सबसे बड़ा अधर्म है असत्य बोलना या उसका साथ देना। इसलिए हर किसी को अपने मन, अपनी बातें और अपने कामों से हमेशा उन्हीं को शामिल करना चाहिए, जिनमें सच्चाई हो, क्योंकि इससे बड़ा कोई धर्म है ही नहीं। असत्य कहना या किसी भी तरह से झूठ का साथ देना मनुष्य की बर्बादी का कारण बन सकता है।

2. काम करने के साथ इस एक और बात का रखें ध्यान

श्लोक- आत्मसाक्षी भवेन्नित्यमात्मनुस्तु शुभाशुभे।

अर्थात- मनुष्य को अपने हर काम का साक्षी यानी गवाह खुद ही बनना चाहिए, चाहे फिर वह अच्छा काम करे या बुरा। उसे कभी भी ये नहीं सोचना चाहिए कि उसके कर्मों को कोई नहीं देख रहा है। कई लोगों के मन में गलत काम करते समय यही भाव मन में होता है कि उन्हें कोई नहीं देख रहा और इसी वजह से वे बिना किसी भी डर के पाप कर्म करते जाते हैं, लेकिन सच्चाई कुछ और ही होती है। मनुष्य अपने सभी कर्मों का साक्षी खुद ही होता है। अगर मनुष्य हमेशा यह एक भाव मन में रखेगा तो वह कोई भी पाप कर्म करने से खुद ही खुद को रोक लेगा।

3. कभी न करें ये तीन काम करने की इच्छा

श्लोक- मनसा कर्मणा वाचा न च काङ्क्षेत पातकम्।

अर्थात- आगे भगवान शिव कहते है कि- किसी भी मनुष्य को मन, वाणी और कर्मों से पाप करने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि मनुष्य जैसा काम करता है, उसे वैसा फल भोगना ही पड़ता है। यानि मनुष्य को अपने मन में ऐसी कोई बात नहीं आने देना चाहिए, जो धर्म-ग्रंथों के अनुसार पाप मानी जाए। न अपने मुंह से कोई ऐसी बात निकालनी चाहिए और न ही ऐसा कोई काम करना चाहिए, जिससे दूसरों को कोई परेशानी या दुख पहुंचे। पाप कर्म करने से मनुष्य को न सिर्फ जीवित होते हुए इसके परिणाम भोगना पड़ते हैं बल्कि मारने के बाद नरक में भी यातनाएं झेलना पड़ती हैं।

4. सफल होने के लिए ध्यान रखें ये एक बात संसार में हर मनुष्य को किसी न किसी मनुष्य, वस्तु या परिस्थित से आसक्ति यानि लगाव होता ही है। लगाव और मोह का ऐसा जाल होता है, जिससे छूट पाना बहुत ही मुश्किल होता है। इससे छुटकारा पाए बिना मनुष्य की सफलता मुमकिन नहीं होती, इसलिए भगवान शिव ने इससे बचने का एक उपाय बताया है।

श्लोक-दोषदर्शी भवेत्तत्र यत्र स्नेहः प्रवर्तते।।।।। अनिष्टेनान्वितं पश्चेद् यथा क्षिप्रं विरज्यते।।

अर्थात- भगवान शिव कहते हैं कि- मनुष्य को जिस भी व्यक्ति या परिस्थित से लगाव हो रहा हो, जो कि उसकी सफलता में रुकावट बन रही हो, मनुष्य को उसमें दोष ढूंढ़ना शुरू कर देना चाहिए। सोचना चाहिए कि यह कुछ पल का लगाव हमारी सफलता का बाधक बन रहा है। ऐसा करने से धीरे-धीरे मनुष्य लगाव और मोह के जाल से छूट जाएगा और अपने सभी कामों में सफलता पाने लगेगा।

5. यह एक बात समझ लेंगे तो नहीं करना पड़ेगा दुखों का सामना

श्लोक-नास्ति तृष्णासमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्।

सर्वान् कामान् परित्यज्य ब्रह्मभूयाय कल्पते।।

अर्थात- आगे भगवान शिव मनुष्यो को एक चेतावनी देते हुए कहते हैं कि- मनुष्य की तृष्णा यानि इच्छाओं से बड़ा कोई दुःख नहीं होता और इन्हें छोड़ देने से बड़ा कोई सुख नहीं है। मनुष्य का अपने मन पर वश नहीं होता। हर किसी के मन में कई अनावश्यक इच्छाएं होती हैं और यही इच्छाएं मनुष्य के दुःखों का कारण बनती हैं। जरुरी है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं में अंतर समझे और फिर अनावश्यक इच्छाओं का त्याग करके शांत मन से जीवन बिताएं।

76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर फेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया व्यापार मंडल ने किया ध्वजारोहण

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा, संजय सागर सिंह। 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर फेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया व्यापार मंडल द्वारा ख़न्दरी स्थित सीपी पैलेस होटल में प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सोबती और ज़िला अध्यक्ष राजेश खुराना द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

फेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया व्यापार मंडल के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सोबती ने कहा कि गणतंत्र दिवस का यह दिन देश भर में विभिन्न संस्कृति, धर्म, जाति और भाषाओं से जुड़े लोगों के बीच एकता और भाईचारे का प्रतीक है। गणतंत्र दिवस पर्व भारत के संविधान की महत्वपूर्णता और इसकी सशक्तता को मनाने का अवसर है। भारतीय संविधान ने ही देश की आंतरिक व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने एवं देश में जनता के शासन की व्यवस्था नागरिकों के अधिकारों और उनके कर्तव्यों की स्पष्ट और मानवता की नींव रखी। यह दिन हमें हमारे कर्तव्यों का बोध कराता है और भारतीय गणतंत्र की महानता और अखंडता को बनाए रखने के लिए हम सभी को संकल्पित करता है।

फेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया व्यापार मंडल के ज़िला अध्यक्ष राजेश खुराना ने कहा कि यह पावन दिवस हमारे देश के संविधान की गौरवशाली स्थापना का प्रतीक ही नहीं बल्कि यह हमें एकता के सूत्र में बांधने वाली भारतीयता का उत्सव भी है। इस विशेष वर्षगांठ पर, चलिए हम अपनी मातृभूमि से यह वादा करें कि हम उसके गौरवमयी धरोहर को समृद्ध करने और उसे संजोने के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, करेंगे, और इसे और भी बेहतर बनाएंगे। श्री खुराना ने आगे कहा, इस शुभ अवसर पर मैं देश की एकता और अखंडता की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों और वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इस अवसर पर धर्मवीर कौशिक, प्रेम शर्मा, अनुज सिंघल, राजेंद्र सिंह कुक्कू, मुकेश, अमन आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

मतदाता दिवस पर जिलाधिकारी आगरा ने मतदान की दिलाई शपथ

उ. प्र. अपराध निरोधक समिति के पदाधिकारीयों को किया सम्मानित – डॉ उमेश शर्मा चेयरमैन, उ.प्र.अपराध निरोधक समिति

आगरा, संजय साग़र सिंह। 'वोट जैसा कुछ नही, वोट जरूर डालेंगे हम' की थीम पर 15 वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर आरबीएस कॉलेज ऑडिटोरियम में भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन में जिलाधिकारी आगरा ने उ प्र अपराध निरोधक समिति के चेयरमैन व सदस्यों को उत्कृष्ट सहयोग के सम्मानित किया और मताधिकार का प्रयोग करने संबंधी सभी को शपथ दिलाई गई। पहली बार मतदाता बने नवीन युवा मतदाताओं को एपिक कार्ड दिया गया।

जिलाधिकारी आगरा अरविंद मल्लप्पा बंगारी ने मत एवं मताधिकार के महत्व को बताते हुए कहा कि मतदाता सूची में नाम जरूर शामिल कराएं, मतदाता बनना गौरव की बात है। 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके छात्र-छात्रांए खुद भी मतदाता बनें और दूसरे लोगों को भी मतदाता बनने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने आगे कहा कि एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते नए मतदाता के रूप में अपना नाम सूची में शामिल कराने के लिए स्वयं रूचि लेकर मोबाइल से फार्म-6 भरकर अपने मतदान केन्द्र से सम्बन्धित बीएलओ, पदाभिहित अधिकारी या मतदाता पंजीकरण केन्द्र पर जरूरी अभिलेखों के साथ जमा कर सकते है।

उ.प्र. अपराध निरोधक समिति के चेयरमैन डॉ उमेश शर्मा ने मतदान के महत्व को उजागर करते हुए कहा, ₹यह आयोजन बहुत ही महत्वपूर्ण था, क्योंकि यह ना केवल मतदान के महत्व को उजागर करता है, बल्कि नए मतदाताओं को मताधिकार के प्रति जागरूक करने में भी मदद करता है। जिलाधिकारी अरविंद मल्लप्पा बंगारी महोदय का यह संदेश खासतौर पर युवाओं के लिए प्रेरणादायक था, जिससे वे चुनावी प्रक्रिया का हिस्सा बन सकें। साथ ही, उ. प्र. अपराध निरोधक समिति के पदाधिकारियों का सम्मान करना भी एक सराहनीय कदम था, क्योंकि इससे उनका मनोबल बढ़ेगा और वे समाज में और अधिक योगदान देंगे। इस तरह के कार्यक्रमों से चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी और समावेशी बनाने में मदद मिलती है।

इस दौरान कार्यक्रम में अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे जुबेर बेग, उपजिला मजिस्ट्रेट तहसील सदर सचिन राजपूत, एसीएम रतन वर्मा, अभय सिंह, तहसीलदार सदर अविचल प्रताप सिंह, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी मो. शबाहत आदि मौजूद रहे। वहीं, पीयूष तोमर आगरा जॉन अध्यक्ष, प्रशांत लवानिया सदस्य विधि परामर्श, महावीर अग्रवाल वाइस चेयरमैन (प्रशासन), वीरेंद्र शर्मा वाइस चेयरमैन, गिरीश पाठक प्रांतीय सचिव, ग़ोविन्द शर्मा प्रदेश सह सचिव, अंकुश भारद्वाज संयुक्त सचिव, अपराध निवारण सोमदत्त कौशिक, संयुक्त सचिव पुलिस पब्लिक समन्वय, डॉ जयवीर सिंह संगठन सचिव पश्चिमी जोन, मूलचंद शर्मा मंडल सचिव मेरठ मंडल, अमित जैन-ज़ोन स आगरा, शुभम माहेश्वरी-सदस्य प्रदेश कमेटी, सिद्धांत गुप्ता-मंडल सचिव सहारनपुर मंडल आदि का विशेष सहयोग रहा।

ग्रह, वास्तु, अरिष्ट शांति का सरल उपाय – विष्णुसहस्रनाम

'विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र' विधिवत अनुष्ठान करने से सभी ग्रह, नक्षत्र, वास्तु दोषों की शांति होती हैं। विद्याप्राप्ति, स्वास्थ्य एवं नौकरी-व्यवसाय में खूब लाभ होता हैं।कोर्ट-कचहरी तथा अन्य शत्रुपीड़ा की समस्याओं में भी खूब लाभ होता है। इस अनुष्ठान को करके गर्भाधान करने पर घर में पुण्यात्माएँ आती हैं। सगर्भावस्था के दौरान पति-पत्नी तथा कुटुम्बीजनों को इसका पाठ करना चाहिए।

अनुष्ठान-विधिः सर्वप्रथम एक चौकी पर सफेद कपड़ा बिछाएँ।उस पर थोड़े चावल रख दें।उसके ऊपर ताँबे का छोटा कलश पानी भर के रखें। उसमें कमल का फूल रखें। कमल का फूल बिल्कुल ही अनुपलब्ध हो तो उसमें अडूसे का फूल रखें। कलश के समीप एक फल रखें। तत्पश्चात ताँबे के कलश पर मानसिक रूप से चारों वेदों की स्थापना कर 'विष्णुसहस्रनाम' स्तोत्र का सात बार पाठ सम्भव हो तो प्रातः काल एक ही बैठक में करें तथा एक बार उसकी फलप्राप्ति पढ़ें। इस प्रकार सात या इक्कीस दिन तक करें।रोज फूल एवं फल बदलें और पिछले दिन वाला फूल चौबीस घंटे तक अपनी पुस्तकों, दफ्तर, तिजोरी अथवा अन्य महत्त्वपूर्ण जगहों पर रखें व बाद में जमीन में गाड़ दें। चावल के दाने रोज एक पात्र में एकत्र करें तथा अनुष्ठान के अंत में उन्हें पकाकर गाय को खिला दें या प्रसाद रूप में बाँट दें। अनुष्ठान के अंतिम दिन भगवान को हलवे का भोग लगायें।

यह अनुष्ठान हो सके तो शुक्ल पक्ष में शुरू करें। संकटकाल में कभी भी शुरू कर सकते हैं। स्त्रियों को यदि अनुष्ठान के बीच में मासिक धर्म के दिन आते हों तो उन दिनों में अनुष्ठान बंद करके बाद में फिर से शुरू करना चाहिए। जितने दिन अनुष्ठान हुआ था, उससे आगे के दिन गिनें।

टिप्पणीः शास्त्र कहते हैं कि प्रदोषकाल (निषिद्धकाल) में मैथुन नहीं करना चाहिए। जिन लोगों का गर्भाधान जानकारी के अभाव में अनुचित काल में हुआ है, उन्हें अपनी संतान की ग्रहशांति के लिए यह अनुष्ठान करना चाहिए।

गर्भाधान के लिए अनुचित कालः संध्या का समय, जन्मदिन, पूर्णिमा, अमावस्या, प्रतिपदा, अष्टमी, एकादशी, प्रदोष (त्रयोदशी के दिन सूर्यास्त के निकट का काल), चतुर्दशी, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, उत्तरायण, जन्माष्टमी, रामनवमी, होली, शिवरात्रि, नवरात्रि आदि पर्वों (दो तिथियों का समन्वय काल) एवं मासिक धर्म के प्रथम पाँच दिनों में तो मैथुन सर्वथा वर्जित हैं।

शास्त्रवर्णित मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करना चाहिए, नहीं तो आसुरी, कुसंस्कारी अथवा विकलांग संतान उत्पन्न होती हैं। यदि संतान नहीं हुई तो दम्पत्ति को कोई खतरनाक बीमारी हो जाती है।

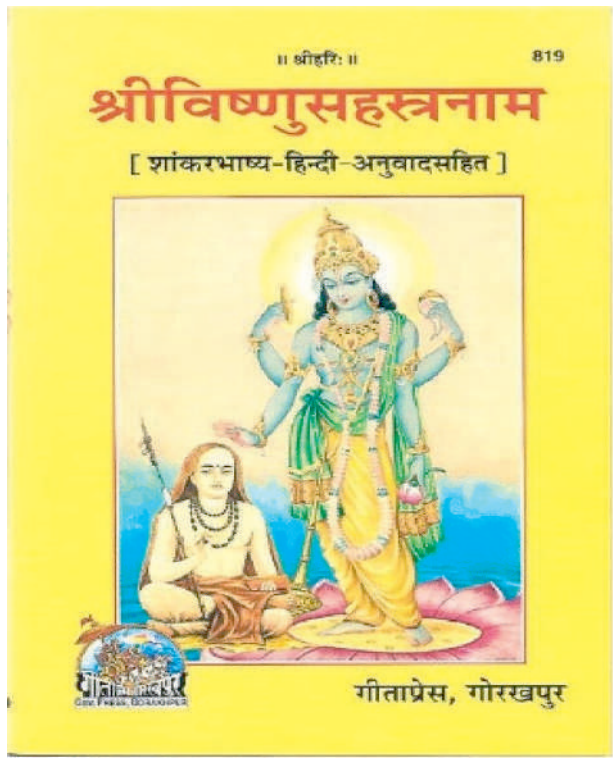

भगवान_शिव के 51 रहस्य

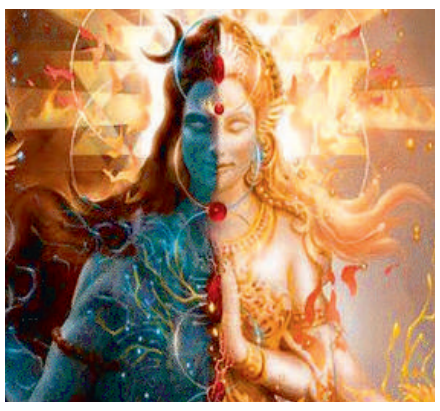

भगवान शिव अर्थात पार्वती के पति शंकर जिन्हें महादेव, भोलेनाथ, आदिनाथ आदि कहा जाता है।

1. आदिनाथ शिव सर्वप्रथम शिव ने ही धरती पर जीवन के प्रचार-प्रसार का प्रयास किया इसलिए उन्हें 'आदिदेव' भी कहा जाता है। 'आदि' का अर्थ प्रारंभ। आदिनाथ होने के कारण उनका एक नाम 'आदिश' भी है।

2. शिव के अस्त्र-शस्त्र शिव का धनुष पिनाक, चक्र भवरेंदु और सुदर्शन, अस्त्र पाशुपतास्त्र और शस्त्र त्रिशूल है। उक्त सभी का उन्होंने ही निर्माण किया था।

3. भगवान शिव का नाग शिव के गले में जो नाग लिपटा रहता है उसका नाम वासुकि है। वासुकि के बड़े भाई का नाम शेषनाग है।

4. शिव की अर्द्धांगिनी शिव की पहली पत्नी सती ने ही अगले जन्म में पार्वती के रूप में जन्म लिया और वही उमा, उर्मि, काली कही गई हैं।

5. शिव के पुत्र शिव के प्रमुख 6 पुत्र हैं- गणेश, कार्तिकेय, सुकेश, जलंधर, अयप्पा और भूमा। सभी के जन्म की कथा रोचक है।

6. शिव के शिष्य शिव के 7 शिष्य हैं जिन्हें प्रारंभिक सप्तऋषि माना गया है। इन ऋषियों ने ही शिव के ज्ञान को संपूर्ण धरती पर प्रचारित किया जिसके चलते भिन्न-भिन्न धर्म और संस्कृतियों की उत्पत्ति हुई। शिव ने ही गुरु और शिष्य परंपरा की शुरुआत की थी। शिव के शिष्य हैं- बृहस्पति, विशालाक्ष, शुक्र, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज इसके अलावा 8वें गौरशिरस मुनि भी थे।

7. शिव के गण शिव के गणों में भैरव, वीरभद्र, मणिभद्र, चंदिस, नंदी, श्रृंगी, भृगिरिटी, शैल, गोकर्ण, घंटाकर्ण, जय और विजय प्रमुख हैं। इसके अलावा, पिशाच, दैत्य और नाग-नागिन, पशुओं को भी शिव का गण माना जाता है।

8. शिव पंचायत भगवान सूर्य, गणपति, देवी, रुद्र और विष्णु ये शिव पंचायत कहलाते हैं।

9. शिव के द्वारपाल नंदी, स्कंद, रिटी, वृषभ, भृंगी, गणेश, उमा-महेश्वर और महाकाल।

10. शिव पार्षद जिस तरह जय और विजय विष्णु के पार्षद हैं उसी तरह बाण, रावण, चंड, नंदी, भृंगी आदि शिव के पार्षद हैं।

भारत के 30 रोचक तथ्य

1. दिमाग का खेल शतरंज भारत ने दुनिया को एक उपहार के रूप में दिया है। गुप्त साम्राज्य के दौरान लगभग 1500 साल पहले इसका आविष्कार किया गया था। इसे प्राम्भ में चतुरंग के नाम से जाना जाता है।

2. पूरे विश्व को स्वस्थ और तंदुरुस्त बनाने वाले योग का जन्म ईसा पूर्व 5 वीं शताब्दी के लगभग प्राचीन भारत में हुआ था। आज समस्त संसार के लोग योग के द्वारा अपने शरीर को स्वस्थ बना रहे है।

3. समस्त विश्व में सबसे ज्यादा वर्षा वाली जगह भारत के मेघालय में स्थित "मॉनसिनराम" नामक गांव है। यह स्थान चेरापूंजी से 15 कि.मी. दूर है, इस गांव में हर साल औसतन 11,872 mm बारिश होती है, जिसकी वजह से यह धरती का सबसे नम स्थान भी है।

4. भारत एक विशाल राष्ट्र है, यहाँ सैकड़ो भाषाएं और बोलियाँ बोली जाती है, भारत में सबसे ज्यादा हिंदी भाषा का प्रयोग किया जाता है, किन्तु हिंदी के बाद सबसे ज्यादा अंग्रेजी का प्रयोग किया जाता है। भारत विश्व का 24वां देश हैं जहां सबसे ज्यादा अंग्रेजी बोली जाती है।

5. दुनिया के प्राचीन शहरों में से एक 'काशी' पवित्र गंगा नदी के तट पर स्थित है, बनारस या वाराणसी का पवित्र शहर सनातन काल से ही बसा हुवा है, इतिहासकारों की माने तो तक़रीबन 3-4 हजार वर्ष पहले यह शहर बसा था। किन्तु हिंदू पौराणिक कथाओं और ग्रंथो के अनुसार यह प्राचीन शहर भगवान शिव ने लगभग 5000 वर्ष पहले इस पवित्र शहर की नींव रखी थी।

6. सर्वधर्म एकता और मानवता का सन्देश देते हुए भारत में स्वर्ण मंदिर में नस्ल, धर्म और वर्ग को किनारे करके प्रतिदिन 50 हजार से ज्यादा आगंतुकों को शाकाहारी भोजन कराता है। क्यों है ना, गर्व करने वाली बात।

7. भारत में प्राचीन काल से ही में जल संचयन को महत्व दिया जाता था, और यहाँ जल संचयन की एक विकसित प्रणाली थी। इसके उदाहरण के रूप में आपको 'कल्लनई बांध' मिलता है, यह बांध दुनिया में चौथा सबसे पुराना बांध है। जो अभी भी सुचारु रूप से सही सलामत और कार्य कर रहा है। मौर्य सम्राटों के द्वारा 320 ई.पू. 'सुदर्शन' नामक एक कृत्रिम झील का निर्माण भी करवाया गया था। "चित्तौगढ़ किले" में करीब 50 हजार लोगो के लिए एक वर्ष तक पानी उपलब्ध रहे इतने तालाब और बावड़ियाँ बनी है।

8. प्राचीन खगोलशास्त्री और गणितज्ञ आर्यभट्ट ने सौर मंडल एवं चन्द्रमा की गणना को 499 ई में ही समझा दिया था। उनकी पुस्तक आर्यभटीय में विस्तार से सभी का उल्लेख है, और अन्य खगोलीय पिंडों की गति को दर्शाया गया है।

9. वर्तमान में तो शिक्षा के कई जरिये और संस्थाए बन गई है, लेकिन भारत में करीब 700 ईसा पूर्व ही विश्व का पहला विश्वविद्यालय 'तक्षिला' बन गया था, जहाँ पढ़ने के लिए हजारों छात्रों विश्व भर से आते थे, और भारतीय संस्कृति की शिक्षा प्राप्त कर विश्व के कोने-कोने में फैलाते थे।

10. विश्व में सबसे बड़ा धार्मिक मेला "महाकुम्भ" भी भारत में ही लगता है, वर्ष 2011 में कुंभ मेले में 75 मिलियन से ज्यादा तीर्थयात्रियों जमा हुए थे। कहते है की यह संख्या इतनी अधिक थी की अंतरिक्ष से भी कुम्भ की भीड़ दिखाई दे रही थी।

11. भारत दुनिया का पहला देश है, जिसके 'चीनी' उत्पादन और उसके शुद्विकरण की तकनीक का विकास किया था। बाद में विश्व के कई दूसरे देशों ने यहाँ आकर इस तकनीक को सीखा है।

12. "Magnetic Hill' लद्दाख की एक पहाड़ी है, जहाँ पर गुरुत्वाकर्षण के विपरीत चीजें होती है। इस जगह पर आप सड़क पर अपनी गाड़ी रोकिये और उसको न्यूट्रल कर दे, आप देखंगे की आपकी गाड़ी ऊंचाई की तरफ जाने लगेगी सिवाय ढलान में जाने के।

13. विश्व का सबसे ऊँचा पूल 'बेलीपुल' भारत के हिमाचल पर्वत में द्रास और सुरु नदियों के बीच लद्दाख घाटी में बना हुवा है। इसका निर्माण अगस्त 1982 में भारतीय सेना द्वारा किया गया था।

14. विशाल देश भारत में डाकघरों का बहुत बड़ा जाल मौजूद है, भारत में करीब 1,55,015 डाकघर बने हुवे है। इनमे सबसे अलग डाकघर श्रीनगर की डल झील में बना डाकखाना है। यह एक बड़ी नाव में तैरता हुवा डाकखाना है इसकी शुरुआत साल 2011 में की गई थी।

15. प्राचीनकाल से ही भारत में महिला सशक्तिकरण को विशेष महत्त्व दिया जाता था, यहाँ महिलाएं खुलकर उन सभी मुद्दों पर बात कर सकती थी, जिन्हे आज हम सार्वजानिक रूप में बात करने से कतराते है। भारत में महिलाओं को अपना जीवन साथी चुनने "स्वयंवर" का अधिकार प्राप्त था।

16. भारत के आश्चर्यो में देखें तो यहाँ साप-सीढ़ी का खेल, सतरंज यानि चतुरंग, बटन का अविष्कार, शैंपू की खोज, संख्या पाई की गणना, हीरा उत्पादन, शून्य की खोज, बीजगणित की गणना, त्रिकोणमिति के साथ-साथ चंद्रमा पर पानी की मौजूदगी को दर्शाना। क्यों आपको गर्व नहीं है कि आप भारतीय हो।

17. प्राचीन भारत की सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की तीन सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक थी, यह सभ्यता 1300 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में थी। यहाँ के लोगों का बौद्धिक विकास बहुत अधिक था। इस सभ्यता के लोगों का जीवन स्तर उच्च कोटि का था। उन्होंने कपास से रुई निकाली, जस्ता खनिज निकाला, स्टेपवेल (बावडिया) का निर्माण किया, सीवरेज और ड्रेनेज सिस्टम का उच्च स्तर पर निर्माण करवाया था।

18. आज क्रिकेट का दीवाना कौन नहीं है, हिमाचल प्रदेश की एक जगह "चायल" यह ऐसा स्थान है, यहाँ पर 2,444 मीटर के ऐल्टिट्यूड पर यह पूरी दुनिया का सबसे ऊंचा क्रिकेट ग्राउंड बना है। जहां एक मिलिट्री स्कूल भी है। इसे साल 1893 में बनाया गया था।

19. आज हम जगह-जगह मार्बल और ग्रेनाइट के महल देखते है, बड़े-बड़े किलों में इनकी कारीगरी देखते है, जो देखने में अतिसुन्दर प्रतीत होते है, लेकिन विश्व में पहला ग्रेनाइट का मंदिर ब्रिहदेश्वरा मंदिर तमिलनाडु में 11वीं शताब्दी में बना था। इसके निर्माण में 5 वर्ष लगे थे।

20. वर्तमान में डाक्टरों ने चिकित्सा पद्दति में बहुत महारथ प्राप्त कर ली है, किन्तु भारत मे 2600 वर्ष ई. पू. ही शल्य चिकित्सा का अविष्कार हो चूका था, इसका प्रमाण प्राचीन ग्रंथो में मिलता है, कि हमारे चिकित्सक मोतियाबिंद, हड्डी जोड़ने और पथरी निकलने जैसी जटिल शल्य चिकित्सा करते थे, क्यों है ना अद्भुत।

21. देशभक्ति और देश सेवा की भावना हर भारतीय के मन में कूट-कूट कर भरी है, लेकिन उत्तरप्रदेश के जौनपुर जिले में एक छोटा सा गाँव है माधोपट्टी उस गाँव के लोगों ने इस भावना को अपना सबकुछ माना है, क्योंकि यकीन मानिये इस छोटे से गाँव में 50 से अधिक IAS-IPS और अन्य सिविल सेवा में अधिकारी है।

22. वर्तमान में हर कोई पैसों के पीछे दीवाना है, लेकिन क्या आपको है की जब भारत आजाद हुआ और हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद की नियुक्ति हुई थीं, तब उन्होंने अपनी तनख्वाह का आधा भाग ही लिया था, उन्होंने कहा की उनको इतने ही पैसो की आवश्यकता है। उनके 12 वर्ष के लम्बे कार्यकाल के अंत में उन्होंने अपनी आय का केवल 25% लिया था। उस समय राष्ट्रपति का वेतन 10,000 रूपए होता था।

23. आज हम बड़े-बड़े जहाज देखते है, इनका आकार इतना बड़ा भी होता है की पूरा एक गाँव समा जाये, किन्तु विश्व में पहली बार नौकायन की कला का अविष्कार भारत में लगभग 6000 हजार वर्ष पूर्व महान सिंधु घाटी सभ्यता में हुआ था।

24. भारत सनातन काल से ही समृद्ध देश रहा है, पूरी दुनिया के कुल सोने का 11 प्रतिशत सोना तो भारत की महिलाओं के पास ही है।

25. आज हम चन्द्रमा और मंगल ग्रह तक की यात्रा कर चुके है, लेकिन भारत के इसरो ने अपना पहला रॉकेट 1963 में त्रिवेंद्रम की एक जगह थुम्बा से अपना पहला रॉकेट लाँच किया है, रॉकेट को साईकिल पर इस लांचिग पेड तक लाया गया था। आज हम इस को विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर के नाम से जानते है।

26. इंटरनेट की इस दुनिया में कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर का बोलबाला है, इसी प्रतिस्पर्धा में आज भारत भी किसी अन्य देश से पीछे नहीं है, आज भारत करीब 90 से अधिक देशों में अपने यहाँ बने सॉफ्टवेयर निर्यात करता है।

27. भारत हमेशा से ही कृषि प्रधान और पशु-पालन में अग्रणी देश रहा है, पूरे विश्व में सबसे अधिक दुग्ध उत्पादन भारत में ही होता है, यहाँ करीब 150 मिलियन टन दुग्ध उत्पादन होता है, जो कि एक विश्व रिकार्ड है, जो 2015 में बना था।

28. राजस्थान के बीकानेर जिले में एक स्थान है, ₹देशनोक₹ यहाँ स्थित "श्री करणी माता" के मंदिर में आपको सैकड़ो चूहे देखने को मिल जायेंगे, इनकी संख्या इतनी ज्यादा है की आप मंदिर में पैर उठा के नहीं चल सकते हे, इसलिए इस प्रसिद्ध मंदिर को चूहों का मंदिर भी कहाँ जाता है।

29. भारत का विज्ञान प्राचीन काल से अच्छा रहा है, उसके कुछ उदहारण आपको ऊपर पढ़ने को मिल जायेंगे लेकिन इसका जीता जागता उदहारण है, जयपुर में बना जंतर-मंतर यह दुनिया की सबसे बड़ी पत्थर से बनी वैधशाला है, इसका निर्माण सवाई जयसिंह जी ने 1727 ई. में करवाया था। यह वैधशाला सटीक मौसम और ग्रहों की स्थिति को दर्शाती है।

30. उत्तर भारत में बहुत से किले और गढ़ बने हुए है, यह सभी किले भारत की उत्तरी सीमा की लुटेरों से रक्षा करते थे। इन्ही किलों में से एक है राजस्थान के जैसलमेर में बना हुआ "सोनार किला" इस किले का आकार बहुत बड़ा है, सबसे बड़ी बात यह किला आज भी पूर्ण रूप से बसावट को लिए हुए है, समस्त जैसलमेर शहर की 25% आबादी आज भी इस किले में रहती है।

हीमोग्लोबिन बढ़ाने के उपाय

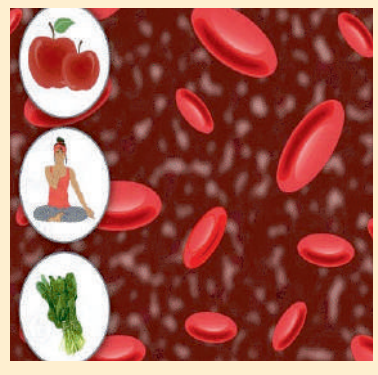

अमरूद- अमरूद जितना ज्यादा पका हुआ होगा, उतना ही पौष्टिक होगा। पके अमरूद को खाने से शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी नहीं होती। इसलिए महिलाओं के लिए यह और भी लाभदायक हो जाता है।

आम- आम खाने से हमारे शरीर में रक्ति अधिक मात्रा में बनता है, एनीमिया में यह लाभकारी होता है।

सेब- सेब एनीमिया जैसी बीमारी में लाभकारी होता है। सेब खाने से शरीर में हीमोग्लोबिन बनता है।

अंगूर- अंगूर में भरपूर मात्रा में आयरन पाया जाता है। जो शरीर में हीमोग्लोबिन बनाता है, और हीमोग्लोबिन की कमी संबंधी बीमारियों को ठीक करने में सहायक होता है।

चुकन्दर- चुकन्दर से प्राप्त उच्च गुणवत्ता का लोह तत्व रक्त में हीमोग्लोबिन का निर्माण व लाल रक्तकणों की सक्रियता के लिए बेहद प्रभावशाली है। खून की कमी यानी एनीमिया की शिकार महिलाओं के लिए चुकंदर रामबाण के समान है। चुकन्दर के अलावा चुकन्दर की हरी पत्तियों का सेवन भी बेहद लाभदायी है। इन पत्तियों में तीन गुना लौह तत्व अधिक होता है।

तुलसी- तुलसी रक्त की कमी को कम करने के लिए रामबाण है। तुलसी के नियमित सेवन से शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ती है।

सब्जियां- शरीर में हीमोग्लोबिन बढ़ाने के लिए ज्यादा से ज्यादा हरी सब्जियां को अपने भोजन में शामिल करना चाहिए। हरी सब्जियों में हीमोग्लोबिन बढ़ाने वाले तत्व ज्यादा मात्रा में पाये जाते है।

तिल- तिल हमारे शरीर में हीमोग्लोबिन की मात्रा को बढ़ाता है। तिल खाने से रक्त अल्पता की बीमारी ठीक होती है।

जेएसडब्ल्यू एमजी मैजेस्टर में मिल सकते हैं ये बेहतरीन फीचर्स, इंजन भी होगा दमदार, जानें कब तक हो सकती है

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG की ओर से भारतीय बाजार में जल्द ही नई दमदार एसयूवी को लाने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की ओर से MG Majestor के तौर पर डी प्लस सेगमेंट में SUV को लाया जाएगा। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया जा सकता है। कितना दमदार इंजन इसमें दिया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में कई बेहतरीन Cars and SUVs को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से Auto Expo 2025 के दौरान डी प्लस सेगमेंट में नई एसयूवी के तौर पर MG Majestor को पेश किया है। इस एसयूवी को कब तक लॉन्च किया जा सकता है। किस तरह के फीचर्स के साथ इसे लाया जा सकता है। कितना दमदार इंजन दिया जा सकता है। किस कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

जल्द लॉन्च होगी JSW MG Majestor SUV

JSW MG की ओर से MG Majestor को डी प्लस एसयूवी सेगमेंट में जल्द ही लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की ओर से इस एसयूवी को औपचारिक तौर पर भारतीय बाजार में 17 से 22 जनवरी 2025 के बीच हुए Auto Expo 2025 के दौरान पेश किया गया है।

JSW MG Majestor Features

एमजी मोटर्स की ओर से Majestor में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा सकता है। इसमें एलईडी हेडलाइट्स, एलईडी डीआरएल, फ्रंट में बड़ी ग्रिल, 20 इंच अलॉय व्हील्स, ड्यूल टोन एक्सटीरियर, 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, ड्यूल टोन इंटीरियर, टाइप सी यूएसबी चार्जिंग पोर्ट, पुश बटन स्टॉर्ट/स्टॉप, पैनोरमिक सनरूफ, वायरलैस चार्जिंग पोर्ट, ड्राइविंग के लिए कई मोड्स जैसे कई फीचर्स को ऑफर किया जा सकता है। इसके साथ ही इसमें सेफ्टी के लिए छह एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, हिल असिस्ट, बीएसडी, एलसीए, आरसीटीए, डीओडब्ल्यू, सेल्फ एडेप्टिव क्रूजिंग और ADAS जैसे फीचर्स को दिया जा सकता है।

JSW MG Majestor Engine

कंपनी की ओर से इसे पेट्रोल और डीजल दोनों ही इंजन के विकल्प के साथ पेश किया जा सकता है। एमजी इसमें दो लीटर की क्षमता का टर्बो पेट्रोल और डीजल इंजन दे सकती है। पेट्रोल इंजन से इसे 184 किलोवाट की पावर और 410 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। इसके अलावा टर्बो डीजल इंजन से एसयूवी को 160 किलोवाट की पावर और 500 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलेगा। दोनों ही इंजन के साथ एसयूवी में 4X4 की सुविधा को भी दिया जाएगा। पेट्रोल इंजन के साथ इसकी टॉप स्पीड 190 और डीजल इंजन वेरिएंट की टॉप स्पीड 175 KMPH तक हो सकती है। इसमें कंपनी की ओर से 8स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन को दिया जा सकता है।

JSW MG Majestor Price

एमजी की ओर से अभी इस एसयूवी को भारत में सिर्फ पेश किया गया है। लेकिन लॉन्च के समय ही कीमतों की सही जानकारी मिल पाएगी। JSW MG Majestor की संभावित एक्स शोरूम कीमत 40 से 50 लाख रुपये के बीच हो सकती है।

किसे मिलेगी चुनौती

JSW MG की ओर से Majestor को D+ SUV सेगमेंट में लॉन्च किया जाएगा। उम्मीद की जा रही है कि इस एसयूवी को June-July 2025 के आस-पास भारत में औपचारिक तौर पर लॉन्च किया जा सकता है। जिसके बाद इसका सीधा मुकाबला Toyota Fortuner Legender जैसी एसयूवी के साथ होगा।

इस साल भारत में लॉन्च हो सकती हैं पांच सब फोर मीटर एसयूवी, एक इलेक्ट्रिक गाड़ी भी शामिल

परिवहन विशेष न्यूज

2025 भारत में एसयूवी सेगमेंट के वाहनों की मांग में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। जिसे देखते हुए वाहन निर्माताओं की ओर से कई एसयूवी को बाजार में पेश और लॉन्च किया जा रहा है। साल 2025 के दौरान किस कंपनी की ओर से कौन सी Sub 4 mtr SUV को भारत में लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में एसयूवी सेगमेंट में जिन वाहनों को सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है उनमें सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट सबसे ऊपर है। इस सेगमेंट में सभी निर्माताओं की ओर से अपने उत्पाद ऑफर किए जाते हैं। साल 2025 में सब फोर मीटर कॉम्पैक्ट एसयूवी सेगमेंट में कौन सी पांच एसयूवी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Kia Syros होगी लॉन्च

किआ की ओर से सिरोस को सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में पेश किया गया है। लेकिन इसकी कीमतों की घोषणा जल्द की जाएगी। जिसके बाद इसे खरीदा जा सकेगा। कंपनी की ओर से इसमें कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया है। साथ ही इसमें पेट्रोल और डीजल इंजन के विकल्प को भी दिया गया है। फरवरी 2025 के पहले हफ्ते में इसके सभी छह वेरिएंट्स की कीमतों की घोषणा कर दी जाएगी।

Hyundai Venue New Generation

किआ की तरह हुंडई भी सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में वेन्यू को ऑफर करती है। सेगमेंट में कई नई एसयूवी आने के साथ ही अन्य कंपनियों की ओर से अपनी एसयूवी को अपडेट करने के कारण वेन्यू की नई जेनरेशन को लाना काफी जरूरी हो गया है। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि इस साल कंपनी की ओर से वेन्यू की नई जेनरेशन को लाया जा सकता है। जिसमें एक्सटीरियर से लेकर इंटीरियर तक कई बड़े बदलाव किए जा सकते हैं।

Tata Punch Facelift

टाटा की ओर से पंच एसयूवी को भी सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी इसके भी फेसलिफ्ट को लाने की तैयारी कर रही है। जिसे कई बार टेस्टिंग के दौरान भी देखा जा चुका है। इसमें भी कई कॉस्मैटिक बदलावों को किया जा सकता है।

Maruti Fronx Hybrid

मारुति की ओर से इस सेगमेंट में फ्रॉन्क्स को ऑफर किया जाता है। जानकारी के मुताबिक कंपनी की ओर से इस एसयूवी को हाइब्रिड तकनीक के साथ लाने की तैयारी की जा रही है। लॉन्च से पहले इसे हाल में ही टेस्टिंग के दौरान देखा गया है। इसके डिजाइन में ज्यादा बदलाव की संभावना नहीं है लेकिन इसमें नए इंजन के साथ हाइब्रिड तकनीक को दिया जाएगा।

Mahindra XUV 3XO EV

महिंद्रा की ओर से इस सेगमेंट में XUV 3XO को ICE के साथ लाया जाता है। कंपनी ने इस गाड़ी को अप्रैल 2024 में ही लॉन्च किया था। जिसके बाद से इसको काफी पसंद किया जा रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी इसके Electric वर्जन को इस साल भारत में लॉन्च कर सकती है।

जेएसडब्ल्यू एमजी कर रही बड़ी तैयारी, सिर्फ आई.सी.ई और ई.वी ही नहीं हाइब्रिड कारों को भी लाया जाएगा भारत

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG ने Auto Expo 2025 के दौरान कई कारों को पेश किया है। इसके साथ ही नई तकनीक वाली कुछ कारों को शोकेस भी किया है। जिनमें से कुछ को काफी जल्द लॉन्च किया जाएगा।

नई दिल्ली। ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से 17 से 22 जनवरी 2025 के दौरान आयोजित किए गए Auto Expo 2025 में तीन Cars and SUVs को पेश किया है। इसके अलावा कंपनी ने प्रीमियम डीलरशिप JSW MG Select को भी शोकेस किया है। भविष्य की कारों के साथ ही कंपनी की रणनीति पर JSW MG के चीफ ग्रोथ अधिकारी गौरव गुप्ता से Jagran.com ने खास बात की।

सवाल - JSW MG की ओर से जनवरी 2025 में कई वाहनों को पेश किया गया है। साथ ही JSW MG Select को भी लाया गया है। इसमें किन कारों को ऑफर किया जाएगा।

जवाब – एमजी सिलेक्ट कंपनी की लग्जरी सेगमेंट वेंचर है। क्योंकि भारत में लग्जरी सेगमेंट की भी तेजी मांग बढ़ रही है। इसके लिए नए उत्पादों के साथ ही बेहतरीन अनुभव, नए ब्रॉन्ड, नए वाहनों की जरुरत होगी, जिसमें अच्छी कीमत वाली कारों की भी मांग रहेगी। ऐसे में JSW MG की ओर से MG Select को लाया गया है। अप्रैल 2025 से देश के 12 शहरों से इसे शुरू किया जाएगा।

सवाल – एमजी की ओर से Cyberster और M9 को पेश कर दिया गया है, इनमें किस तरह की खासियत दी गई हैं।

जवाब – JSW MG Select से कंपनी JSW MG Cyberster को ऑफर करेगी, जो दुनिया की सबसे तेज रोडस्टर है। यह 3.2 सेकेंड में ही 0-100 किलोमीटर की स्पीड से चलाई जा सकती है। JSW MG Cyberster के अलावा JSW MG Select से JSW MG 9 को भी ऑफर किया जाएगा। यह एक लग्जरी एमपीवी है और अपने सेगमेंट की सबसे लंबी गाड़ी भी है। इसमें आराम के साथ ही तीसरी सीट में काफी जगह दी गई है। सीट में मसाज सहित कुछ बेहतरीन फीचर्स को दिया गया है।

सवाल – क्या कंपनी की प्राथमिकता EVs पर ज्यादा हो गई है और जिससे ICE सेगमेंट का पोर्टफोलियो प्रभावित हो सकता है।

जवाब – नहीं ऐसा नहीं है। हम ईवी के साथ ICE सेगमेंट पर भी ध्यान दे रहे हैं और बाजार की जरुरत को देखते हुए कारों को ला रहे हैं। Auto Expo 2025 में ही ICE सेगमेंट की JSW MG Majestor को पेश किया है। अब लोगों को प्रीमियम कारें ज्यादा पसंद आ रही हैं। ऐसे में अब D सेगमेंट के साथ ही D+ सेगमेंट में भी एसयूवी को ला रहे हैं। JSW MG Majestor से हम D+ सेगमेंट में एंट्री ले रहे हैं।

सवाल – JSW MG की ओर से भारत में Windsor को लाया गया है। जिसे बेहतरीन प्रतिक्रिया भी मिल रही है। ऐसे में भविष्य में और क्या योजनाएं हैं।

जवाब – कंपनी की कुल बिक्री में 70 फीसदी योगदान NEV शामिल हैं। भारत में ICE सेगमेंट भी काफी महत्वपूर्ण है और भविष्य में इस सेगमेंट में भी मांग लगातार जारी रहेगी। इसलिए हमारी कोशिश है कि हम EV के साथ ही ICE सेगमेंट के वाहनों को भी समय समय पर बाजार में लाते रहेंगे।

सवाल – अगले कुछ सालों में और किन कारों को भारतीय बाजार में देख सकते हैं। एक से दो सालों में और किन कारों को भारतीय बाजार में लाया जा सकता है।

जवाब – देखिए, उसके लिए थोड़ा इंतजार करना होगा। फिलहाल JSW MG Cyberster, M9 और Majestor को लाने की तैयारी की जा रही है। 2025 और 2026 के लिए भी और तैयारियां की जा रही हैं। जिनमें अलग-अलग स्टाइल, ईंधन, सेगमेंट में आगे भी कारों को भारत लाया जाएगा। ज्यादा फोकस NEV पर होगा, लेकिन ICE सेगमेंट में भी कारों को लाया जाएगा।

सवाल – ICE और EV सेगमेंट के अलावा हाइब्रिड सेगमेंट की कारों को भी भारत में पसंद किया जाता है। कंपनी की ओर से इस सेगमेंट के लिए क्या तैयारियां हैं।

जवाब – हाइब्रिड तकनीक वाली कारों पर एमजी की ओर से काम किया जा रहा है। ऑटो एक्सपो 2025 में एमजी की ओर से Plug-in Hybrid तकनीक वाली कारों को शोकेस किया है। भारत के लिए इस तकनीक वाली कारें सबसे बेहतर हो सकती हैं। जिसमें पेट्रोल इंजन के साथ ही बैटरी को भी दिया जाता है।

सवाल – JSW MG Select एक प्रीमियम डीलरशिप है। लेकिन किस तरह की कारों को इसके जरिए ऑफर किया जाएगा। क्या सिर्फ प्रीमियम कारें होंगी या फिर कम कीमत वाली कारों को भी इसके जरिए लाया जाएगा।

जवाब – JSW MG Select में सिर्फ खास कारों को ही ऑफर किया जाएगा। Select के जरिए उन कारों को ही ऑफर किया जाएगा जो काफी आर्कषक और हटकर होंगी। ऐसे में इनकी कीमत कम नहीं होगी लेकिन उनको अपने सेगमेंट में काफी आकर्षक दाम पर लाया जाएगा।

सवाल – एक वाहन निर्माता के तौर पर आपको Budget 2025 से क्या उम्मीदें हैं।

जवाब – सरकार की ओर से इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ाने के लिए काफी ज्यादा सपोर्ट दिया है। अन्य कंपनियां भी EV में काफी बेहतरीन विकल्प ला रही हैं, जिससे निश्चित तौर पर मुकाबला बढ़ेगा। इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी काफी काम किया जा रहा है। जिससे ईवी को बढ़ावा मिल पाएगा।

क्वालिटी, सर्विस, इंफ्रास्ट्रक्चर और तकनीक पर होंडा का फोकस, एक्टिवा ई और QC1 के लिए बनाई गई खास रणनीति

परिवहन विशेष न्यूज

एक्टिवा ई और क्यूसी1 के लिए होंडा की रणनीतिजापानी दो पहिया निर्माता Honda की ओर से जनवरी 2025 में Activa E और QC1 की कीमतों की घोषणा की गई है। दोनों स्कूटर्स को शुरुआत में चुनिंदा शहरों में उपलब्ध करवाया जाएगा। EV सेगमेंट के लिए HMSI की क्या रणनीति रहेगी। आने वाले महीनों में और किन वाहनों के EV वर्जन को लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में इलेक्ट्रिक दो पहिया वाहनों का बाजार लगातार बड़ा हो रहा है। जिसे देखते हुए कई निर्माताओं की ओर से नए उत्पादों को लॉन्च किया जा रहा है। इसी क्रम में जापानी दो पहिया निर्माता Honda की ओर से भी Honda Activa E और QC1 को ऑटो एक्सपो 2025 में लॉन्च किया गया है। दोनों स्कूटर के लॉन्च के बाद कंपनी की रणनीति क्या होगी, इस पर Jagran.com ने होंडा मोटरसाइकिल और स्कूटर इंडिया के सेल्स और मार्केटिंग डायरेक्टर योगेश माथुर से खास बात की।

सवाल – होंडा की ओर से जनवरी 2025 में ऑटो एक्सपो के दौरान Honda Activa E और QC1 की कीमतों की घोषणा की गई है। किस तरह से इनकी कीमतों को तय किया गया है। क्या अपने सेगमेंट के अन्य विकल्पों के मुकाबले इनकी कीमत ज्यादा नहीं है।

जवाब – किसी भी नए वाहन को बाजार में लॉन्च करते समय हमें कई बातों को ध्यान में रखना पड़ता है। जब हमने यह तय किया कि हम इलेक्ट्रिक टू व्हीलर सेगमेंट में अपने नए स्कूटर्स को लाएंगे तो हमारा लक्ष्य यह था कि हम सभी तरह के ग्राहकों की जरुरतों को पूरा कर पाएं। इस बात को ध्यान में रखते हुए हम फिक्स्ड बैटरी और स्वैपेबल बैटरी वाले स्कूटर्स को लाए।

सवाल – आज के समय में कई इलेक्ट्रिक स्कूटर्स की क्वालिटी और रीसेल सबसे बड़ी चिंता है। ऐसे में इन दोनों मुद्दों पर होंडा ने क्या काम किया है।

जवाब– जब हमने यूजर्स के सर्वे किए तो क्वालिटी सबसे बड़ी चिंता थी। साथ ही फिक्स्ड बैटरी वाले अन्य स्कूटर्स की कीमत तीन साल बाद काफी कम हो जाती है और खराबी आने पर बैटरी को बदलना भी महंगा होता है। इसके अलावा फिक्स बैटरी वाले स्कूटर को चार्ज करने में भी पांच से छह घंटे तक का समय लगता है। इस दौरान चार्जिंग पर ध्यान भी देना पड़ता है जिससे हादसा न हो जाए। इन बातों का ध्यान में रखकर ही हमने ऐसे प्रोडक्ट को डिजाइन किया जो इन सभी चिंताओं को दूर करे।

सवाल – कई निर्माताओं की ओर से सिर्फ स्कूटर्स की बिक्री की जाती है। आफ्टर सेल्स और सर्विस पर ग्राहकों को परेशानी होती है। ऐसे में होंडा किस तरह से सेल्स के साथ ही सर्विस पर ग्राहकों की चिंता दूरी करेगी।

जवाब – हमारी ओर से क्वालिटी, सर्विस सपोर्ट जैसे मार्चों के साथ ही आफ्टर सेल और सर्विस पर भी काफी काम किया गया है। मौजूदा समय में हमारे पास करीब 6500 टच पाइंट्स हैं जिनको अलग अलग फेज में अपडेट किया जाएगा। इसके कारण ही हम QC1 को फिलहाल छह शहरों में ही ला रहे हैं। ऐसा इसलिए किया जा रहा है क्योंकि हम चाहते हैं जिन शहरों में भी हम अपने इलेक्ट्रिक स्कूटर्स को उपलब्ध करवा रहे हैं वहां पर उनकी सर्विस और अन्य सपोर्ट को दिया जा सके, जिससे ग्राहकों को किसी भी तरह की परेशानी न हो। इसके लिए सर्विस सेंटर पर अलग से मैनपावर को लिया गया है और उनको अच्छी तरह से ट्रेनिंग भी दी गई है। साथ ही वर्कशॉप में इंफ्रास्ट्रक्चर को भी अपग्रेड किया गया है। बैटरी और स्कूटर की उम्र को भी बढ़ाने की कोशिश की गई है। जिस तरह ICE स्कूटर्स की उम्र और रिसेल होती है उसी तरह हमने ईवी के लिए सर्विस पैकेज की भी घोषणा की है। जिसमें हम केयर और केयर प्लस पैकेज दे रहे हैं। केयर प्लस पैकेज पांच साल के लिए होगा और अभी तक कोई भी इस तरह के पैकेज को ऑफर नहीं कर रहा। नए सेगमेंट में स्कूटर लॉन्च करने से पहले ही हम इस तरह के पैकेज को इसलिए ऑफर कर रहे हैं क्योंकि हमें अपने स्कूटर्स पर काफी ज्यादा भरोसा है।

सवाल – स्वैपेबल बैटरी वाली तकनीक के साथ एक्टिवा को लाया गया है। स्कूटर चलाते हुए रेंज की चिंता कैसे दूर की जाएगी।

जवाब – एक्टिवा ई काफी यूनिक कॉन्सेप्ट है। पेट्रोल पंप पर जाकर पेट्रोल भरवाने में जितना समय लगता है उससे भी कम समय में एक्टिवा ई की बैटरी को बदला जा सकता है, जिससे न तो ज्यादा समय खराब होगा और न ही रेंज की चिंता होगी। फुल चार्ज बैटरी से स्कूटर को 100 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है और फिर एक मिनट में बदलकर फिर से इतनी ही दूरी को तय किया जा सकेगा। बैटरी की उम्र की भी चिंता करने की जरुरत नहीं होगी।

सवाल – फिक्स और स्वैपेबल बैटरी वाले स्कूटर को लाने का क्या मकसद था। किस तरह के ग्राहकों के लिए कौन सा स्कूटर सबसे बेहतर हो सकता है।

जवाब – युवाओं के साथ ही कम बजट वाले ग्राहकों के लिए हम QC1 को लेकर आए हैं। जिसमें 26 लीटर के करीब का बूट स्पेस भी मिलता है। वहीं दूसरी ओर प्रीमियम स्कूटर के अनुभव के लिए हमारी ओर से Honda Activa E को लाया गया है।

सवाल – Honda Activa E को स्वैपेबल बैटरी के साथ लाया गया है और इसके लिए अलग से इंफ्रास्ट्रक्चर की जरुरत होगी। होंडा की ओर से इसके लिए क्या कदम उठाए गए हैं।

जवाब – होंडा एक्टिवा ई के लिए हमने शुरुआत में तीन शहरों को चुना है जिनमें बेंगलुरू है। जिनमें एक अप्रैल 2025 से दिल्ली और मुंबई को भी शामिल किया जाएगा। इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए हमारा लक्ष्य यह होगा कि हम हर पांच किलोमीटर में बैटरी स्टेशन को लगाएंगे। इस कारण हम अलग अलग फेज में इस स्कूटर को देश के अन्य शहरों में भी ऑफर करेंगे। फिलहाल बेंगलुरू में 80 से ज्यादा स्टेशन लगाए जा चुके हैं। मुंबई और दिल्ली में भी बैटरी स्टेशन को लगाया जा रहा है। हमारी प्राथमिकता पहले बैटरी स्टेशन लगाने की होगी और उसके बाद ही हम अन्य शहरों में विस्तार करेंगे।

सवाल – बैटरी स्टेशन को शहरों में कहां लगाया जा रहा है। जिससे भविष्य में ग्राहकों की जरुरत को पूरा किया जा सकता है।

जवाब – होंडा की ओर से हिंदुस्तान पेट्रोलियम, बेंगलुरू में नम्मा मेट्रो जैसे पार्टनर के साथ टाई-अप किया है। इसके अलावा हमारे खुद के नेटवर्क पर भी हम बैटरी स्टेशन को लगा रहे हैं।

सवाल – क्या आपको लगता है कि होंडा की ओर से इलेक्ट्रिक सेगमेंट में स्कूटर्स को देरी से लाया गया है। बाजार से आपकी क्या उम्मीदें हैं।

जवाब – ग्लोबल स्तर पर हमारा लक्ष्य कार्बन न्यूट्रेलिटी पर है। हम यह नहीं सोचते कि हम लेट हो गए हैं, बल्कि हमारा सोचना है कि हम सही समय पर इलेक्ट्रिक स्कूटर सेगमेंट में आए हैं। बाजार में जब जिसकी जरुरत होती है हम तभी वहां एंट्री करते हैं। इस समय हम अकेले ऐसे निर्माता हैं जिसके पास कई तरह के वाहन मौजूद हैं। हम पहले ऐसे निर्माता हैं जो फ्लेक्स फ्यूल वाली बाइक को बाजार में ऑफर कर रहे हैं। अन्य सभी की ओर से सिर्फ घोषणा ही की गई है। जब हमने ईवी की घोषणा की थी तब से हमारा लक्ष्य यह था कि हम सिर्फ फिक्स्ड बैटरी जैसी एक ही तकनीक की जगह स्वैपेबल बैटरी जैसी तकनीक को भी ऑफर करेंगे। हमारा लक्ष्य 2050 तक कार्बन न्यूट्रल होना है और उत्पाद के मद्देदेनजर हम 2040 तक सभी को अपग्रेड कर कार्बन न्यूट्रेलिटी को हासिल करेंगे।

सवाल – होंडा के पोर्टफोलियो में फिलहाल दो स्कूटर को इलेक्ट्रिक सेगमेंट में लाया गया है। क्या भविष्य में कंपनी की ओर से और वाहनों को भी इस सेगमेंट में लाया जा सकता है।

जवाब – सबसे पहले हमारी कोशिश यह है कि इलेक्ट्रिक सेगमेंट में Honda Activa E और Honda QC1 की स्थिति को बेहतर किया जाएगा। ग्राहकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरना ही हमारे लिए सबसे जरूरी है और उसके बाद कई और वाहनों को डेवलप किया जा रहा है जिनको बाद में लाया जाएगा।

सवाल – क्या भविष्य में फिक्स्ड बैटरी वाले वाहनों को लाया जाएगा या फिर स्वैपेबल बैटरी वाले वाहनों को भी कंपनी की ओर से लाया जा सकता है।

जवाब – हमारे पास दोनों तरह की तकनीक मौजूद है, जिनको Honda Activa E और QC1 में लाया गया है। ऐसे में भविष्य में उसी तकनीक के वाहनों को प्राथमिकता दी जाएगी जिसे ग्राहकों की ओर से ज्यादा पसंद किया जाएगा।

सवाल – क्या इस साल और उत्पादों को इलेक्ट्रिक सेगमेंट में लॉन्च किया जा सकता है।

जवाब - सबसे पहली कोशिश मौजूदा दोनों उत्पादों को ही स्टेबल करेंगे। जिसके बाद अन्य वाहनों को बाजार में लाया जाएगा।

सवाल - अभी एक्टिवा ई को स्वैपेबल बैटरी के साथ लाया गया है। क्या भविष्य में इसे फिक्स्ड बैटरी के साथ भी लॉन्च किया जा सकता है।

जवाब - एक्टिवा होंडा का सबसे बेहतरीन ब्रॉन्ड है। 2001 से ही इसे भारत में काफी पसंद किया गया है। फिलहाल हमारे पास दोनों तरह की तकनीक हैं। अगर भविष्य में ऐसी कोई जरुरत लगती है कि एक्टिवा को स्वैपेबल के साथ फिक्स्ड बैटरी के साथ लाया जाए तो ऐसा किया जा सकता है।

विजय गर्ग

मेहनत से जीवन

पिछले कुछ समय से काम के घंटे ज्यादा बढ़ाने के मसले पर उठे विवाद में मानवीय और न्यायपूर्ण दृष्टि से कई पहलू सामने आए। किसी के लिए काम के ज्यादा घंटे मुनाफा बढ़ाने का मसला है तो किसी के लिए जीवन में मानवीयता और मानवाधिकारों का सवाल अहम है। इससे इतर देखें तो घर-परिवार के बुजुर्ग अमूमन बच्चों का आलस्य दूर करने के लिए कहते सुने जाते रहे हैं कि जो जागेगा, सो पाएगा और जो सोएगा, सो खोएगा। किसी ने कभी नहीं कहा कि जीवन आसान है। सभी ने जीवन यात्रा को कठिन बताया है। लेकिन इंसान मेहनत से जरूर जरा आसान बना सकता हैं। दरअसल, जीवन एक अवसर है, एक संभावना है और एक छोटा-सा बीज भी है। बीज में छिपे हैं हजारों फल-फूल, जो प्रकट नहीं होते, अप्रकट रहते हैं । वे गहरी खोज या कड़ी मेहनत से ही हासिल हो पाते हैं । प्राप्त कर लेते हैं, तो जीवन धन्य हो जाता । असल में, योग्यताएं और मुकाम कर्म से पैदा होते हैं, जन्म से तो हर व्यक्ति शून्य होता । समूचे ब्रह्मांड में केवल एक ही वस्तु पर इंसान का नियंत्रण है, और वह है खुद । इसलिए इंसान जो भी चाहे, वह जरूर हासिल कर सकता है । गीतकार शैलेंद्र का लिखा पुराना फिल्मी गीत- 'मेहनतकश इंसान जाग उठा... वो मिट्टी सोना हो जाए, जिसमें हमारा हाथ लगे... राह के पर्वत बह जाएंगे, बहा के देख पसीना...' भी यही संदेश देता है कि पसीना बहाने से ही इंसान अपनी तरक्की और कामयाबी की राह प्रशस्त कर सकता है।

कबीर ने भी इसी बात को जरा अलग नजरिए से अपने एक दोहे में कहा है- 'धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय । माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ।' इसके मुताबिक, ।

मेहनत के बावजूद फल सब्र करने वालों को अपने तय समय पर ही मिलता है । इसीलिए कहा जाता है कि सब्र कभी मत खोना, छोटी-बड़ी हर कामयाबी वक्त मांगती है। मेहनत और सब्र का कोई 'शार्ट कट' या लघु मार्ग नहीं है। दूसरे शब्दों में, कुछ बनना है, तो वनवास भोगना ही पड़ेगा। घर की सुख- सुविधाओं में कोई राम नहीं बन सकता। कड़ी मेहनत जारी रखें, यही सफलता का असली मंत्र है और जीवन खुद-ब- खुद खुशहाल होता जाएगा। एक बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि आगे बढ़ने का रास्ता न तो आसान होता है, न ही छोटा और न ही जल्दी खत्म होने वाला होता है। जंगल में हिरण को जागते ही जी-जान से भागना पड़ता है, वरना शेर खा जाएगा।

उधर शेर जागता है, तो सोचता है कि नहीं दौड़ा, तो भूखा मर जाऊंगा। शेर हो या हिरण, भागना दोनों को पड़ता है। तमाम लोगों को जीवित रहने के लिए भागदौड़ और मेहनत करनी पड़ती है। भाग्य भी मेहनत करने वालों का ही साथ निभाता है । इसलिए मेहनत करते-करते अपने को इस कदर व्यस्त कर लेना चाहिए कि अन्य विचार मस्तिष्क में न आ सके ।

'तुम कर सकते हो ।' ये चंद शब्द बोल कर अभिभावक और शिक्षक अमूमन बच्चों में करने का आत्मविश्वास भरते हैं, क्योंकि आत्मविश्वासी होना ही मनचाहा हासिल करने की पहली सीढ़ी है। उल्लेखनीय है कि थामस अल्वा एडिसन अपनी स्कूली पढ़ाई में फिसड्डी थे। एक रोज शिक्षक ने उन्हें पत्र थमाया और कहा कि इसे अपनी मां को दे देना । पत्र पढ़ते-पढ़ते मां की आंखें डबडबा गईं। मां ने नन्हे एडिसन का हौसलाअफजाई करते हुए कहा कि मैडम ने लिखा है कि हमारे स्कूल में आपके बेटे के स्तर के काबिल शिक्षक नहीं हैं । इसलिए बेहतर है कि इसे अब आप स्वयं पढ़ाएं। सुन कर एडिसन भी खुश हुए और घर पर मां से ही पढ़ने-सीखने लगे । सालों बाद वे विख्यात आविष्कारक बन गए। बाद में उनकी मां चल बसीं। एक रोज वे अपनी मां के सामान को सहेज कर रख रहे थे कि वही पत्र उनके हाथ लगा। पत्र पढ़ा, तो उनके आंसू बह गए। दरअसल, उसमें लिखा था कि आपका बच्चा बौद्धिक तौर पर बहुत कमजोर है, 'इसलिए उसे स्कूल से निकाल दिया गया है । इससे जाहिर होता है कि हर इंसान में हर काम करने की बेशुमार संभावनाएं दबी रहती हैं।

कर्म करने से ही नतीजे तय होते हैं, इसलिए सदा उद्देश्यपूर्ण कार्य करते रहना चाहिए । इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। अमेरिका का 'एडवेंचरर' यानी साहसी योद्धा जान गोडार्ड किशोरावस्था में ही अपने सपने और लक्ष्य लिखने लगा । मसलन, एवरेस्ट पर चढ़ना, नील नदी तैर कर पार करना आदि । यों उसने सत्तावन लक्ष्य लिख लिए और उन्हें हासिल करने में जुट जाता। जब वह साठ साल का हुआ, तो उसने अपने लक्ष्यों का पन्ना खोला और जांच करने लगा कि क्या-क्या छूट गया है। वह अपना दर्ज किया ब्योरा देख कर चौकन्ना रह गया, क्योंकि उसने सत्तावन में से पचपन लक्ष्य पूर्ण कर लिए थे। लक्ष्य तो सभी तय करते हैं, लेकिन उन्हें हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करने वाले गिने-चुने ही होते हैं। जाहिर है, कोई काम अपने आप नहीं बन सकता। उसके साथ आखिरी दम तक जुटे और बने रहना पड़ता है । इसीलिए कहते हैं कि काम से प्यार जरूरी है। स्टीफन हाकिंग की राय में, 'जीवन कितना भी कठिन क्यों न लगे, आप हमेशा कुछ न कुछ कर सकते हैं और उसमें सफल हो सकते हैं।'

कुंभ देखो और कुंभ के अजूबे भी देखो

विजय गर्ग

यह रीलों और वीडियोज का कुंभ है। तरह-तरह के अजूबों का कुंभ है। कुंभ देखो और कुंभ के अजूबे देखो और उनकी और नयी रील बनाओ, वीडियो बनाओ। पहले लोग अपनी नादानी और नासमझी में यह मान लेते थे कि कुंभ मेला सिर्फ दो जुड़वां भाइयों के वहां जाकर बिछुड़ने के लिए ही होता है ताकि एक अच्छी-सी फिल्म बनायी जा सके। वैसे तो हमारे बेहद प्यारे दोस्त कवि ने 'कुंभ में छूटी औरतें' नाम से एक बड़ी शानदार कविता भी लिखी है।

लेकिन यह गंभीर रचनाओं और पीड़ाओं पर चर्चा करने का अवसर नहीं है। बल्कि अब तो लोग अध्यात्म पर भी कहां चर्चा कर रहे हैं। बस रील और वीडियो बना रहे हैं। बल्कि सच तो यह है कि इधर मामला जिस तरह से एक फिल्म बनाने से आगे निकल कर लाखों- लाख रीलें और वीडियो बनाने तक पहुंच गया है, उससे यही लगता है कि कुंभ मेले ने भी देश की तरह से ही काफी तरक्की कर ली है। फिल्म छोड़ो, अब तो कुंभ मेला सिर्फ रीलें बनाने के लिए ही हो रहा है।

टीवी चैनल वाले हांफ रहे हैं, यूट्यूबर्स दौड़ रहे हैं-अरे वो बंजारन मोनालिजा कहां है। अरे वह आईआईटीयन बाबा कहां है। अरे वो औघड़ बाबा कहां है। अरे वो कबूतर वाला बाबा कहां है। अरे वो कांटों पर सोने वाला बाबा कहां है। अरे सुना है उस आईआईटीयन बाबा को जूना अखाड़ा वालों ने निकाल दिया है। कोई कह रहा है वह अभी यहीं था, कोई कह रहा है गांव चला गया है। अरे यार सुना है उसके माता-पिता आए हुए हैं। कहां हैं? वह कुंभ का सर्वव्यापी बाबा बन गया है। कुंभ में आए तमाम साधुओं को उससे रश्क हो सकता है। वह कुंभ पर छा गया है। आह ! क्या कमाल का साधु है। वह अपने माता-पिता को गालियां दे रहा है। वाह ! वैराग्य हो तो ऐसा हो। जिस धर्म में माता-पिता को भगवान का दर्जा हासिल हो, वहां वह उन्हें अपशब्द कह रहा है, जल्लाद कह रहा है। उसके प्रेम के किस्से भी चल रहे हैं। कोई कह रहा है नशेड़ी है। कोई कह रहा है झगड़ालू है। पागल भी बता रहे हैं। अगर कुंभ में नहीं होता तो जरूर उसे ऐसा पागल मान लिया होता जो ज्यादा पढ़-लिख गया है।

लेकिन वह अकेला ऐसा नहीं है। ढूंढ़ो तो ऐसे हजार मिल जाएंगे। कोई अपनी तपस्या के अजीबो-गरीब ढंग से लोगों को आकर्षित कर रहा है, तो कोई अपने अंग्रेजी ज्ञान से। वहां विदेशी सेलिब्रिटी भी डुबकी लगाते मिल जाएंगे। वहां कोई प्रोफेसर भी मिल जाएगा। वहां अपनी विदेशी गाड़ियों से आए मठाधीश भी मिल जाएंगे। कुंभ अब एक इवेंट है सरकार और नेताओं के लिए। लेकिन लगता है कुंभ का अंतिम सत्य तो रीलें ही हैं। हजारों-लाखों रीलें।

गुम होती गुरुओं की पहचान

'गुरु' शब्द एक छोटा सा शब्द है, जो दो अक्षरों से मिलकर बना है। 'गु' और 'रु'। 'गु' का अर्थ है अंधकार, 'रु' का अर्थ है दूर करना। अर्थात गुरु वो होता है जो हमारे मन में छाए अज्ञान के अंधकार को ज्ञान के प्रकाश द्वारा दूर कर देता है। अर्थात हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। जीवन में हमेशा सदमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। जो हमें जीवन पथ पर भटकने से बचाता है तथा जीवन में हमारा मार्गदर्शन करता हुआ हमें उन्नति की ओर ले जाता है। गुरु की परंपरा हमारे देश में बहुत प्राचीन है। यह परंपरा प्राचीन काल से आज तक चली आ रही है। इसका हिंदू संस्कृति में एक सर्वोच्च स्थान रहा है। हिंदू संस्कृति में गुरु को साक्षात परम ब्रह्म अथवा ईश्वर का स्वरूप माना गया है। हमारी प्राचीन परंपराओं के अनुसार गुरु के बिना ज्ञान संभव नहीं है। गुरु ही है जो हमें ज्ञान प्रदान करता है और इस सृष्टि के सारे रहस्यों के भेद खोलता है। गुरु के बिना हमारा कल्याण संभव नहीं है। वह गुरु ही है जो अपनी असीम कृपा करके हमारी आंखों को खोल कर रख देता है। हमें हमेशा अपने गुरुओं को पूजनीय समझना चाहिए और उनका आदर-सत्कार करना चाहिए, क्योंकि जो गुरु होता है वह कभी भी किसी का बुरा नहीं सोचता है। वह तो हमेशा हमारी भलाई में लगा रहता है। वर्तमान समय में गुरु के पक्ष में लिखी गई पंक्तियों की चमक दिन-प्रतिदिन फीकी पड़ती जा रही है। एक समय था जब शिष्य गुरु को दंडवत प्रणाम करता था। गुरु फूला नहीं समाता था। गुरु अपने शिष्य को सौ-सौ दुआएं देता था।

गुरु को अपने शिष्य पर बहुत अधिक अभिमान होता था कि वह एक न एक दिन उसका, अपने माता-पिता, अपने गांव का, अपने देश-प्रदेश का नाम रोशन करेगा। परंतु आज गुरु का सिर लाज से झुक जाता है जब उसका शिष्य बिना प्रणाम किए, बिना चरण स्पर्श किए, उसके मुंह की तरफ देखते हुए घमंड से चौड़ा सीना करके सामने से गुजर जाता है। गुरु आश्चर्यचकित-सा होकर खड़ा सोचता रह जाता है कि इस नई पीढ़ी का क्या होगा? ये विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करके किस ओर जा रहे हैं? ये क्या सीख रहे हैं? हम कह रहे हैं हमारे देश ने बहुत अधिक तरक्की कर ली है। हमने मंगल ग्रह पर भी तिरंगा फहरा दिया है। हम विश्व की तीसरी आर्थिक शक्ति बनने जा रहे हैं। समाज में दिन-प्रतिदिन सुधार होता जा रहा है। भविष्य तो हमारा अंधकारमय है। विद्यार्थी ही हमारा भविष्य है। वही अपना मार्ग भटक गए हैं। विद्यार्थी अपनी संस्कृति और संस्कारों को भूलते जा रहे हैं। पश्चिमी संस्कृति की ओर भागे जा रहे हैं। आज के विद्यार्थी की दौड़ एक दिशाहीन, लक्ष्य से रहित दौड़ है। आज के विद्यार्थी गुरुओं का आदर-सत्कार करना दिन-प्रतिदिन भूलते जा रहे हैं। गुरुओं का आदर-सत्कार तो दूर की बात, अपने माता-पिता का आदर-सत्कार नहीं करते। अगर माता-पिता का आदर-सत्कार करते होते तो शायद आज वृद्धाश्रम न भरे होते। एक समय था जब विद्यार्थी गुरु के सामने आने से भी डरते थे, परंतु आज के जमाने में गुरु के डर की बात तो दूर, गुरु को ही डराने लगे हैं। उलटी गंगा पहवे (पोहे) को बहने लगी है। बड़े दुख की बात है कि आज गुरुओं की पहचान गुम होती जा रही है। उसकी सबसे बड़ी वजह हमारी वर्तमान व्यवस्था है। एक समय था जब राजा गुरु के पास जाता था। अब व्यवस्था यह है कि गुरु राजा के पास जाता है। चरण स्पर्श करता है, हाथ जोड़ता है, गिड़गिड़ाता है, मिन्नतें करता है। इससे उसके सम्मान को ठेस पहुंचती है। समाज में उसका कोई इज्जत-मान नहीं रह जाता। समाज की ही बात ले लो। समाज हमेशा गुरुओं के साथ न खड़ा होकर विद्यार्थियों के साथ खड़ा होता है।

चाहे गलती विद्यार्थी की ही क्यों न हो? विद्यार्थी के लिए सभी दरवाजे खुले हैं। गुरु अभिमन्यु की तरह चक्करव्यूह में छटपटाता है। उसके लिए सभी दरवाजे बंद हैं। उसके हाथ इस कद्र बंधे हुए हैं कि पानी पुल के ऊपर से गुजर जाएगा, परंतु पुल मजबूरी में सब कुछ देखता रहेगा। उसका कहां वश चलता है। व्यवस्था हमारी इतना भयानक रूप ले चुकी है कि गुरु करे तो क्या करे? व्यवस्था के आगे उसके भी हाथ खड़े हैं। वे लोग भी अध्यापकों के ऊपर उंगली उठाने से नहीं चूकते जो अपनी पढ़ाई आधी-अधूरी छोडक़र छोटी उम्र में ही शिक्षा से किनारा कर लेते हैं। उनको पता नहीं होता कि विद्यार्थी से अध्यापक बनने तक की कठिन यात्रा में कितनी मुश्किलों से गुजरना पड़ता है। कुर्सी तक पहुंचने के लिए कितने आंधी-तूफानों से टकराना पड़ता है। गुरुओं की पहचान गुम होने का कारण हमारी शिक्षा प्रणाली भी है। जब विद्यार्थी बिना पढ़े पास हो जाएगा तो वह गुरुओं का क्या आदर-सत्कार करेगा? अब सरकार की ओर से अच्छी पहल की गई है कि पांचवीं और आठवीं में भी विद्यार्थी फेल किए जा सकेंगे जो किसी वजह से पढाई में नहीं चल पा रहे हैं। अगर देखा जाए तो अध्यापक भी अपनी अस्मिता के गुम होने के लिए कुछ हद तक जिम्मेवार है। जो अधिकार उनको दिए गए हैं, वे उनको अपने जीवन में उतार नहीं पा रहे हैं। कितने अध्यापक हैं जिन्होंने 2019 से, जब से पांचवीं और आठवीं में फेल होने का नियम बना है, बच्चों को फेल किया? कितने अध्यापक हैं जिन्होंने 75 फीसदी से कम हाजिरी वाले विद्यार्थियों को परीक्षा में बैठने से रोका? कितने अध्यापक हैं जिन्होंने उद्दंड विद्यार्थियों को असेसमेंट में फेल किया? और भी बहुत से कारण हैं जिनकी वजह से दिन-प्रतिदिन माहौल बिगड़ता जा रहा है। विद्यार्थी उद्दंड होते जा रहे हैं। ऐसे विद्यार्थी फिर गुरुओं का क्या आदर-सत्कार करेंगे? आज जरूरत है अध्यापकों को भी, कि विद्यार्थियों के सामने आदर्श प्रस्तुत करें। फूंक-फूंक कर कदम रखें। समाज को भी चाहिए कि उनका हरसंभव सहयोग करे।

शिक्षा प्रणाली को भी संस्कारों से युक्त बनाना होगा। सामाजिक व्यवस्था में भी सुधार करना होगा। फिर देखना विद्यार्थी अर्जुन जैसे धनुर्धारी और अध्यापक गुरु द्रोणाचार्य जैसे क्यों नहीं बनते? फिर वह दिन दूर नहीं होगा, जब भारत विश्व गुरु के सिंहासन पर विराजमान होगा। भारत में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, बस जरूरत है उचित मार्गदर्शन करने की। सही दिशा की ओर ले जाने की। हमारे इतिहास में असंख्य उदाहरण देखे जा सकते हैं कि किस प्रकार से गुरु की कृपा से उनके शिष्य महान बन गए और संपूर्ण संसार में अपना यश फैलाया।

धर्मशाला में कन्वेंशन सेंटर

मुख्यमंत्री के शीतकालीन प्रवास की गर्माहट में कांगड़ा सुखविंदर सिंह सुक्खू को करीब देख रहा है, तो पर्यटन राजधानी के सफर की मंजिलें भी नजर आने लगी हैं। युग बदल रहा गगल एयरपोर्ट का विस्तार अब रेखांकित होने लगा है, तो एशियन विकास बैंक के वित्तीय सहयोग से धर्मशाला, नगरोटा, पालमपुर व पौंग बांध तक आशाएं तैरती हुई मिल जाएंगी। बहरहाल अंतरराष्ट्रीय कन्वेंशन सेंटर की रूपरेखा में मुख्यमंत्री ने अपनी प्राथमिकता जाहिर की है। करीब डेढ़ सौ करोड़ की लागत से बनने वाला यह सेंटर हिमाचल को गोवा व कश्मीर के पर्यटन के नजदीक खड़ा कर देगा। हालांकि कागजों में झूलती इस परियोजना ने पहले भी कई नक्शे खींचे, लेकिन अब हकीकत के द्वार पर मुख्यमंत्री ने स्पष्टता से इसकी 'नेमप्लेट' लगा दी। कुछ ऐसे ही यथार्थ की जमीन पर ढगवार दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र का नींव पत्थर भी भविष्य की कलम से ग्रामीण आर्थिकी लिख रहा है। डेढ़ से तीन लाख लीटर प्रतिदिन की क्षमता में दुग्ध उत्पादक की गारंटी दे रहा। पांच जिलों के दायरे में 35 हजार किसानों की किस्मत के पैमाने अगर यह मिल्क प्लांट भर पाता है, तो यह श्वेत क्रांति का ऐतिहासिक दस्तावेज सिद्ध होगा। अंततः शीतकालीन प्रवास की वकालत में प्रदेश की योजनाओं का ढर्रा बदलने की कोशिश ही तो रही है। इसी परिप्रेक्ष्य से कांग्रेस सरकार की पेशकश में कांगड़ा में उतर रहीं परियोजनाएं अपना कद और पदक लेकर हाजिर हैं। यह दीगर है कि बीच में राजनीतिक नोकझोंक से कुछ विरोध केंद्रीय विश्वविद्यालय के जदरांगल परिसर को लेकर शुरू है, लेकिन अगर इस विषय पर भाजपा गंभीर है तो इस परियोजना की फंडिंग में कुछ तो उदारता केंद्र से ले आती। केंद्र सरकार पर्यावरण संरक्षण के नाम पर मांग रही 30 करोड़ की राशि को निरस्त भी तो कर सकती है। वैसे 70 प्रतिशत अपनी जमीन जंगल के नाम पर कर देने वाले हिमाचल पर ऐसे फौलादी कानूनों का अत्याचार शीघ्रता से दूर होना चाहिए, वरना अमल में आने से पहले कई प्रस्तावित परियोजनाएं दम तोड़ती रहेंगी।

फार्माकोलॉजी आदि का अध्ययन शामिल है। बीयूएमएस पूरा करने के बाद, उम्मीदवार यूनानी चिकित्सक के रूप में काम कर सकते हैं या यूनानी चिकित्सा के क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। बैचलर ऑफ नेचुरोपैथी एंड योगिक साइंसेज (बीएनवाईएस) - बीएनवाईएस एक है5.5-वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम जो पारंपरिक चिकित्सा को योग और प्राकृतिक उपचारों के साथ जोड़ता है। कार्यक्रम में प्राकृतिक चिकित्सा, योग, पोषण, शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान आदि का अध्ययन शामिल है। बीएनवाईएस पूरा करने के बाद, एक उम्मीदवार प्राकृतिक चिकित्सक के रूप में काम कर सकता है या प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

दूसरी ओर सरकार को भी जदरांगल परिसर की परीक्षा में तो सफल होना ही पड़ेगा। इस परिसर का अध्याय कितना भी नजरअंदाज हो, इसे बंद करना किसी भी सरकार के लिए नामुमकिन होगा। इस संदर्भ में भाजपा ने अपना विरोध जताया है, लेकिन पिछली सरकार के समय भी यह मुद्दा यूं ही भटकता रहा है। दूसरी ओर यूनिटी माल के निर्माण में हो रही देरी ने आशंकाएं बढ़ा दी हैं। यूनिटी माल की जगह पर बजट की पहली किस्त आने के बावजूद अगर निर्माण की शिथिलता है, तो इसको लेकर विपक्ष की आशंका का क्या जवाब है। कहीं यह परियोजना भी केंद्रीय विश्वविद्यालय जैसे दलदल में खड़ी होने तो नहीं जा रही। बहरहाल कांगड़ा पर्यटन की राजधानी में बनखंडी का चिडियाघर अब एक बड़ी परियोजना को साकार करने के लिए आगे बढ़ रहा है। अभी कई योजनाएं विवादों में हैं। मसलन पालमपुर का पर्यटन विलेज अदालती फैसले के कारण कृषि विश्वविद्यालय से जमीन नहीं ले सका, तो नरघोटा में हिमुडा से पर्यटन के नाम हुई भूमि पर टूरिस्ट विलेज की परिकल्पना को क्यों ग्रहण लगा है। यह दीगर है कि नगरोटा बगवां में म्यूजिकल फाऊंटेन की ऊंचाई तय है या पौंग पर शिकारे अपने मार्ग बना रहे हैं। शीतकालीन प्रवास पर निकले मुख्यमंत्री ने धर्मशाला में अपने व्यक्तित्व का एहसास कराया है। जब वह कोतवाली बाजार में गेयटी थियेटर जैसे सभागार के निर्माण की संभावना देखते हैं या कचहरी अड्डा के समन्वित विकास में भविष्य के माल रोड की परिकल्पना करते हैं, तो सरकार का जज्बा सामने आ जाता है। इस गहमागहमी के बीच कहीं चिल्ड्रन ऑफ दि स्टेट के बैनर तले बिलासपुर के अनाथालय के 17 बच्चे, जब वाघा बार्डर भ्रमण से मुखातिब होते हैं, तो धर्मशाला सचिवालय से सरकार की संवेदना दर्ज होती है।

जलवायु परिवर्तन की चपेट में श्रमिक

विजय गर्ग

जलवायु परिवर्तन के कारण चरम मौसमी घटनाओं में वृद्धि श्रमिकों के रोजगार, कार्यक्षमता, कार्यावधि उत्पादकता, स्वास्थ्य और जीवन को प्रभावित करती है। निम्न पर्यावरणीय दशाओं में कार्य करने को विवश श्रमिक स्वास्थ्य के साथ-साथ जीवन की हानि के रूप में बड़ी कीमत चुकाता है। चरम मौसमी घटनाओं के कारण जब लोग घर से बाहर निकलने की हिम्मत तक नहीं जुटा पाते हैं, वैसी स्थिति में भी श्रमिक रोजगार के लिए दर-दर भटकने को विवश होते हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित होने वाले श्रमिक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार 2030 तक दुनियाभर कुल कामकाजी घंटों का 3.8 प्रतिशत तक जलवायु-प्रेरित उच्च तापमान के कारण नष्ट हो सकता है। यह 13.6 करोड़ पूर्णकालिक नौकरियों के बराबर है। इससे वैश्विक अर्थव्यवस्था को 2400 अरब डालर की चपत लग सकती है। तापमान में वृद्धि कार्यस्थल पर श्रमिकों के स्वास्थ्य और जीवन के लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। ऐसी परिस्थिति में श्रमिक अपेक्षाकृत कम काम कर पाते हैं, क्योंकि गर्मी की मार से बचने के लिए बार-बार विराम लेने की आवश्यकता पड़ सकती है। भीषण गर्मी श्रमिकों में थकावट, लू और मृत्यु का कारण भी बन सकती है। वहीं पराबैंगनी किरणों के लगातार संपर्क में रहने से त्वचा कैंसर का खतरा बढ़ सकता है। अध्ययनों से पता चलता है कि तापमान 24 से 26 डिग्री सेल्सियस से ऊपर जाने पर कार्य उत्पादकता धीमी हो जाती है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन का कहना है कि 33 से 34 डिग्री सेल्सियस पर उन नौकरियों में उत्पादकता का स्तर आधा हो सकता है, जिनमें शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है। श्रमिकों को वायु प्रदूषण के बढ़ने से श्वसन संबंधी विकारों का सामना करना पड़ता है। धूल, धुएं और प्रदूषण वाले इलाकों में निरंतर काम करने से उनमें अस्थमा व अन्य बीमारियां घर करती हैं। वहीं तीव्र वर्षा और हाड़ कंपाने वाली सर्दी के दिनों में भी श्रमिकों को कार्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। दूसरी और बाढ़ एवं सूखा जैसी आपदाओं के कारण श्रमिकों का रोजगार छिन जाना और पलायन की बेबसी भी एक बड़ी आर्थिक विपदा है।

बहरहाल निम्न पर्यावरणीय स्थिति श्रमिकों की कार्यक्षमता को कम करती है। इस प्रक्रिया से उत्पादन और क्रमशः आर्थिक विकास प्रभावित होता है। जलवायु परिवर्तन कई बार निर्माण कार्यों में संलग्न श्रमिकों के लिए काल बन जाता है। पर्यावरण की रक्षा इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि इससे रोजगार की रक्षा करना और गरीबी से लड़ना आसान हो सकता है। इससे श्रमिकों को कार्य करने की बेहतर परिस्थिति प्रदान की जा सकती है। श्रमिकों से संतोषजनक काम लेने के लिए जरूरी है कि उन्हें बेहतर पर्यावरणीय माहौल उपलब्ध कराया जाए।

गांवों की कीमत पर फैलते शहर

विजय गर्ग

नए शहर और कस्बे बसाना आज की जरूरत बताई जा रही है। केंद्र सरकार पिछले दस वर्षों में बड़े शहरों में जनसंख्या के बढ़ते घनत्व पर अंकुश लगाने और बढ़ती आबादी के मद्देनजर नए शहर बसाने की कोशिश में जुटी है। सभी सुविधाओं से युक्त कस्बों के निर्माण को भी प्राथमिकता दी जा रही है। देश के तमाम अंचलों में शहर और कस्बे बसाने का काम चल रहा है। नए कस्बों और शहरों का निर्माण तथा पुराने शहरों के विस्तार की जरूरत वाहनों की बढ़ती संख्या, भीड़भाड़ और प्रदूषण बढ़ने के कारण महसूस हो है। इसे देश देश के विकास और विकसित देश के निर्माण रूप में भी देखा जा जा रहा है। एक हकीकत यह भी है कि विकास योजनाओं और बेहतर नीतियों के बावजूद गांवों से पलायन में कोई कमी नहीं आई है। रोजगार की बेहतर संभावनाओं की तलाश में युवा और मेहनतकश लोग अपने पुश्तैनी गांव तथा खेत- खलिहान छोड़ कर शहर जाते हैं। वहां उनका शारीरिक और मानसिक शोषण होता है। महानगरों और शहरों में उन्हें नाउम्मीदी ही लगती है। फुटपाथों पर भीख मांगते बच्चे, महिलाएं और बुजुर्ग इसके प्रमाण हैं। इनमें ज्यादातर ऐसे असहाय लोग हैं, जिनको सहारा देने वाला कोई नहीं होता।

गांवों की तरक्की लिए नई योजनाएं बनाई जा रही हैं। प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। किसानों को खेती के लिए कई सुविधाएं दी जा रही हैं। गांवों से शहरों की तरफ पलायन रोकने की कोशिशें की जा रही हैं। बावजूद इसके पलायन नहीं रुक पा रहा है। ताजा आंकड़ों और अनुमान के मुताबिक आने वाले पांच वर्षों में शहरों में दस करोड़ मकान बनाने की जरूरत पड़ेगी। केंद्र सरकार शहरों और गांवों में बड़े पैमाने पर मकान बनाने में लगी है, लेकिन अभी भी करोड़ों लोगों के सिर पर छत नहीं है। सरकार एक तरफ गांवों से पलायन रोकने की कोशिश में लगी है, तो दूसरी तरफ नए महानगर बसाने पर भी काम कर रही है। इन नए शहरों में कौन आकर बसेगा ? जाहिर सी बात है, गांव का वह धनी वर्ग, जो अब खेती नहीं करना चाहता। वह गांव से निकलना चाहता है। मगर गांवों से पलायन कर शहरों और कस्बों में आकर मेहनत-मजदूरी करने वाले लोग या जाना चाहते हैं। वे खेतिहर मजदूर बन कर गांव उन्हें लगता है कि उनके लिए गांव पहले जैसा मुफीद नहीं रहा। गांवों में ऐसे परिवार ही रहना चाहते हैं, जो अपनी विरासत खोना । नहीं या परिवार भी शहरों में ही ब रहना नहीं चाहते।

चाहते।

वित्तमंत्री ने बजट में शहरी अवसंरचना विकास निधि (यूआइडीएफ) के जरिए द्वितीय और तृतीय श्रेणी के शहरों में सार्वजनिक/ राज्य एजेंसियों, नगर निगमों, शहरी स्थानीय निकायों जरिए कार्यान्वित शहरी बुनियादी ढांचे विकास कार्यों के लिए राज्य सरकारों के प्रयासों को वित्तपोषण का एक स्थिर और अनुमानित स्रोत प्रदान करने की घोषणा की थी। पर्यावरणविदों के मुताबिक इतने बड़े पैमाने पर शहरों और कस्बों के निर्माण से देश प्रदूषण और जल संकट से जूझ रहा होगा। मौजूदा दौर में देश के ज्यादातर शहरों और कस्बों बढ़ती आबादी अपराध, बेरोजगारी, अपर्याप्त बुनियादी ढांचा, साधारण बरसात में बाढ़ जैसे हालात, ध्वनि प्रदूषण, सड़क दुर्घटनाएं, अपर्याप्त परिवहन, असंगठित कालोनियों की लगातार बसावट और झुग्गी- झोपड़ियों के फैलाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये सभी शहरीकरण के नकारात्मक पक्ष हैं। इन पर गौर करने की जरूरत है।

दूर के ढोल सुहावने वाली कहावत शहरीकरण को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गांव के लोगों को लगता है कि शहरी जिंदगी बहुत अच्छी है। दिन भर मेहनत कर अपने और परिवार के लिए अच्छा भोजन जुटाया जा सकता है। अधिक मेहनत से कमाई हो जाती है। बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ लेते हैं। सब कुछ सहज रूप से मिल जाता है। शहरों के बारे में इस तरह की जानकारी जब गांव के गरीबों के पास पहुंचती है, तो वे घर छोड़ कर शहरों में रोजगार के अवसर तलाशते हैं। गरीबी व्यक्ति को कितना मजबूर कर देती है, यह वही जानता है, जो मजबूरी में जिंदगी बसर कर रहा। हो।

शहरीकरण के सकारात्मक पक्ष विकास को इंगित करते हैं। मगर यह कई समस्याएं पैदा करने की वजह के रूप में देखा जाता है। इसलिए इस पर सवाल भी उठते हैं। आज गांवों में जो समस्याएं हैं उनमें गरीबी और में उससे बढ़ता हुआ पलायन प्रमुख है, तो दूसरी समस्या रोजगार का अभाव है। शहरीकरण केंद्र और राज्य सरकारों की नीति का हिस्सा है। इसका सीधा मतलब है कि गांवों से लोग नए शहरों में आकर बसें और सरकार वहां सारी सुविधाएं उपलब्ध कराए। मगर सवाल है कि नए शहरों को बसाने के लिए जो आधुनिक सुविधाएं होनी चाहिए, वे क्या पर्यावरण की कीमत पर मुहैया कराई जा हैं? जलवायु परिवर्तन क का नया संकट दुनिया भर में पैदा है उससे हुआ उससे पैदा हुई है अधिक गर्मी, अधिक बरसात, उससे बढ़ती बाढ़ की समस्या और अकाल। साफ पानी की उपलब्धता, जरूरत के मुताबिक सबको रोजगार, अस्पताल, स्कूल-कालेज और रोजमर्रा की सभी चीजें उपलब्ध कराना क्या इतना सहज है, जितना सरकार कहती है।

भारत के हर बड़े और मझोले शहरों में आज प्रदूषण सबसे बड़ी समस्या है। इसके अलावा कूड़े का निपटान और स्वच्छता को सतत बनाए रखना बड़ी समस्या है। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, लखनऊ, कानपुर, जयपुर, रांची, इंदौर, भोपाल, चंडीगढ़ और पटना सहित देश बड़े शहरों में मूलभूत जरूरतों की बेहतर व्यवस्था होने के दावों के बावजूद सच यह है कि दिल्ली सहित कई बड़े शहरों में भीड़ बढ़ रही है। विकसित देशों में शहरीकरण देश के विकास का पर्याय है। गांवों में में श्वास लेने और मौज-मस्ती के लिए जाते हैं। वहां गांवों के हालात वैसे दयनीय नहीं हैं जैसे भारत में हैं सुरक्षा और सेहत के मामले में भी विकसित देश भारत । कई गुना अच्छे हैं। मगर उनका विकास उद्योगों और औजारों के निर्यात पर आधारित है। खेती तो महज दो-तीन फीसद लोग करते हैं। देश की अर्थव्यवस्था में अब भी 15-20 फीसद योगदान कृषि क्षेत्र का है। शहरीकरण से कृषि क्षेत्र का हिस्सा खत्म होगा, इससे किसका फायदा होगा? गांव उजड़ेंगे और नए शहर बसेंगे। नए शहरों को बसाने में जो करोड़ों रुपए खर्च होंगे, यह आर्थिकी पर बोझ की तरह ही होगा। इसलिए शहरीकरण रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा और वंचितों को हर तरह के संसाधन मुहैया कराने का समाधान नहीं। शहरीकरण से समुद्रों, नदियों, तालाबों, खेतों, नहरों, जंगलों, पर्वतों और स्वच्छ जलवायु में गंदगी ही बढ़ती है। आजादी के बाद शहरीकरण जिस तेजी से बढ़ा है, उसी तेजी से नदी नहर, तालाब, जंगल, पर्वत, खेत, हवा और दूसरे सभी प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचा है। फिर भी सरकार देश को नए विकास के रास्ते पर ले जाने के लिए शहरीकरण को बढ़ावा दे रही है। इसलिए कि शहरीकरण वक्त की जरूरत है, इसे पूरी तरह नकारा नहीं जा सकता। मगर गांवों से पलायन कर लोग शहरों में बसें, इससे समस्याएं घटेंगी नहीं, बढ़ेंगी ही।

नीति आयोग और नैसकॉम फाउंडेशन ने मिलकर एक लाख लोगों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने की शुरुआत की

परिवहन विशेष न्यूज

पहले चरण में नैसकॉम फाउंडेशन 60 विशेष रूप से संवेदनशील आदिवासी ब्लॉक्स को डिजिटल साक्षरता और सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक करने पर फोकस करेगा। इस कार्यक्रम को धीरे-धीरे सभी 500 आकांक्षी ब्लॉक्स में बढ़ाया जाएगा। राष्ट्रीय संकल्प को मजबूत करने पर आधारित यह पहल अंतिम मील तक खासकर महिलाओं और आदिवासी समुदायों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित करेगी।

प्रधानमंत्री डिजिटल साक्षरता अभियान के तहत, नीति आयोग के साथ साझेदारी में, नैसकॉम फाउंडेशन ने भारत के आकांक्षी ब्लॉक्स में एक लाख लोगों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने का लक्ष्य साधा है। इस पहल के पहले चरण में विशेष रूप से संवेदनशील आदिवासी समूहों (पीवीटीजी) के 60 ब्लॉक्स में डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण और आवश्यक ई-गवर्नेंस सेवाओं तक पहुंच बढ़ाई जाएगी। इसके बाद, इस कार्यक्रम को सभी अन्य आकांक्षी ब्लॉक्स तक बढ़ाया जाएगा। डिजिटल समावेशन को बढ़ावा देते हुए, यह पहल सरकार के विकसित भारत के दृष्टिकोण का समर्थन करती है, जो न सिर्फ समावेशी विकास को बढ़ावा देती है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करती है कि भारत की डिजिटल यात्रा में कोई भी पीछे न रहे।

नैसकॉम फाउंडेशन द्वारा आयोजित लॉन्च इवेंट में श्री बी.वी.आर. सुब्रह्मण्यम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, नीति आयोग; अन्य नीति आयोग सदस्य; डॉ. ओ.पी. अग्रवाल, प्रतिष्ठित साथी; श्री आनंद शेखर, अतिरिक्त मिशन निदेशक, आकांक्षी ब्लॉक्स कार्यक्रम; ज्योति शर्मा, सीईओ, नैसकॉम फाउंडेशन; आदित्य मिश्रा, प्रमुख, डिजिटल साक्षरता, नैसकॉम फाउंडेशन; तथा डॉ. महेंद्र कुमार, अतिरिक्त मिशन निदेशक, आकांक्षी जिला कार्यक्रम और आकांक्षी ब्लॉक्स कार्यक्रम की उपस्थिति दर्ज की गई। इवेंट ने सरकार के इस प्रयास को उजागर किया, जो अंतिम छोर तक डिजिटल सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह पहल इस बात पर जोर देती है कि तकनीकी का उपयोग समावेशी विकास और समान अवसरों के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

नैसकॉम फाउंडेशन द्वारा वर्ष 2022 में शुरू किए गए आकांक्षी जिला कार्यक्रम की सफलता को ध्यान में रखते हुए, अब इस पहल का दायरा बढ़ा दिया गया है। पहले 55 आकांक्षी जिलों पर ध्यान केंद्रित किया गया था, लेकिन अब इसे ब्लॉक्स तक बढ़ा दिया गया है। इस कार्यक्रम के तहत महिलाओं और युवाओं को डिजिटल कौशल सिखाने और उन्हें जरुरी संसाधन प्रदान करने पर जोर दिया जा रहा है, ताकि सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सके।

जनजातीय विकास रिपोर्ट 2022 के अनुसार, पीवीटीजी समुदायों में साक्षरता दर सिर्फ 47.7% है, जो राष्ट्रीय औसत से बहुत कम है। इस डिजिटल असमानता को खत्म करने के लिए नैसकॉम फाउंडेशन ने यह पहल शुरू की है, ताकि इन समुदायों में समग्र विकास और समावेशन को बढ़ावा मिल सके।

नैसकॉम फाउंडेशन की मुख्य कार्यकारी अधिकारी, ज्योति शर्मा ने कहा, ₹प्रौद्योगिकी आज की दुनिया में प्रगति और सशक्तिकरण की मुख्य शक्ति है। इस विकास को हासिल करने के लिए डिजिटल साक्षरता अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि भारत के सबसे दूरदराज़ इलाकों, विशेष रूप से हाशिए पर रहने वाले पीवीटीजी (विशेष रूप से संरक्षित जनजातीय समूहों), के पास सतत विकास और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करने की शक्ति हो। आकांक्षी ब्लॉक्स कार्यक्रम, जो नीति आयोग के साथ मिलकर चलाया जा रहा है, सिर्फ डिजिटल अंतर को कम करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह लोकतंत्र को मजबूत करने और विकसित भारत के सपने को साकार करने में हर किसी की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के बारे में है।'

यह प्रशिक्षण बेसिक कम्प्यूटर कौशल, साइबर सुरक्षा और इंटरनेट के प्रभावी उपयोग को कवर करता है, जिससे प्रतिभागी आत्मविश्वास के साथ डिजिटल दुनिया में मार्गदर्शन कर सकते हैं। समुदाय तक पहुँच स्थापित करने वाले अभियानों का भी इस पहल में महत्वपूर्ण योगदान है, जो डिजिटल साक्षरता और ई-गवर्नेंस सेवाओं के लाभों के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाते हैं और डिजिटल उपकरणों को अपनाने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं। इस कार्यक्रम को प्रभावी तरीके से लागू करने के लिए, स्थानीय समुदाय के चैंपियंस को मास्टर ट्रेनर्स और डिजिटल एंबेसडर के रूप में नियुक्त किया जाता है, जो संबंधित ब्लॉक प्रशासन के समर्थन से घर-घर जाकर लोगों को जागरूक करते हैं और समुदाय को गतिशील बनाते हैं।

इस साझेदारी के माध्यम से, नैसकॉम फाउंडेशन प्रधान मंत्री डिजिटल साक्षरता अभियान के प्रमुख संकेतकों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसमें डिजिटल उपकरणों के इस्तेमाल में बढ़ोतरी करना, सरकारी योजनाओं और सेवाओं के लिए जागरूकता बढ़ाना, और डिजिटल साक्षरता पर सामुदायिक जागरूकता को बढ़ावा देना शामिल है। डिजिटल साक्षरता और इसकी पहुँच के बीच जो अंतर है, उसे खत्म करके, आकांक्षी ब्लॉक्स कार्यक्रम डिजिटल रूप से अधिक सशक्त भारत की दिशा में अग्रसर हो रहा है।

सेबी को मिलेगा नया चीफ, सरकार ने मंगाया आवेदन; सैलरी-योग्यता समेत जानें पूरी डिटेल

tपरिवहन विशेष न्यूज

मौजूदा सेबी चीफ माधवी पुरी बुच का कार्यकाल 28 फरवरी को खत्म हो रहा है। सरकार वित्तीय क्षेत्र नियामक नियुक्ति खोज समिति (FSRASC) की सिफारिश पर सेबी अध्यक्ष की नियुक्ति करेगी। समिति योग्यता के आधार पर किसी अन्य व्यक्ति की भी सिफारिश करने के लिए स्वतंत्र है जिसने पद के लिए आवेदन नहीं किया है। आइए जानते हैं पूरी डिटेल।

नई दिल्ली। मार्केट रेगुलेटर सेबी की चेयरपर्सन माधवी पुरी बुच (Madhabi Puri Buch) का कार्यकाल पूरा होने वाला है। सरकार ने उनकी जगह नए चेयरपर्सन के लिए आवेदन मंगाया है। मौजूदा चेयरपर्सन बुच का तीन साल का कार्यकाल 28 फरवरी को खत्म हो रहा है। बुच ने 2 मार्च, 2022 को पदभार संभाला था।

वित्त मंत्रालय के तहत आर्थिक मामलों के विभाग ने एक सार्वजनिक विज्ञापन में 17 फरवरी तक उम्मीदवारों से आवेदन आमंत्रित किए हैं। मंत्रालय ने कहा, ₹नियुक्ति कार्यभार संभालने की तारीख से अधिकतम 5 साल की अवधि के लिए या नियुक्त व्यक्ति की उम्र 65 साल होने तक, जो भी पहले हो, के लिए की जाएगी।₹

कितना होगा वेतन

सरकारी विज्ञापन के मुताबिक, सेबी चेयरपर्सन को भारत सरकार के सचिव के बराबर वेतन मिलेगा। यह फिलहाल 5,62,500 रुपये महीना है। इसमें घर और गाड़ी की सुविधा शामिल नहीं है। वित्त मंत्रालय का यह भी कहना है कि रेगुलेटर के तौर पर सेबी की भूमिका काफी अहम है। ऐसे में चेयरपर्सन के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवार को कुछ पैमानों पर खरा उतरना होगा।

विज्ञापन के मुताबिक, 'उम्मीदवार निष्ठावान और प्रतिष्ठित शख्स होना चाहिए। उसकी 25 साल से अधिक और 50 साल से कम होने चाहिए। उम्मीदवार के पास सिक्योरिटीज मार्केट से संबंधित समस्याओं से निपटने में दिखाई गई क्षमता, या कानून, वित्त, अर्थशास्त्र, लेखाशास्त्र का विशेष ज्ञान या अनुभव होना चाहिए, जो केंद्र सरकार की राय में बोर्ड के लिए उपयोगी होगा।'

हितों का टकराव न हो

साथ ही विज्ञापन में कहा गया है, 'सेबी चेयरपर्सन ऐसा व्यक्ति होना चाहिए, जिसके पास ऐसे कोई वित्तीय या अन्य हित न हों और न ही आगे होंगे, जो चेयरपर्सन के रूप में उसके कामकाज को नकारात्मक तौर पर प्रभावित कर सकें।'

सरकार वित्तीय क्षेत्र नियामक नियुक्ति खोज समिति (FSRASC) की सिफारिश पर सेबी अध्यक्ष की नियुक्ति करेगी। समिति योग्यता के आधार पर किसी अन्य व्यक्ति की भी सिफारिश करने के लिए स्वतंत्र है, जिसने पद के लिए आवेदन नहीं किया है।

कैसा रहा माधवी पुरी बुच का कार्यकाल

सेबी चीफ के तौर पर माधवी पुरी बुच का कार्यकाल विवादों से भरा रहा। अमेरिकी शॉर्ट सेलर हिंडनबर्ग रिसर्च ने उन पर आरोप लगाया था कि अदाणी ग्रुप के विदेशी फंड में माधवी पुरी बुच (Madhabi Puri Buch) और उनके पति धवल बुच की हिस्सेदारी थी। इसमें अदाणी ग्रुप और सेबी के बीच मिलीभगत का भी आरोप था।

हालांकि, सेबी चीफ और उनके पति ने आरोपों को खारिज कर दिया था। सेबी चीफ के तौर पर माधवी पुरी बुच ने फ्यूचर्स एंड ऑप्शंस (F&O) में रिटेल इन्वेस्टर्स की भागीदारी रोकने के लिए नियमों को काफी सख्त किया। इसे भी मार्केट के कैश फ्लो पर नकारात्मक असर डालने वाला फैसला बताया गया।

नेहरू से मनमोहन सिंह तक... पांच प्रधानमंत्री, जिन्होंने बजट भी पेश किया

परिवहन विशेष न्यूज

बजट 2025 देश की आर्थिक दशा और दिशा तय करने में बजट अहम भूमिका निभाता है। यही वजह है कि वित्त मंत्रालय की जिम्मेदारी अक्सर किसी तजुर्बेकार नेता को दी जाती है। लेकिन भारतीय इतिहास में कई बार ऐसा हुआ है जब खुद प्रधानमंत्री को बजट पेश करना पड़ा। इसकी शुरुआत पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के जमाने से हो गई थी।

नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी को मोदी 3.0 का दूसरा पूर्ण बजट पेश करेंगी। यह बजट सरकार की आर्थिक नीतियों और देश की आर्थिक दिशा को काफी हद तक स्पष्ट करेगा। अगर बजट की बात करें, तो इसने देश की आर्थिक दिशा और दशा को बदलने में अहम भूमिका निभाई है। इसने कई ऐतिहासिक पल भी देखे हैं। जैसे कि बजट को ऐसे लोगों ने भी पेश किया है, जो उस वक्त प्रधानमंत्री थे या फिर बाद में प्रधानमंत्री बने। आइए ऐसी शख्सियतों के बारे में विस्तार से जानते हैं।

जवाहरलाल नेहरू

जवाहरलाल नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री थे। उन्होंने प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए 1958 में केंद्रीय बजट पेश किया। इसकी वजह भी काफी दिलचस्प थी। दरअसल, उस वक्त वित्त मंत्री टी टी कृष्णमाचारी थे। लेकिन, बजट से ठीक पहले मुंद्रा घोटाला उजागर हुआ। उसमें कृष्णमाचारी का नाम भी शामिल था। इस घोटाले चलते वित्त मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा। उनकी जगह नेहरू ने वित्त मंत्रालय की जिम्मेदारी संभाली और खुद बजट पेश किया।

मोरारजी देसाई

मोरारजी देसाई के नाम भारत में सबसे ज्यादा केंद्रीय बजट पेश करने का रिकॉर्ड है। वह जनता पार्टी के साथ 1977 से 1979 तक प्रधानमंत्री रहे थे। मोरारजी देसाई ने 8 पूर्ण और 2 अंतरिम बजट समेत कुल 10 बजट पेश किए। वित्त मंत्री के तौर पर अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने 1959 से 1963 तक लगातार बजट पेश किए। साथ ही 1962 का अंतरिम बजट भी पेश किया। उन्होंने 1967 के अंतरिम बजट के साथ-साथ 1967, 1968 और 1969 के बजट भी पेश किए।

इंदिरा गांधी

भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने भी अपने कार्यकाल के दौरान बजट पेश किया था। मोरारजी देसाई के इस्तीफे के बाद इंदिरा गांधी ने 1969 में वित्त मंत्रालय का कार्यभार संभाला। उन्होंने 1970 का केंद्रीय बजट पेश किया। एक साल बाद उन्होंने गृह मंत्री यशवंतराव चव्हाण को नया वित्त मंत्री नियुक्त किया।

राजीव गांधी

इंदिरा गांधी के बड़े बेटे राजीव गांधी ने भी प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए बजट पेश किया। इसकी नौबत तत्कालीन वित्त मंत्री वी पी सिंह को उनके पद से हटाने के बाद आई। राजीव गांधी ने जनवरी और जुलाई 1987 के बीच कुछ समय के लिए वित्त मंत्रालय का कार्यभार संभाला था।

मनमोहन सिंह

मनमोहन सिंह ने 1991 से 1996 तक पी वी नरसिम्हा राव की सरकार में वित्त मंत्री थे। उन्होंने पहली बार 1991 में बजट पेश किया, जिसे देश के इतिहास में सबसे क्रांतिकारी बजट माना जाता है। इसमें भारतीय अर्थव्यवस्था को रिवाइव करने के लिए उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की वकालत की गई थी। 2004 में कांग्रेस की अगुआई वाली यूपीए की सरकार बनने के बाद वह प्रधानमंत्री भी बने।

कैसे तय होता है फिटमेंट फैक्टर, कितनी बढ़ेगी सरकारी कर्मचारियों की सैलरी?

वेतन आयोग कर्मचारियों की सैलरी बढ़ाने की सिफारिश फिटमेंट फैक्टर के आधार पर करता है। फिटमेंट फैक्टर एक गुणक है जिसका इस्तेमाल सरकारी कर्मचारियों के वेतन और पेंशन की गणना करने के लिए किया जाता है। इसमें महंगाई और कर्मचारियों के प्रदर्शन जैसी चीजों को ध्यान में रखा जाता है। आइए इसके बारे में डिटेल में जानते हैं।

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने 8वें वेतन आयोग को मंजूरी दे दी है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव के मुताबिक, 8वें वेतन आयोग का गठन अगले साल यानी 2026 में होगा, जब 7वें वेतन आयोग का कार्यकाल खत्म होगा। नए वेतन आयोग के साथ केंद्रीय कर्मचारियों की सैलरी और पेंशन में भी भारी इजाफे की उम्मीद है। यह सब फिटमेंट फैक्टर से तय होगा। आइए जानते हैं कि फिटमेंट फैक्टर क्या होता है और केंद्रीय कर्मचारियों की सैलरी और पेंशन में कितना इजाफा हो सकता है।

कैसे बढ़ेगी सैलरी

वेतन आयोग कर्मचारियों की सैलरी बढ़ाने की सिफारिश फिटमेंट फैक्टर के आधार पर करता है। फिटमेंट फैक्टर एक गुणक है, जिसका इस्तेमाल सरकारी कर्मचारियों के वेतन और पेंशन की गणना करने के लिए किया जाता है। इसे मुद्रास्फीति, कर्मचारियों की जरूरतों और सरकार की वित्तीय क्षमता जैसे चीजों पर गौर करते तय किया जाता है।

महंगाई दरः वेतन आयोग यह जानने की कोशिश करता है कि महंगाई कितनी बढ़ी है और उसका कर्मचारियों की जीवनशैली पर क्या पड़ा है। जैसे कि उनके लिए घर और गाड़ी खरीदना कितना मुश्किल हुआ है।

इन खर्चों पर फोकसः वेतन आयोग की नई सैलरी की सिफारिश करते समय चावल, गेहूं, दाल, सब्जी, दूध, चीनी, तेल, ईंधन, बिजली, पानी के बिल, मनोरंजन, त्योहारों और शादी जैसे खर्चों को ध्यान में रखेगा।

इकोनॉमी की स्थितिः वेतन आयोग देश की वित्तीय स्थिति पर भी गौर करता है। अगर इकोनॉमी की ग्रोथ अच्छी रहती है, तो वेतन में ज्यादा वृद्धि होने की गुंजाइश रहती है।

कर्मचारियों का प्रदर्शनः वेतन आयोग कर्मचारियों के कामकाजी प्रदर्शन को भी ध्यान में रखता है। अगर कर्मचारियों का ओवरऑल परफॉर्मेंस बेहतर रहता है, तो उसका असर वेतन आयोग की सिफारिशों पर दिखता है।

बाजार पर भी नजरः वेतन आयोग केंद्रीय कर्मचारियों की सैलरी बढ़ाने की सिफारिश करते वक्त यह भी देखता है कि प्राइवेट कंपनियां अपने कर्मचारियों को कितना हाइक दे रही हैं। इससे केंद्रीय कर्मचारियों के लिए प्रतिस्पर्धी वेतन तय करने में आसानी होती है।

कितनी बढ़ेगी न्यूनतम सैलरी?

फाइनेंशियल एक्सपर्ट का मानना है कि 8वें वेतन आयोग में फिटमेंट फैक्टर 2.6 से 2.85 के बीच हो सकता है। इस हिसाब से केंद्रीय कर्मचारियों की सैलरी में 25 से 30 फीसदी की बढ़ोतरी हो सकती है। ऐसे में न्यूनतम सैलरी 40,000 रुपये से अधिक हो सकती है। इसमें भत्ते और परफॉर्मेंस पे भी शामिल होगा। पेंशनभोगियों को भी उसी अनुपात में फायदा मिलेगा।

7वें वेतन आयोग में सैलरी कैसे तय हुई थी?

6वें वेतन आयोग में न्यूनतम सैलरी 7,000 रुपये महीना था। इसे 7वें वेतन आयोग में बढ़ाकर 18,000 रुपये महीना कर दिया गया था। इसका मतलब है कि 7वें वेतन आयोग में फिटमेंट फैक्टर 2.57 गुना अधिक थी। इससे केंद्रीय कर्मचारियों की सैलरी में 14.2 फीसदी का उछाल आया था।

आसान हो सकता है घर खरीदना, पीएम किसान योजना का पैसा भी बढ़ने की उम्मीद

सस्ते मकान की बिक्री लगातार कम हो रही है। सब्सिडी की योग्यता सीमा में बढ़ोतरी के साथ होम लोन के ब्याज पर टैक्स सब्सिडी की सीमा को बढ़ाने से रियल एस्टेट सेक्टर को चुनौतियों से राहत मिलेगी। बजट में पीएम किसान स्कीम के तहत किसानों को भी राहत दी जा सकती है। पीएम किसान के तहत पंजीकृत किसानों को सालाना छह हजार रुपये सरकार की तरफ दिए जाते हैं।

नई दिल्ली। सस्ते मकान की खरीदारी को सरकार बजट में प्रोत्साहित कर सकती है। अभी सरकार 35 लाख तक के मूल्य के मकान की खरीदारी को लेकर लिए जाने वाले लोन की ब्याज दरों पर सब्सिडी देती है। आगामी एक फरवरी को पेश होने वाले बजट में 35 लाख तक की सीमा को बढ़ाकर 50 लाख तक किया जा सकता है। इससे सस्ते मकान की बिक्री बढ़ सकती है और निर्माण सेक्टर को प्रोत्साहन मिलेगा।

आगामी वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में सरकार निर्माण सेक्टर को प्रोत्साहित करने के लिए इस प्रकार का फैसला ले सकती है। सर्विस सेक्टर में सबसे अधिक रोजगार का सृजन निर्माण सेक्टर में होता है। लेकिन गत चार तिमाही से निर्माण सेक्टर की बढ़ोतरी दर कम हो रही है। चालू वित्त वर्ष 2024-25 की दूसरी तिमाही में निर्माण सेक्टर में 7.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी रही जबकि पहली तिमाही में यह बढ़ोतरी 10.5 प्रतिशत तो पिछले वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही में यह बढ़ोतरी दर 13.6 प्रतिशत की थी। उससे पहले की तिमाही में निर्माण सेक्टर में 8.6 प्रतिशत का इजाफा हुआ था।

जानकारों का कहना है कि सस्ते मकान की बिक्री लगातार कम हो रही है। हाउसिंगडॉटकॉम और प्रोपटाइगरडॉटकॉम के सीईओ ध्रुव अग्रवाल ने बताया कि सब्सिडी की योग्यता सीमा में बढ़ोतरी के साथ होम लोन के ब्याज पर टैक्स सब्सिडी की सीमा को बढ़ाने से रियल एस्टेट सेक्टर को चुनौतियों से राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि पिछले कई सालों से टैक्स में छूट के लिए दो लाख तक के ब्याज की सीमा चल आ रही है। इनकम टैक्स की पुरानी व्यवस्था के तहत होम लोन धारक इनकम टैक्स में छूट के लिए अधिकतम अपनी आय में दो लाख तक का ब्याज का फायदा ले सकते हैं।

पीएम किसान के लिए तहत मिल सकती है राहत

बजट में पीएम किसान स्कीम के तहत किसानों को भी राहत दी जा सकती है। पीएम किसान के तहत पंजीकृत किसानों को सालाना छह हजार रुपए सरकार की तरफ दिए जाते हैं। सूत्रों के मुताबिक ग्रामीण खपत को बढ़ाने के लिए सरकार पीएम किसान की राशि में बढ़ोतरी कर सकती है।

सूत्रों का कहना है कि पीएम किसान की राशि में एक हजार रुपए का इजाफा किया जा सकता है। इससे देश के लगभग 11 करोड़ किसानों को लाभ मिलेगा। जानकारों का कहना है कि आगामी बजट में सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती खपत बढ़ाने की है क्योंकि चालू वित्त वर्ष 2024-25 में अर्थव्यवस्था की विकास दर धीमी होती दिख रही है।

दरकती संवेदनाएं, क्या हो हल ?

हाल ही में तेलंगाना के हैदराबाद में दिल दहला देने वाला एक मामला सामने आया है। दरअसल, रंगारेड्डी जिले के मीरपेट में रहने वाले पूर्व सैनिक गुरुमूर्ति ने अपनी पत्नी वेंकट माधवी की हत्या की और उसकी लाश के टुकड़े करके प्रेशर कुकर में उबाल दिया। इतना ही नहीं पूर्व सैनिक ने अपनी पत्नी के बॉडी पार्ट्स को जिल्लेलागुडा के चंदन झील इलाके में भी फेंका। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह मानव हीनता की पराकाष्ठा है। पूर्व सैनिक गुरुमूर्ति द्वारा अपनी पत्नी माधवी की बर्बर तरीके से की गई हत्या हर किसी को स्तब्ध करने और मानवता को बहुत ही शर्मसार करने वाली घटना है। यह दर्शाता है कि आज कहीं न कहीं समाज के भीतर खतरनाक हिंसा की प्रवृत्ति का जन्म होता चला जा रहा है और मानव, मानव के प्रति बहुत ही ज्यादा संवेदनहीन हो गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि ऐसी खतरनाक प्रवृत्ति आदमी की मानसिक विकृति को भी उजागर करती है। आज हमारे देश में ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में हिंसा, युद्ध, अत्याचार एवं आक्रामकता का बोलबाला बढ़ता चला जा रहा है। समाज में हिंसा बढ़ना, समाज व देश के लिए ख़तरनाक संकेत है। सच तो यह है कि आज हिंसा के कारण लोग लगातार सामाजिक अलगाव एवं अकेलेपन का शिकार हो रहे हैं। हिंसा व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर डालती है।आज समाज में बढ़ती हिंसक मानसिकता एवं परिस्थितियों के बीच न जिन्दगी सुरक्षित रही है, और न ही इंसान का स्वास्थ्य ही। जीवन मूल्यों में गिरावट का दौर जो आज चल रहा है, शायद पहले कभी न था। हिंसा से नहीं, अपितु अहिंसा से ही मानव समाज और देश का भला हो सकता है। अहिंसा का भारतीय संस्कृति में बहुत ही महत्वपूर्ण और अहम्स्थान रहा है।करुणा, दया, जियो और जीने दो, अहिंसा परमो धर्मः आदि भारतीय संस्कृति का गहना हैं लेकिन यह बहुत ही दुखद है कि आज हमारा समाज लगातार हिंसा और हिंसक प्रवृत्तियों की ओर घर कर रहा है। कहना ग़लत नहीं होगा कि अहिंसा मानव जाति के पास सबसे बड़ी ताकत है। महात्मा गांधी ने कहा था कि यह मनुष्य का सबसे शक्तिशाली हथियार है।बदला लेने का कोई भी तरीका हिंसा है और यह करने वाले के लिए दुख लेकर आता है। अहिंसा हर परिस्थिति में खुद और दूसरों के प्रति हानिरहित रहने का व्यक्तिगत अभ्यास है।हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम सभी ईश्वर की रचनाएँ हैं जो प्रेम का सागर है।सच तो यह है मनुष्य के जीवित रहने के लिए जितनी प्राण-वायु आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक उसके जीवन के लिए अहिंसा। कहना ग़लत नहीं होगा कि अहिंसा मानव-जीवन का अधिष्ठान है, जिसके जीवन में अहिंसा नहीं, वह जीवन एक प्रकार से निरर्थक है। संक्षेप में कहें तो अहिंसा सत्य का प्राण है, स्वर्ग का द्वार है, जगत्की माता है, आनन्द का अजस्र स्रोत है, उत्तम गति है, शाश्वत श्री है और मानवमात्र के लिए परम धर्म है। बहरहाल, तेलंगाना में जो वारदात/घटना हुई है, वह मानवजाति को शर्मशार करती है। यह वारदात तीन साल पहले दिल्ली में श्रद्धा की उसके कथित प्रेमी द्वारा की गई हत्या की भी याद दिलाती है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि श्रद्धा वाकर एक 27 वर्षीय भारतीय महिला थी, जिसकी 18 मई 2022 को दिल्ली में उसके 28 वर्षीय प्रेमी और लिव-इन पार्टनर ने हत्या कर दी थी।उसने कथित तौर पर श्रद्धा का गला घोंट दिया था और उसके शरीर को 35 टुकड़ों में काटकर दक्षिण दिल्ली के महरौली में अपने निवास पर लगभग तीन सप्ताह तक 300 लीटर के फ्रिज में रखा और कई दिनों तक महानगर में फेंक दिया था। हाल फिलहाल,यह सोचकर ही हर किसी के रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि गुरुमूर्ति ने कैसे किसी जघन्य अपराधी की तरह अपनी पत्नी के शव को टुकड़ों में काटकर कुकर में उबाला था और फिर झील में फेंक आया। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह कोई साधारण अपराध नहीं है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज हमारा समाज लगातार स्वार्थ प्रवृत्ति की ओर अग्रसर हो रहा है, जहां रिश्ते-नातों को कोई महत्व नहीं है। आज हर किसी को धन से आसक्ति हो गई है,आज इंसान को धन-सम्पत्ति से विरक्ति लेने की जरूरत है। ज़रूरत इस बात की है कि इन्सान, इंसान को इन्सान समझे।शिक्षा इसमें सहयोग कर सकती है।सच तो यह है कि आज समाज को शिक्षित बनाने की जरूरत है। तेलंगाना में जो हुआ है वह

हमारे समाज में बढ़ती असंवेदनशीलता, रिश्तों में विश्वास की कमी और मानसिक अस्थिरता को ही दर्शाता है। आज आदमी की दूषित सोच ने आदमी को असंवेदनशील बना दिया है। दूषित सोच के लिए भी कहीं न कहीं हमारा समाज ही जिम्मेदार है, क्यों कि आज हम हमारे संस्कारों, नैतिक मूल्यों, आदर्शों, हमारे सामाजिक प्रतिमानों से लगातार दूर होते चले जा रहे हैं। हम आपा-धापी भरी इस जिंदगी में पदार्थ में रमे हुए हैं। पदार्थ ही हमारे लिए आज सबकुछ हो गया है। आज हम रिश्तों का महत्व भूल रहे हैं।आज जरूरत इस बात की है कि हम अपने निजी और सामूहिक स्तर पर अपने रिश्तों और भावनाओं को संभालने के तरीकों पर पुनर्विचार करें। आज संवेदनाएं गुम हो गई हैं।भारतीय समाज में तो हमेशा हमेशा से' वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का महत्त्व रहा है, लेकिन आज पाश्चात्य संस्कृति का हम पर प्रभाव है और मानवीय रिश्ते कई रूपों में छिन्न-भिन्न हो रहे हैं।आज आदमी केवल अपने स्वार्थ की ही बात करता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि उसे दूसरों के हित की कोई चिंता नहीं है।सच तो यह है कि आज सामाजिक सरोकारों को जीवंत रखने के लिए समाज में संवेदनशीलता बहुत ही जरूरी व आवश्यक है, क्योंकि पारस्परिक संवेदनाएं ही समाज में सामाजिक सौहार्द, मेलजोल की भावना, सहयोग आदि कायम रखती है। इसलिए एक दूसरे के सुख-दुःख में व सामाजिक कार्यक्रमों में यथासंभव भागीदारी व सहयोग अत्यावश्यक है। यह ठीक है कि हाल फिलहाल हुई वारदात पति-पत्नी के बीच संबंध एक निजी मामला है, लेकिन सवाल यह है कि आज आपसी संबंध यांत्रिक से क्यों हो गए हैं ?आज आए दिन हत्याओं की खबरें, हिंसा, अत्याचार, आगजनी, लूट की वारदातें समाज की संवेदनहीन प्रकृति को ही तो परिलक्षित करती है। सच तो यह है कि आज बढ़ते भौतिकवाद/पदार्थ युग व स्वार्थी प्रवृत्ति ने हमारे रिश्तों को शर्मसार कर दिया है। यह बहुत ही दुखद है कि आज भाई-भाई की हत्या कर रहा है, बेटा मां- बाप को मारने पर तुला है। मां-बाप को घर से निकाल दिया जाता है, अत्याचार किया जाता है। आज लालच, लोभ, स्वार्थ और दिखावे की प्रवृत्ति ने हमारे समाज में लगातार संवेदनहीनता को बढ़ावा दिया है। आदमी की महत्वाकांक्षाएं बढ़ गई हैं।किसी के पास दूसरे के लिए जरा सा भी वक्त नहीं रहा है। लोग इतने संवेदनहीन हो गए हैं कि वे दूसरे की तकलीफ में भी अपना सुख व फायदा ढूंढ़ लेते हैं। वास्तव में, इन सब पर समाज को आज घोर आत्मचिंतन करने की जरूरत है। घरेलू हिंसा और पारिवारिक तनाव के बढ़ते मामलों के बीच, हमें यह समझने की जरूरत है कि कानून अपनी जगह ठीक है लेकिन यह भी एक कटु सत्य है कि इनका समाधान केवल कड़े कानूनों से ही नहीं हो सकता है। इसे रोकने के लिए ज़रूरत इस बात की सुसंगत नीतियां सुनिश्चित करने के क्रम में कदम उठाए जाएं। शिक्षा का अधिकाधिक प्रसार किया जाए। हम अपने संस्कारों की नींव को मजबूत करें। घरेलू हिंसा को रोकने के लिए समाज, परिवार में बेहतर वातावरण बनाने की जरूरत है। अंत में यही कहूंगा यदि हम सही मायनों में 'महिलाओं के विरुद्ध हिंसा से मुक्त भारत' बनाना चाहते हैं, तो हमें यह चाहिए कि हम एक राष्ट्र के रूप में सामूहिक तौर पर इस विषय पर चर्चा करें। शिक्षा तो आवश्यक है ही।वास्तव में, घरेलू हिंसा रोकथाम के लिए एक राष्ट्रव्यापी सामाजिक अभियान की शुरुआत की जा सकती है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

आज जिनका जन्मदिन है

जनरल अरुण श्रीधर वैद्य का जन्म 27 जनवरी, 1926 को हुआ था। उन्होंने 1945 में भारतीय सेना में कमीशन प्राप्त किया था।

1965 में इंडो-पाक युद्ध के दौरान खेमकरण सेक्टर में बतौर बख्तरबंद रेजिमेंट में कमांडेंट के पद पर तैनात रहे जनरल अरुण श्रीधर वैद्य ने अपनी सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए पाकिस्तान की सेना को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया।

युद्ध में पाकिस्तानी सैनिकों को हार की ओर धकेलने के कारण उनकी निडरता और कुशल नेतृत्व क्षमता के लिए भारतीय सेना ने इन्हें 'महावीर चक्र' देकर सम्मानित किया था।

भारतीय सेना में असाधारण सेवा के लिए जनरल अरुण श्रीधर वैद्य को सन 1983 में प्रतिष्ठित 'परम विशिष्ट सेवा पदक' से सम्मानित किया गया और इसी साल उन्होंने भारतीय सेना प्रमुख या चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ के रूप में पदभार संभाला।

1985 तक वह भारतीय सेना प्रमुख बने रहे।

जनरल अरुण श्रीधर वैद्य को भारतीय सेना के जांबाज सोल्जर के रूप में जाना जाता है।

वह 1 अगस्त, 1983 से 31 जनवरी, 1986 तक सेनाध्यक्ष रहे और अपने इस कार्यकाल के दौरान उन्होंने भारतीय सेना को ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

अमृतसर के स्वर्ण मंदिर को आतंकियों के कब्जे से बचाने के लिए सैन्य 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' जनरल अरुण श्रीधर वैद्य के सेनाध्यक्ष रहते हुए ही चलाया गया था।

वर्ष 1986 में पुणे में हरजिंदर और सुखदेव ने कायरों की तरह जनरल अरुण श्रीधर वैद्य की हत्या कर दी थी। बाद में वर्ष 1992 में इन दोनों हत्यारों को फांसी की सजा दी गई।

श्रीधर वैद्य जी की स्मृति को नमन

दक्षिण दिशा में भोजन करना मृत्यु कारक

दक्षिण दिशा में मुंह करके खाना खाना आपको अकाल मृत्यु की ओर ले जाता है। वास्तव में यह माना जाता है की दक्षिण दिशा मरे हुए लोगों की है और इस दिशा में ऐसी ही ऊर्जा रहती है। जब आप इस दिशा में खाना खाते हैं तो ये नकारात्मक ऊर्जा आपके खाने में मिल जाती है या फिर आपके खाने का एक भाग इन्हें भी जाने लगता है और लगातार इनके साथ संपर्क बढ़ाता है और मृत्यु की दिशा क्रियाशील हो जाती है और आप या आपका कोई विशेष अचानक से अकाल मृत्यु की ओर चला जाता है।

.खाने की सही दिशा क्या है- खाने की सही दिशा है पूर्व। वास्तव में, इस दिशा में खाना मानसिक तनाव को दूर करता है और आपके पाचन क्रिया को सही करता है। इसके अलावा पूर्व दिशा में खाना खाने से आप स्वस्थ्य रहते हैं। इतना ही नहीं पूर्व दिशा में खाना खाने से आपके माता-पिता का भी स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

भोजन करने के नियम सनातन धर्म के अनुसार खाने से पूर्व अन्नपूर्णा माता की स्तुति करके उनका धन्यवाद और सभी भूखों को भोजन प्राप्त हो की ईश्वर से प्रार्थना करके भोजन करना चाहिये।

गृहस्थ के लिये प्रातः और सायं (दो समय) ही भोजन का विधान है। दोनों हाथ, दोनों पैर और मुख, इन पाँच अंगों को धोकर भोजन करने वाला दीर्घजीवी होता है।

भींगे पैर खाने से आयु की वृद्धि होती है। सूखे पैर, जुते पहने हुये, खड़े होकर, सोते हुये, चलते फिरते, बिछावन पर बैठकर, गोद मे रखकर, हाथ मे लेकर, फूटे हुये बर्तन में, बायें हाथ से, मन्दिर मे, संध्या के समय, मध्य रात्रि या अंधेरे में भोजन नहीं करना चाहिये।

रात्रि में भरपेट भोजन नहीं करना चाहिये। रात्रि के समय दही, सतु एव तिल का सेवन नहीं करना चाहिये।

हँसते हुये, रोते हुये, बोलते हुये, बिना इच्छा के, सूर्यग्रहण या चन्द्रग्रहण के समय भोजन नहीं करना चाहिये।

पूर्व की ओर मुख करके खाना खाने से आयु बढ़ती है। उत्तर की ओर मुख करके भोजन करने से आयु तथा धन की प्राप्ति होती है।

दक्षिण की ओर मुख करके भोजन करने से प्रेतत्व की प्राप्ति होती है।

पश्चिम की ओर मुख करके भोजन करने से व्यक्ति रोगी होता है।

भोजन सदा एकान्त मे ही करना चाहिये।

यदि पत्नि भोजन कर रही हो, तो उसे नहीं देखना चाहिये।

बालक और वृद्ध को भोजन करने के बाद स्वंय भोजन ग्रहण करें।

बिना स्नान, पूजन, स्तवन किये बिना भोजन न करें।

बिना स्नान ईख, जल, दूध, फल एवं औषध का सेवन कर सकते हैं।

किसी के साथ एक बर्तन मे भोजन न करें। (पत्नि के साथ कदापि नहीं) अपना जूठा किसी को ना दें, ना स्वंय किसी का जुठा खायें।

काँसे के बर्तन में भोजन करने से (रविवार छोड़कर) आयु, बुद्धि, यश और बल की वृद्धि होती है।

परोसे हुये अन्न की निन्दा न करें, वह जैसा भी हो, प्रेम से भोजन कर लेना चाहिये।

सत्कारपूर्वक खाये गये अन्न से बल और तेज की वृद्धि होती है।

ईर्ष्या, भय, क्रोध, लोभ, राग और द्वेष के समय किया गया भोजन शरीर मे विकार उत्पन्न कर रोग को आमन्त्रित करता है।

भोजन में पहले मीठा, बीच मे नमकीन एवं खट्टी तथा अन्त में कड़वे पदार्थ ग्रहण करें।

कोई भी मिष्ठान्न पदार्थ जैसे हलवा, खीर, मालपूआ इत्यादि देवताओ एवं पितरों को अर्पण करके ही खाना चाहिये।

जल, शहद, दूध, दही, घी, खीर और सतु को छोड़कर कोई भी पदार्थ सम्पूर्ण रूप से नहीं खाना चाहिये। (अर्थात बिल्कुल थोड़ा सा थाली में छोड़ देना चाहिये)।

जिससे प्रेम न हो उसके यहाँ भोजन कदापि न करें।

मल मूत्र का वेग होने पर, कलह के माहौल में, अधिक शोर में, पीपल, वट वृक्ष के नीचे, भोजन नहीं करना चाहिये।

आधा खाया हुआ फल, मिठाइयाँ आदि पुनः नहीं खानी चाहिये। खाना छोड़ कर उठ जाने पर दोबारा भोजन नहीं करना चाहिये।

गृहस्थ को *१ ग्रास से अधिक नहीं खाना चाहिये।

क्योंकि थोडा खाने वाले को आरोग्य, आयु, बल, सुख, सुन्दर सन्तान, और सौन्दर्य प्राप्त होता है।*

जिसने ढिंढोरा पीट कर खिलाया हो वहाँ कभी न खायें।

कुत्ते का छुआ, श्राद्ध का निकाला, बासी, मुँह से फूंक मारकर ठण्डा किया, बाल गिरा हुआ भोजन, अनादर युक्त, अवहेलना पूर्ण परोसा गया भोजन कभी न करें।

कंजूस का, राजा का, चरित्रहीन के हाथ का, शराब बेचने वाले का दिया भोजन कभी नहीं करना चाहिये।

भोजन बनाने वाला स्नान करके ही शुद्ध मन से, मन्त्र जप करते हुये ही रसोई में भोजन बनायें और सबसे पहले * रोटियाँ अलग निकाल कर (गाय, कुत्ता, और कौवे हेतु) फिर अग्नि देव का भोग लगा कर ही घर वालों को खिलायें।

भीष्म पितामह ने अर्जुन को 4 प्रकार का भोजन न करने की सलाह दी थी

.1. जिस थाली को कोई व्यक्ति लांघ कर गया हो वह भोजन नाली में पड़े कीचड़ के समान है! वह भोजन योग्य नहीं है!

२. जिस थाली को ठोकर लग गई या पांव लग गया वह भोजन भिष्टा के समान है! वह भोजन योग्य नहीं है!

३. जिस भोजन की थाली में या भोजन में बाल (केश) पड़ा हो वह दरिद्रता के समान है! भोजन योग्य नहीं है!

4. जिस थाली में पति पत्नी एक साथ भोजन कर रहे हों वह भोजन भी योग्य नहीं है! लेकिन पत्नी अगर अपने पति की झूठी थाली या पति का झूंठा खाती है तो उसे चारों धाम का पुण्य फल मिलता है!

हे अर्जुन, बेटी अगर कुमारी हो और पिता के साथ एक ही थाली में भोजन करती है, तो उस पिता की कभी अकाल मृत्यु नहीं हो सकती क्योंकि बेटी पिता की अकाल मृत्यु को हर लेती है।

ध्वजारोहण ,सपथ, पुरस्कार और मिष्ठान वितरण के साथ कानपुर कार्डियोलॉजी में भी धूमधाम से गणतंत्र दिवस, चर्चित डायरेक्टर राकेश वर्मा ने फहराया तिरंगा

- 76 वें गणतंत्र दिवस पर कार्डियोलॉजी में आयोजित भव्य समारोह में डायरेक्टर राकेश वर्मा ने झंडारोहण के साथ दिलाई सपथ, कर्मचारियों को पुरस्कार और मरीज को भी खिलाई मिठाई

सुनील बाजपेई

कानपुर। देश का 76 वां गणतंत्र दिवस यहां के हृदय रोग संस्थान में भी बड़ी धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया। गणतंत्र दिवस के इस शुभ अवसर पर आयोजित भव्य समारोह को संबोधित करते हुए डायरेक्टर प्रोफेसर डॉ राकेश कुमार वर्मा ने अपने उद्बोधन में सभी चिकित्सक एवं कर्मचारियों को बधाई देते हुए संस्थान में रोगी हित के लिए चल रही परियोजनाओं एवं विगत एक वर्ष की अभूतपूर्व और ऐतिहासिक उपलब्धियों के विषय में भी विस्तार से जानकारी दी।

इस मौके पर सैंकड़ों पुरस्कारों और प्रशंसा पत्रों से सम्मानित और अपनी नौकरी के अब तक के कार्यकाल में आज तक 1 दिन का भी अवकाश नहीं लेने वाले तथा सफल ऑपरेशन के रूप में सैकड़ों हृदय रोगियों की जान बचाने का रिकार्ड तोड़ने के भी एक मात्र प्रशंसनीय श्रेय धारक समर्पित सेवाभाव वाले और डायरेक्टर बनने के बाद भी कार्डियोलॉजी और उसके मरीजों के हित में अपने आप में ऐतिहासिक और अभूतपूर्व हर तरह के सफल प्रभावी कदम उठाने वाले डायरेक्टर प्रोफेसर डॉक्टर राकेश कुमार वर्मा ने अपने कर्तव्य का पालन निष्ठा और ईमानदारी से करने के साथ ही देशभक्ति की शपथ भी दिलाई।

साथ ही डॉ, उमेश्वर पाण्डेय एवं डॉ. अवधेश शर्मा द्वारा भी गणतंत्र दिवस के महत्व एवं स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम के समापन में निदेशक और अन्य चिकित्सक द्वारा संस्थान में भर्ती मरीजों को फल/मिठाई वितरण भी किया गया।

उत्कृष अोडिशा कार्यक्रम कल से शुरू होगा ,मोदी भी भाग लेंगे

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : उत्कर्ष ओडिशा 2025 का उद्घाटन कल से भुवनेश्वर के जनता मैदान में होने जा रहा है। यह आयोजन दो दिनों तक चलेगा, 28 और 29 तारीख को। इसके लिए तैयारियां अंतिम रूप दे दी गई हैं। इसमें भारत के कई बड़े औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। 'उत्कर्ष ओडिशा-मेक इन ओडिशा-2025' में भाग लेने के लिए 7,500 से अधिक उद्योग प्रतिनिधियों ने पंजीकरण कराया है।इस समारोह में 16 देशों के राजनयिक और प्रतिनिधि भाग लेंगे। सीआईआई द्वारा पांच सत्र आयोजित किये जायेंगे। सीआईआई परिषद के 200 सदस्य उपस्थित रहेंगे। मेक इन ओडिशा कॉन्क्लेव का उद्घाटन सत्र 28 तारीख को सुबह 10 बजे होगा। इस सम्मेलन में 100 फॉर्च्यून 500 कंपनियों के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इस बार सम्मेलन में आईटी, नवीकरणीय ऊर्जा, कपड़ा, रसायन और खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों को अधिक प्राथमिकता देने का निर्णय लिया गया है। स्टार्ट अप ओडिशा, ओडिशा में कौशल, महिला उद्यमी, एमएसएमई आदि पर सेमिनार आयोजित किए जाएंगे। बड़ी कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों की एक गोलमेज बैठक और महिला उद्यमियों की एक बैठक आयोजित करने की भी योजना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस औद्योगिक महासम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। उद्घाटन कार्यक्रम दोपहर करीब 12:30 बजे तक चलेगा। दोपहर में उद्योग नेतृत्व के पांच क्षेत्रों पर चर्चा के लिए एक सत्र आयोजित किया जाएगा। इसके बाद जनता मैदान में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा।इसी प्रकार 29 तारीख को सुबह पांच सत्र और दोपहर में पांच सत्र में चर्चा होगी। ओडिशा उत्कृष्टता सम्मेलन में राज्य के एमएसएमई उद्यमियों को बढ़ावा दिया जाएगा। मुख्यमंत्री 29 तारीख को समापन समारोह में प्रत्येक जिले से दो युवा उद्यमियों को सम्मानित करेंगे। यह प्रदर्शनी 30 जनवरी को आम जनता के लिए खुली रहेगी। सिनेमा और मीडिया क्षेत्र को बढ़ावा देने से लघु उद्योगों को भी बढ़ावा मिलेगा।

दृष्टिहीन बच्चों के साथ गणतंत्र दिवस मनाया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। 'अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा शाखा इन्दौर के तत्वावधान में मध्यप्रदेश दृष्टिहीन कल्याण संघ द्वारा संचालित हेलेन केलर स्कूल छात्रावास इन्दौर में बच्चों के साथ बड़े ही भव्यता से राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस पर्व मनाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ तिरंगा ध्वजारोहण के साथ ही राष्ट्रीय गीत की सामुहिक प्रस्तुति व तत्पश्चात हेलेन केलर स्कूल छात्रावास के दृष्टिहीन बच्चों के द्वारा गणतंत्र दिवस पर अपने उद्बोधन द्वारा गणतंत्र दिवस पर्व के महत्व के बारे में बताया गया। उसके उपरांत दृष्टिहीन बच्चों द्वारा संगीतमय वाद्ययंत्रो सहित राष्ट्रीय गीत व वंदे मातरम्वा अन्य गीतों की प्रस्तुति दी गई। दृष्टिहीन बच्चों की अद्भुत प्रस्तुति देखकर सभी की आंखें नम व सभी लोग भावुक हो गए। कार्यक्रम में युद्ध में शहीद गौतम जैन इन्दौर की माता जी श्रीमती सुधा सुमत प्रकाश जी जैन व शहीद के बड़े भाई डॉ सिद्धार्थ जैन व भतीजे अरिंजय जैन का मध्यप्रदेश दृष्टिहीन कल्याण संघ के अध्यक्ष अनिल भंडारी (मुख्य अतिथि) व सचिव चौहान जी और रोटरी क्लब के घनश्याम साहू, इंदौर आकाशवाणी से शिखा साहू, द्वारा तिरंगा दुपट्टा, बैंच व माल्यार्पण करके सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन देशभक्ति के गीत व वंदे मातरम के उच्च घोष के द्वारा किया गया। सभी अतिथि व गणमान्य जन ने दृष्टिहीन बच्चों को एवं छात्रावास के सभी पदाधिकारियों को सामुहिक फल, मिठाई, नाश्ता व ड्राई-फ्रूट्स वितरण किया गया। इस कार्यक्रम में उपस्थित श्री मती सुधा जी, श्री राजीव रत्न, पल्लीवाल शाखा इंदौर अध्यक्ष- श्री राजेंद्र कुमार, मंत्री-इन्द्र कुमार जैन, कोषाध्यक्ष-आर.डी ऊषा जैन, प्रचार मंत्री-ऋषभजी, डॉ सिद्धार्थ (सीएचएल अपोलो), प्रवीण, राकेश व अन्य समाज सेवी उपस्थित हुए। अंत में आभार शाखा अध्यक्ष राजेंद्र कुमार जैन जी ने व्यक्त किया। यह जानकारी मिडिया प्रभारी व स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान ने दी है।

नॉर्मल डिलीवरी हेतु रामबाण प्रयोग

"सामान्य प्रसूति में यदि कहीं बाधा जैसी लगे तो देशी गाय के गोबर का 10-12 ग्राम ताजा रस निकालें, गुरुमंत्र का जप करके अथवा 'नारायण.... नारायण.....' जप करके गर्भवती महिला को पिला दें। एक घंटे में प्रसूति नहीं हो तो फिर से पिला दें। सहजता से प्रसूति होगी। अगर प्रसव-पीड़ा समय पर शुरू नहीं हो रही हो तो गर्भिणी 'जम्भला... जम्भला....' मंत्र का जप करे और पीड़ा शुरू होने पर उसे गोबर का रस पिलायें तो सुखपूर्वक प्रसव होगा।'

लक्ष्मी कहाँ से चली जाती है ?

भगवान श्रीहरि कहते हैं: "जपो अल्पज्ञ भीगे पैर अथवा नग्न होकर सोता है तथा वाचाल की भाँति निरंतर बोलता रहता है, उसके घर से लक्ष्मी चली जाती हैं।

जो व्यक्ति अपने सिर पर तेल लगाकर उसी हाथ से दूसरे के अंग का स्पर्श करता हैं

और अपने किसी अंग को बाजे की तरह बजाता है उससे रुष्ट होकर लक्ष्मी उसके घर से चली जाती हैं।

जो व्रत-उपवास नहीं करता, संध्या – वंदन नहीं करता, सदा अपवित्र रहता है तथा भगवदभक्ति से रहित है उसके यहाँ से लक्ष्मी चली जाती है।' (श्रीमद देवी भागवत: ९.४१.४२-४४)

पद्म पुराण के अनुसार मस्तक पर लगाने से बचे हुए तेल को अपने शरीर पर भी लगाना वर्जित हैं।

हड्डियों की मजबूती से लेकर शुगर कंट्रोल तक, जानिए सर्दियों की इस सब्जी मटर के हेल्थ बेनिफिट्स

1. हड्डियों को मजबूत करता है मटर में कैल्शियम, विटामिन K और फॉस्फोरस प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं, जो हड्डियों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। इन तत्वों के कारण मटर हड्डियों को स्वस्थ रखने और असमय हड्डी घनत्व घटने से बचाने में सहायक है।

2. इम्यून सिस्टम को बढ़ाता है मटर में विटामिन C और एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। यह आपके शरीर को संक्रमण और बीमारियों से लड़ने में मदद करता है।

3. रक्त शर्करा नियंत्रण में मदद करता है मटर का ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है, जिससे यह रक्त शर्करा को नियंत्रित रखने में सहायक है। यह डायबिटीज़ के रोगियों के लिए एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है।

4. पाचन को सुधारता है मटर में फाइबर की अच्छी मात्रा होती है, जो पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाए रखता है। यह कब्ज और अन्य पाचन संबंधी समस्याओं से राहत दिलाने में मदद करता है।

5. वजन घटाने में सहायक मटर में कैलोरी की मात्रा कम होती है, और इसमें प्रोटीन तथा फाइबर भी अधिक होता है, जिससे पेट लंबे समय तक भरा रहता है। यह वजन घटाने के लिए एक आदर्श आहार है।

मटर में पाए जाने वाले पोषक तत्व मटर में प्रोटीन, फाइबर, विटामिन C, विटामिन K, आयरन, कैल्शियम, फॉस्फोरस, और एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं। ये सभी पोषक तत्व शरीर के समग्र स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। **RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023**